Digitization by eGangotri-South Center

॥ श्रीः ॥

अवकहडाचक्रसहितम्—

ज्योतिश्शास्त्रसोपानम्

ग्रन्थकारः—

श्रीसीतारामझा, ज्यौतिषाचार्यः ।

प्रकाशक—

भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, बनारस १.

ब्राञ्च—कचौड़ीगली, बनारस ।

सं० २००७] 卐 [मू० १२)

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अबकहडाचक्र-
सहितं

ज्योतिश्शास्त्रसोपानम् ।

मिथिलादेशान्तर्गत-चौगमानिवासि-
काशीस्थ-संन्यासिसंस्कृतकालेजाध्यापक-
ज्योतिषाचार्य-ज्यौतिषतीर्थ-
पं०-श्रीसीतारामशर्मणा
सम्पादितम् ।

तत्कृतभाषानुवादसहितम् ।

प्रकाशक—
भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, बनारस १.
ब्राञ्च-कचौड़ीगली, बनारस ।

सर्वाधिकारः प्रकाशकाधीनः

षष्ठं संस्करणम्] सं० २००७ [मूल्य २)

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

भूमिका।

वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम्।
विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्म न सिद्ध्यति॥

संसार में समस्त कार्यों के परिणाम उनके आरम्भ समय के अनुसार ही होते हैं। कार्यों की सिद्धि असिद्धि का कारण समय का शुभाशुभत्व ही होता है, यह आधुनिक वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। समय के शुभत्व और अशुभत्व ज्यौतिषशास्त्र से ही समझे जाते हैं, इसलिये ज्यौतिषशास्त्र का साधारण ज्ञान होना सबके लिये परमावश्यक है। परञ्च आजतक कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं बना कि केवल एक मात्र ग्रन्थके अवलोकन से थोड़े ही समय में सकल साधारण जन भी व्यावहारिक आवश्यक कार्यों के शुभ समय जान सकें। इसी कठिनता को देखकर मैंने अपनी तुच्छबुद्धि के अनुसार—समस्त आवश्यक ज्यौतिषशास्त्र सम्बन्धी व्यावहारिक विषयों को उदाहरण सहित इस छोटे से ग्रन्थ में रख दिया है, अतएव इसका अन्वर्थ नाम भी "ज्यौतिषशास्त्रसोपान" रक्खा गया है। इस ग्रन्थ के अवलोकन से समस्त फलितज्योतिष का ज्ञान हो सकता है।

इस ग्रन्थ के चार संस्करण "बाबू व्रजभूषणदास कन्हैयालाल" जी के द्वारा हो चुके हैं। आज ईश्वर की कृपासे इसका यह षष्ठ संस्करण—"पं० कैलाशनाथ भार्गव अध्यक्ष आनन्दसागर प्रेस, गायघाट बनारस१." के द्वारा हुआ है। इस संस्करण में कुछ और भी विषय स्पष्ट कर दिये गये हैं। तथा इसके आगे के पुनः संस्करण आदि का सर्वाधिकार मैंने आनन्दसागर प्रेस के अध्यक्षको ही दे दिया है।

इस ग्रन्थ की उपयोगिता तो इसके संस्करण ही से स्पष्ट है। फिर भी जो कुछ त्रुटि या प्रमादवश अशुद्धि रह गई हों उसे सुजनसमाज सुधार कर पढ़ लें और मुझे सूचना दें तो मैं आगे के संस्करण में उनकी पूर्ति करके उनका चिरकृतज्ञ बन सकूँ। विशेष क्या ?

"स्खलनं गच्छतः क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥" इति।

विनीत—श्रीसीताराम झा.

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विषय सूची

विषय	पृष्ठांक
मङ्गलाचरण	१
ज्यौतिष प्रशंसा	,,
अनध्याय	,,
कालपरिभाषा	२
दिननाम	,,
रविवार में वर्जनीय	,,
रव्यादिवारों में तैलफल	,,
शुभ और अशुभ दिन	३
मास प्रकरण।	
मास नाम	४
शुद्ध चान्द्रमास	,,
अधिक मास, क्षयमास और उसमें विशेष	५
जन्ममास	,,
पक्ष नाम	,,
ऋतु, अयन, वर्ष	,,
ऋतुनाम	,,
अयन नाम	,,
शुभ कार्यमें सामान्य समय शुद्धि	,,
देशभेदसे वर्षभेद	७
बार्हस्पत्य संवत्सर और उनके नाम	,,

विषय	पृष्ठांक
शाकपरसे संवत्सर का नाम जानने का प्रकार	८
शुद्ध वर्ष	९
अतिचार और महातिचार (लुप्त वर्ष)	१०
दक्षिण देशमें लुप्त वर्ष	११
विशेष	,,
तिथि प्रकरण	
तिथियों के नाम	११
तिथियों के स्वामी	१२
नन्दादि संज्ञा और उनमें कृत्य	१२-१३
आमवास्या के भेद	१३
सत्-असत् तिथि	१४
पर्व दिन	,,
सिद्धियोग	१५
अमृतयोग	,,
मृत्युयोग	१६
तिथियों में वर्ज्य	,,
दोषपरिहार	,,
दग्धतिथि	,,
नक्षत्रप्रकरण	,,

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
नक्षत्रनाम	१७	परिहार	३०
नक्षत्रों के स्वामी	,,	अवकहड़ा चक्रोद्धार	,,
नक्षत्रों की ध्रुवादि संज्ञा	,,	नाम से नक्षत्र का ज्ञान	३३
नक्षत्रों की अन्धादि संज्ञा	२०	राशिपरिभाषा	३४
प्रयोजन नष्ट-लाभ ज्ञान	२०	राशिनाम	,,
पञ्चक (भदवा)	२१	राशि जानने का प्रकार	,,
पञ्चक में मतान्तर	,,	राशिकी पुं स्त्री आदि संज्ञा	३६
उसका परिहार	,,	राशि जाननेका चक्र	,,
वार नक्षत्रभव अमृतयोग	,,	राशिके स्वामी	३७
शुभ योग	२२	तारा का विचार	३८
सर्वार्थसिद्धियोग	२२	तारा का नाम	३९
भवारोत्थ मृत्युयोग	२३	विशेष	,,
यमघण्टयोग	,,	दुष्ट तारा की शांति	,,
अशुभयोग परिहार	२४	चन्द्रविचार	४०
२८ योग जानने का क्रम	,,	चन्द्रफल	४०
आनन्दादि योग नाम	,,	विशेष	४१
आनन्दादि योगों का फल	२५	पूर्वादिदिशा में चन्द्रवास	,,
योग जानने की रीति		चन्द्रमाका वर्ण और फल	,,
विष्कम्भादि योगनाम	२६	संमुख आदि चन्द्रका फल	,,
अशुभ योग परिहार	,,	घातचन्द्र तिथि वार नक्षत्र	४२
करणनयन		घातकचन्द्रादि चक्र	,,
चरकरण	२७	स्त्रीघात चन्द्र	४३
स्थिर करण नाम	२८	विशेष	,,
करणज्ञान चक्र	,,	दुष्ट चन्द्रादि शान्ति	,,
भद्रा ज्ञान	२९	दिशा विचार	४४
भद्रा में वर्जनीय	३०	स्पष्ट दिशा विदिशा विचार	,,

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विषय	पृष्ठांक
दिशाशूल	४५
दिक्शूलपरिहार	,,
योगिनीवास	४६
योगिनी का फल	,,
कालवास	४७
राहुनिवास	,,
यात्रा प्रकरण	
यात्रा में शुभ नक्षत्र	४८
यात्रा में अशुभ नक्षत्र	,,
सर्वदिग्गमनार्ह नक्षत्र	,,
यात्रा में विहित लग्न	,,
यात्रा में वर्ज्य	४६
लग्नशुद्धि	,,
सर्वाङ्ग ज्ञान	,,
यात्रा में प्रशस्त लग्न	५०
समय फल	५१
सम्मुख चन्द्र एवं मनःशुद्धि विशेष	,,
एक दिन यात्रा में विशेष	,,
सर्वारम्भ लग्न शुद्धि	,,
सर्वारम्भ मुहूर्त	५१
विवाह प्रकरण	
वर कन्या की वर्षशुद्धि	,,
कन्याकी संज्ञा	,,
कन्यादानफल	५३
मतान्तर	,,
रविशुद्धि	५३
चन्द्रशुद्धि	,,
गुरुशुद्धि	५४
विशेष	,,
वरवरण (तिलक)	,,
कन्यावरण मुहूर्त	,,
वरकन्याकी कुण्डलीविचार	५५
परिहार	,,
मेलापक ८ प्रकार के कूट	,,
(१) वर्णज्ञान	५६
वर्णगुणसंख्या	,,
(२) वश्यज्ञान	,,
द्विपदादिसंज्ञा	५७
वश्यगुणचक्र	,,
वश्यगुणविभाग	५८
(३) ताराकूट	,,
तारागुणबोधकचक्र	५६
(४) योनिकूट	,,
योनिगुणविभाग	६०
योनिगुणबोधकचक्र	६१
(५) ग्रहमैत्री	,,
ग्रहमैत्रीगुणविभाग	६२
ग्रहमैत्रीगुणबोधक चक्र	६३
(६) गणकूट	,,
गुणकूट और गुणविभाग	६४
गुणबोधक चक्र	,,

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
दोषपरिहार	६५	गण्डान्तमें जन्मनिषेध	७७
(७) राशिकूट	,,	सीमन्त पुंसवन मुहूर्त	,,
दुष्टभकूटपरिहार	६५	जातकर्म	७८
गुणबोधकचक्र	६६	शिशुविलोकन	,,
(८) नाडीकूट	,,	दुग्धदान	,,
नाडीबोधकचक्र	६७	सूतीस्नान	,,
परिहार	६८	नामकरण	७९
ग्राह्यअग्राह्यगुणसंख्या	,,	दन्तोत्पत्ति फल–	,,
वर्गकूट वर्गमैत्री आदि	,,	दोलारोहण निष्क्रमण	,,
वर्गचक्र	६९	जन्मनक्षत्रमें वर्ज्य	,,
विवाह मुहूर्त	७०	अन्नप्राशन	८०
विवाहमें वर्ज्य	७१	कर्णवेध	,,
विवाहलग्न मे त्याज्य	,,	चूडाकरण (मुण्डन)	८१
सब शुभमें त्याज्य	,,	सामान्य क्षौरकर्म	,,
गण्डान्तलक्षण	७२	विशेष	८२
विशेष	,,	उपनयन वर्षशुद्धि	,,
वधू प्रवेश		उपनयनमुहूर्त	,,
वधूप्रवेशमुहूर्त	७३	अनध्याय	८३
नक्षत्रादि शुद्धि	,,	निषेध	,,
द्विरागमनप्रकरण	७४	प्रदोष लक्षण	८४
द्विरागमन में त्याज्य	,,	समावर्तन	,,
सम्मुख शुक्रदोष	७५	अक्षरारम्भ मुहूर्त	,,
सम्मुखराहु विचार	,,	विद्यारम्भ	८५
संस्कार प्रकरण		स्त्री वस्त्रादि धारण	,,
प्रथमरजोदर्शनफल	७६	पुरुष वस्त्रादि धारण	,,
गर्भाधान मुहूर्त	,,	स्त्रीकेशबन्धन मुहूर्त	८५

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विषय	पृष्ठांक
वस्त्र क्षालन मुहूर्त	८६
दन्तधावन	,,
औषध भक्षण	,,
रोगविमुक्तस्नान	,,
स्त्रीके लिये शतभिषा में स्नान निषेध	८७
अथ गृह प्रकरण	
भूमि शुभाशुभ लक्षण	,,
भूमिवर्ण	८८
शल्यज्ञान	८९
शल्योद्धार	,,
भूमिपरीक्षा	९०
गृहसमीपमें शुभवृक्ष	९१
,, अशुभ वृक्ष	,,
वास्तुयोग्य ग्राम	९२
वर्गकी शरसंख्या	९३
गृहदशाज्ञान	,,
वास्तु मुहूर्त	९४
वृषवास्तु चक्रोद्धार	,,
पृथ्वीशयन	,,
राहुसम्मुखमें विशेष	९५
गृहप्रवेश मुहूर्त	,,
जलाशय खनन	,,
देवादि प्रतिष्ठा	९६
प्राकारम्भ चुल्हिकास्थापन	,,
मार्जनी बन्धानी मु०	,,

विषय	पृष्ठांक
कृषि प्रकरण	
बीजवपन, सस्यरोपण	९६
खरिहानस्थान	९८
मेधि (मेह) स्थापन	,,
धान्यमर्दन	,,
बीज रक्षण	९९
धान्यस्थापन धान्यवृद्धि	,,
अर्घविचार	,,
संक्रान्ति में पुण्यकाल	१००
विशेष	,,
क्रयविक्रय	,,
द्रव्यप्रयोग	१०१
नवान्नभक्षण	,,
निषेध	,,
होमाहुति मुहूर्त	,,
शिववासफल	१०२
शुभतिथिचक्र	,,
पशुपालन	१०३
गजाश्वारोहणादि	,,
वृक्षादिरोपण	,,
कदली रोपण	,,
जन्मपत्र प्रकरण	
आवश्यक परिभाषा	१०४
उदाहरण	,,
लग्नानयन	,,
उदाहरण	१०५

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विषय	पृष्ठांक
लग्नसारिणी	१०५
जन्मपत्र लिखनेकी रीति	१०८
पुरुष स्त्री की कुण्डली जानने की रीति	१०८
जीवित मृत की कुण्डली जानने का नियम	१०९
अयनांशानयन	,,
स्पष्ट ग्रहानयन प्रकार	११०
भयात भभोग	११२
चन्द्रसाधन	,,
पलभा चरखण्डा	११३
लंकोदय-स्वदेशोदय	,,
लग्नादि द्वादशभाव साधन	११४
मुक्त-भोग्य प्रकार से लग्नानयन विशेष	११५ ,,
दशमलग्नानयन	११६
भावानयन	११८
भावोपरि ग्रहदृष्टि	११९
नैसर्गिक मैत्रीचक्र	१२०
तात्कालिक मैत्री अधिमित्रादि	,,
ग्रहों का उच्चनीचविभाग	,,
ग्रहों का षड्वर्ग	१२२
होरा	१२२
द्रेष्काण त्रिंशांश, नवांश	,,
द्वादशांश	१२३
वर्गोत्तम नवांश	१२३
पापग्रह	,,
हद्दाचक्र	१२४
वर्षप्रवेश समय	,,
वर्षप्रवेश में तिथिज्ञान	१२५
वर्षप्रवेश में ग्रहदृष्टि	१२६
मित्र-शत्रुज्ञान	,,
मुथहानयन	,,
वर्षेशाधिकारी	,,
त्रिराशीश, उच्चबल	१२७
पञ्चवर्गीबल	१२८
वर्षप्रवेश लिखने की रीति	,,
पञ्चवर्गी बल चक्र	१३२
वर्षेशनिर्णय	,,
मुद्दादशाचक्र	१३३
त्रिपताकि चक्र	१३४
ग्रहों का भावफल चक्र	१३५
ग्रहों के दान और जप संख्या	१३८
नवग्रह मन्त्र	१४०
महा मृत्युञ्जय मन्त्र	१४२
पल्लीपतन पल्ली शान्ति	,,
सर्पकपोतपतन	१४३
नेत्रस्फुरण	,,
स्वप्नफल	१४४
ग्रहभाव फलवि.	१४५

॥ इति विषयानुक्रमणिका ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

अंबकहडाचक्रसहितम्

ज्योतिःशास्त्रसोपानम्

मङ्गलाचरण—

नत्वा गिरं गणेशं च गुरुं ध्यात्वा सतां मुदे ।
ज्योतिःशास्त्रप्रवेशाय सोपानं क्रियते मया ॥ १ ॥
ग्रन्थेभ्यः सारमादाय पूर्वोक्तान्येव कानिचित् ।
लिख्यन्ते चात्र पद्यानि स्वकृतान्यपि कानिचित् ॥ २ ॥

ज्योतिःशास्त्रप्रशंसा—

वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ।
विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्म न सिद्ध्यति ॥ ३ ॥
वेदाङ्गत्वाद् द्विजैरेव पठनीयमिदं तथा ।
सुपरीक्षितशिष्याय देयं वत्सरवासिने ॥ ४ ॥

पढ़ने में अनध्याय—

चतुर्दश्यष्टमीदर्शपूर्णिमाप्रतिपत्स्वपि ।
आकापौचद्वितीयायां वेदाङ्गं नैव पाठयेत् ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ कालादिपरिभाषा—

षड्भिः प्राणैः पलं ज्ञेयं तत्षष्ट्या दण्ड उच्यते ।
दण्डषष्ट्या च नाक्षत्रमहोरात्रं प्रकीर्तितम् ॥ ६ ॥

६ प्राण (स्वास) का एक पल, ६० पल का एक दण्ड, ६० दण्ड का एक नाक्षत्र अहोरत्र होता है ॥ ६ ॥

सौरं सूर्यांशभोगेन, तिथ्या चान्द्रदिनं स्मृतम् ।
सूर्योदयद्वयान्तःस्थं कीर्त्यते सावनं दिनम् ॥ ७ ॥

सूर्य के एक अंश भोग करने से १ सौर दिन, तथा एक तिथि का १ चान्द्र दिन, और सूर्योदय से सूर्योदय पर्यन्त सावन दिन कहलाता है॥

अथ दिननाम—

तानि सप्त—रविः सोमो मङ्गलश्च बुधस्तथा ।
बृहस्पतिश्च शुक्रश्च शनिश्चैव यथाक्रमम् ॥ ८ ॥

वे सावन दिन सात हैं—जसे रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि ये यथाक्रम से होते हैं ॥ ८ ॥

रविवार में वर्जनीय—

तैलस्त्रीमद्यमांसानि यः करोति रवेर्दिने ।
सप्तजन्मसु रोगी स दरिद्रश्चैव जायते ॥ ९ ॥

रविवार में जो कोई तैल, स्त्री, मद्य, मांस का सेवन करता है वह सात जन्म तक रोगी और दरिद्र होता है ॥ ९ ॥

रव्यादिवार में तैलफल—

तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।
बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥१०॥

रविवार में तेल लगाने से ताप, सोम में शोभा, मंगल में आयु-

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

क्षय, बुध में धन, बृहस्पति में हानि, शुक्र में दुःख, शनिवार में सुख होता है ॥ १० ॥

परिहार—

रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका ।
गोमयं शुक्रवारे च तैले दत्वा न दोषभाक् ॥ ११ ॥

रविवार में पुष्प, गुरुवार में दूब, मंगल में मिट्टी, शुक्र में गोबर तैल में मिलाकर लगाने से दोष नहीं है ॥ ११ ॥

शुभ और अशुभ दिन—

सूर्य-मन्द-कुजाः क्रूराः शेषाश्च शुभवासराः ।
शुभं शुभदिने कुर्यात् क्रूरं कर्माऽशुभे दिने ॥ १२ ॥

रवि, शनि, मङ्गल ये क्रूर (पाप) दिन और चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र ये शुभ दिन हैं। शुभ दिन में शुभ कार्य और क्रूर दिन में क्रूर कार्य की सिद्धि होती है ॥ १२ ॥

अथ मासप्रकरणम्—

त्रिंशद्दिनैर्भवेन्मासश्चतुर्धा सोऽपि कीर्तितः ।
दर्शाद्दर्शावधिश्चान्द्रः संक्रान्त्या सौर उच्यते ॥ १३ ॥
नाक्षत्रो भदिनैरेवं सावनः सावनैर्दिनैः ।
मेषादिस्थे रवौ यो यो मासश्चान्द्रः प्रपूर्यते ॥ १४ ॥
राशीनां द्वादशत्वात्ते चैत्राद्या द्वादशैव हि ।

३० दिन (अहोरात्र) का एक मास होता है, वह चार प्रकार का है, जैसे–अमावास्या से अमावास्या तक ३० तिथियों का चान्द्र मास तथा संक्रान्ति से संक्रान्ति तक सौरमास। नाक्षत्र दिन से ३० दिन का नाक्षत्र मास और ३० सावन दिन का सावन मास होता है।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

मेषादि द्वादश राशियों में सूर्य के रहने से जो जो चान्द्र मास पूरा होता है वेही चैत्रादि बारहमास होते हैं ॥ १३-१४ ॥

मासनाम—

मासाश्चैत्रश्च वैशाखो ज्येष्ठश्चाषाढसंज्ञकः ॥ १५ ॥
श्रावणश्चैव भाद्राख्य आश्विनः कार्तिकस्तथा ।
मार्गशीर्षश्च पौषश्च माघश्च फाल्गुनस्तथा ॥ १६ ॥

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्र, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, और फाल्गुन ये बारहों महीनों की संज्ञा हैं॥१६॥

शुद्ध चान्द्रमास—

यत्रैकसूर्यसंक्रान्तिः शुद्धो मासः स कथ्यते ।
तत्रैव शुभकार्याणि बुधः कुर्यादतन्द्रितः ॥ १७ ॥

जिस चान्द्रमास में सूर्य की एक संक्रान्ति हो वह शुद्ध मास कहाता है, उसी में पण्डितों को शुभकार्य करना चाहिये ॥ १७ ॥

अधिकमास—

यस्मिन् चान्द्रे न संक्रान्तिः सोऽधिमासो निगद्यते ।
तत्र मङ्गलकार्याणि नैव कुर्यात् कदाचन ॥ १८ ॥

जिस चान्द्रमास में सूर्य की संक्रान्ति न हो वह अधिमास कहलाता है, उसमें कदापि शुभकार्य न करे ॥ १८ ॥

अधिक (मल) मास पलटने के समय—

द्वात्रिंशता गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ।
घटिकानां चतुष्केण पतत्येकोऽधिमासकः ॥ १९ ॥

मध्यम सौरमान से बत्तीस ३२ मास १६ दिन चार घड़ी पर एक एक अधिमास हुआ करता है ॥ १९ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

क्षयमास—

यस्मिन् मासे द्विसंक्रान्तिः क्षयमासः स कथ्यते ।
तस्मिन् शुभानि कार्याणि यत्नतः परिवर्जयेत् । २० ॥

जिस चान्द्रमास में सूर्य की दो संक्रान्ति हों वह क्षयमास होता है, उसमें शुभकार्य वर्जित है ॥ २० ॥

क्षयमास में विशेष—

तिथ्यर्धे प्रथमे पूर्वो द्वितीयेऽर्धे तथोत्तरः ।
मासाविति बुधैर्ज्ञेयौ क्षयमासस्य मध्यगौ ॥ २१ ॥

क्षयमास की तिथि के पूर्वार्द्ध में पूर्वमास और तिथि के उत्तरार्ध में अग्रिममास समझना चाहिये ॥ २१ ॥ अर्थात् क्षयमास में तिथि के पूर्वार्ध में किसी का मरण आदि हो तो उसकी एकोद्दिष्टादिक क्रिया पूर्वमास की उसी तिथि में और उत्तरार्ध में मरणादि हो तो अग्रिम मास में उसका मरना समझा जायगा तथा अग्रिम मास ही में उसकी एकोद्दिष्टादि क्रिया होगी ।

जन्ममास—

यस्मिश्चन्द्रमसो मासे जन्मकृष्णादिके भवेत् ।
स जन्ममासो विज्ञेयश्चौलादौ तं विवर्जयेत् ॥ २२ ॥

जिस कृष्णपक्षादि चान्द्रमास में जन्म हो वह जन्ममास कहलाता है । वह चूड़ाकरणादि में वर्जित है ॥ २२ ॥

पक्षनाम—

मासे शुक्लश्च कृष्णश्च द्वौ पक्षौ परिकीर्तितौ ।
सायं यत्रोदितश्चन्द्रः स शुक्लोऽन्यस्तु कृष्णकः ॥ २३ ॥

एक मास में शुक्ल और कृष्ण दो पक्ष होते हैं । जिस पक्ष में सायं-

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection, TN.

Digitization by eGangotri-South Center

काल में चन्द्रमा उदित रहता है । वह शुक्लपक्ष दूसरा कृष्णपक्ष कहलाता है ॥ २३ ॥

ऋतु, अयन, वर्ष कथन—

ऋतुर्द्वाभ्यां च मासाभ्यां षड्भिर्मासैस्तथायनम् ।
मासैर्द्वादशभिः सौरैर्वर्षमेकं निगद्यते ॥ २४ ॥

दो सौर मास का एक ऋतु, ६ मास का एक अयन और १२ मासों का १ वर्ष होता है ॥ २४ ॥

अथ ऋतुनाम—

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्षडर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः ।
ग्रीष्मश्च वर्षा च शरच्च तद्वद्धेमन्तनामा कथितोऽपि षष्ठः ॥२५॥

मकर आदि दो दो राशियों को सूर्य के भोग करने से शिशिर, आदि ६ ऋतु होते हैं–जैसे–मकर कुम्भ के सूर्य में शिशिर, मीन मेष में वसन्त, वृष मिथुन में ग्रीष्म, कर्क सिंह में वर्षा, कन्या तुला में शरद, वृश्चिक धनु के सूर्य में हेमन्त ॥ २५ ॥

अथ अयननाम—

मृगादिषट्कराशिस्थे सूर्ये सौम्यायनं तथा ।
कर्कादिषड्भगे सूर्ये बुधैर्याम्यायनं स्मृतम् ॥ २६ ॥

मकर आदि ६ राशियों में सूर्य रहते हैं तो सौम्यायन और कर्क आदि ६ राशियों में याम्यायन होता है ॥ २६ ॥

शुभ कार्य में सामान्य समयशुद्धि—

सौम्यायने विधौ पूर्णे शुद्धे वर्षादिके तथा ।
अनस्तक्षीणशुक्रेज्ये शुभकर्म समाचरेत् ॥ २७ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

उत्तरायण समय, चन्द्रमा पूर्णबली हो, वर्ष, मास, तिथि आदि शुद्ध हो तथा गुरु, शुक्र अस्त और क्षीण नहीं हों ऐसे शुद्ध समय में शुभ कर्म करना चाहिये ॥ २७ ॥

किस देशमें कौन मान से वर्ष ग्राह्य है—

नर्मदोत्तरभागे तु बार्हस्पत्येन वत्सरः ।
तस्यास्तु दक्षिणे भागे सौरमानेन वर्तते ॥ २८ ॥
कुत्रचिच्चान्द्रमानेन वर्षशुद्धिर्विचार्यते ।
सूतकादौ तु सर्वत्र सावनेनैव गृह्यते ॥ २९ ॥

नर्मदा के उत्तर भाग में बार्हस्पत्य मान से, और दक्षिण देश में सौरमान से वर्षशुद्धि तथा किसी (वङ्ग आदि) देश में चान्द्रमान से वर्षशुद्धि का विचार किया जाता है । और सूतक प्रायश्चित्त आदि में सर्वत्र सावन मास का ही ग्रहण होते है ॥ २८–२९ ॥

बार्हस्पत्य वर्ष और मान—

मध्यमेज्यभभोगेन जैवोऽब्दस्तत्र वासराः ।
क्वङ्गाग्नयो घटीयुग्मं पादोनाक्षपलानि च ॥ ३० ॥

मध्यगति से हस्पति का एक राशि भोग जैव (बार्हस्पत्य) वर्ष कहाता है । वह ३६१ दिन, २ घड़ी, पौने पाँच पलका (सब तुल्य ही) होता है ॥ ३० ॥

संवत्सरों के १२, तथा ६० नाम—

स्फुटे ज्येऽजादिगे यो यो वत्सरः परिपूर्यते ।
विजयाऽश्विनपूर्वास्ते-षष्टिर्वा द्वादश स्मृताः ॥ ३१ ॥

मेषादि राशियों में स्पष्ट बृहस्पति के रहते हुए जो, जो बार्हस्पत्य

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection, TN.

Digitization by eGangotri-South Center

वष समाप्त होते वे विजय आदि नाम से ६०, अथवा-आश्विन आदि नाम से १२ होते हैं ॥ ३१ ॥

जब मेषादि १२ राशियों के आश्विन आदि १२ वर्ष ५ आवृत्ति बीतते हैं तब विजय आदि ६० संवत्सरों की १ आवृत्ति होती है ॥३१॥

शाके के आरम्भ में कुम्भ राशि सम्बन्धी प्रभव नाम का संवत्सर था, इसलिये शाके पर से संवत्सर जानने के प्रकार से प्रभवादि संवत्सर गिने जाते हैं।

शाके परसे संवत्सर के नाम जाननेका प्रकार—

शकाब्दा द्विकरैर्निघ्ना भूनन्दाश्वियुगैर्युता ।
शरागधृतिभिर्भक्ता लब्धियुक्ताः शकाब्दकाः ॥३२॥
षष्टितष्टा गता ज्ञेया वत्सराः प्रभवादयः ।
बार्हस्पत्येन मानेन वर्तमानस्तदग्रिमः ॥ ३३ ॥

जिस शाके में बार्हस्पत्य संवत्सर का नाम जानना हो उस शाक की संख्या को २२ से गुना कर ४२९१ जोड़ देना फिर उस में १८७५ का भाग देकर केवल लब्धि को शाके की संख्या में जोड़ कर योगफल में ६० के भाग देने से जो शेष बचे वह प्रभव आदि गत संवत्सर होते हैं उनसे अग्रिम वर्ष को वर्तमान संवत्सर समझना ॥ ३२—३३ ॥

उदाहरण—जैसे शाके १८६० में संवत्सर का नाम जानना है तो १८६० को २२ से गुनाकर ४०९२० इसमें ४२९१ जोड़ने से ४५२११ इसमें १८७५ के भाग देकर लब्धि २४ को शाके १८६० में जोड़कर १८८४ इसमें ६० के भाग से शेष २४ वाँ गत विकृत तथा उसके अग्रिम २५ वाँ खर नाम का संवत्सर हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र समझना ॥३२-३३॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

प्रभव आदि संवत्सर संज्ञाचक्र—

कुम्भ	प्रभव १	प्रमाथी १३	खर २५	शोभन ३७	राक्षस ४९
मीन	विभव २	विक्रम १४	नन्दन २६	क्रोधी ३८	नल ५०
मेष	शुक्ल ३	वृष १५	विजय २७	विश्वावसु ३९	पिङ्गल ५१
वृष	प्रमोद ४	चित्रभा १६	जय २८	पराभव ४०	कालयुक्त ५२
मिथुन	प्रजापति ५	सुभानु १७	मन्मथ २९	प्लवङ्ग ४१	सिद्धार्थ ५३
कर्क	अङ्गिरा ६	तारण १८	दुर्मुख ३०	कीलक ४२	रौद्र ५४
सिंह	श्रीमुख ७	पार्थिव १९	हेमलम्ब ३१	सौम्य ४३	दुर्मति ५५
कन्या	भाव ८	व्यय २०	विलम्ब ३२	साधारण ४४	दुन्दुभि ५६
तुला	युवा ९	सर्वजित् २१	विकारी ३३	विरोधक ४५	रुधिरोद्गा ५७
वृश्चिक	धाता १०	सर्वधारि २२	शार्वरी ३४	परिधावी ४६	रक्ताक्षि ५८
धन	ईश्वर ११	विरोधी २३	प्लव ३५	प्रमादी ४७	क्रोधन ५९
मकर	बहुधान्य १२	विकृत २४	शुभकृत् ३६	आनन्द ४८	क्षय ६०

शुद्ध वर्ष—

यत्रैकराशिसञ्चारो मार्गगत्या गुरोर्भवेत् ।
शुद्धः संवत्सरः स स्यात् सर्वेषां च शुभप्रदः ॥ ३४ ॥

जिस बार्हस्पत्य संवत्सर में मार्ग गति से स्पष्ट गुरु का एक सञ्चार हो वह शुद्ध वर्ष कहाता और सबके लिये शुभप्रद होता है ॥ ३४ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अतिचार और महातिचार (लुप्तवर्ष)—

यत्र द्विराशिसञ्चारावतीचारः स कथ्यते ।
लुप्ताब्दश्च यदाऽब्दान्ते पूर्वभं नैति वक्रितः ॥ ३५ ॥
महातिचारसंज्ञोऽसौ सर्वलोकभयङ्करः ।
पूर्वभं चेत् समायाति वक्रगत्या बृहस्पतिः ॥ ३६ ॥
तत्रस्थे वत्सरान्तश्चेल्लघ्वतीचार उच्यत ।
शुभं कर्म तदा त्याज्यमष्टाविंशतिवासरान् ॥ ३७ ॥
तत्र नो वत्सरान्तश्चेत् तदा पक्षत्रयं त्यजेत् ।
त्यजेन्महातिचारे च समस्तमपि वत्सरम् ॥ ३८ ॥

जिस बार्हस्पत्य वर्ष में स्पष्ट गुरु के मार्ग गति से २ राशि में सञ्चार (संक्रम) हो (अर्थात् संवत्सरान्त से पूर्व ही यदि अग्रिमराशि में भी गुरु का सञ्चार हो जाय) तो अतिचार कहाता है। अतिचार होने पर यदि संवत्सरान्त के समय में पुनः वक्र होकर पूर्व राशि में गुरु नहीं आवे तो लुप्त वर्ष (महातिचार) कहाता है, और वह अशुभ होता है। यदि अतिचार के बाद पुनः संवत्सरान्त से पूर्व ही पूर्व राशि में वक्र हो कर आवे और संवत्सरान्त तक उसी राशि में रहे तो लघ्वतिचार कहाता है, ऐसी हालत में लुप्त वर्ष नहीं होता है। यदि पूर्व राशि में वक्र हो कर आवे किन्तु संवत्सरान्त में अग्रिम राशि में रहै तो भी लघ्वतीचार होता है। उसके ४५ दिन शुभ कार्य में त्याग कर देना चाहिये। यदि महातिचार हो तो समस्त वर्ष शुभ कार्य में त्याग करना चाहिये ॥ ३५-३८ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

दक्षिण देश में लुप्त वर्ष—

यत्र जीवाब्दयुग्मस्य सौराब्दे विरतिर्भवेत् ।
लुप्तवर्षं तदा ज्ञेयं नर्मदायाश्च दक्षिणे ॥ ३९ ॥

नर्मदा से दक्षिण देश में जब एक सौर वर्ष (मेष संक्रमण से मेष संक्रमण पर्यन्त) में २ बार्हस्पत्य वर्ष के अन्त होते हैं तो लुप्तवर्ष (महातिचार) समझा जाता है ॥ ३९ ॥

विशेष—

यत्र चान्द्रेण मानेन वत्सरः परिगृह्यते ।
एवमेव च तत्रापि विज्ञेयो लुप्तवत्सरः ॥ ४० ॥

जिस देश में चान्द्रमान से वर्ष ग्रहण होता है, वहाँ इसी प्रकार एक चान्द्रवर्ष में (२ चैत्रान्त के भीतर) यदि २ बार्हस्पत्य वर्ष के अन्त होते हैं तो लुप्तवर्ष होता है ॥ ४० ॥

अथ तिथिप्रकरणम् ।

तिथिनाम—

प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीया तदनन्तरम् ।
चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी तथा ॥ १ ॥
नवमी दशमी चैकादशी च द्वादशी तथा ।
त्रयोदशी ततः प्रोक्ता ततो ज्ञेया चतुर्दशी ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

तिथिः पञ्चदशी शुक्ले पूर्णिमा परिकीर्त्यते ।
कृष्णे पञ्चदशी या च साऽमावास्या निगद्यते ॥३॥

प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी और पञ्चदशी, (शुक्लपक्ष की पञ्चदशी पूर्णिमा और कृष्णपक्ष की पञ्चदशी अमावास्या कहलाती है) ॥ १-३ ॥

तिथियों के स्वामी—

तिथीशोऽग्निर्विधिर्गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
शिवो दुर्गान्तको विश्वे हरिःकामःशिवःशशी ॥ ४ ॥

प्रतिपदा के अग्नि, २ के ब्रह्मा, ३ के गौरी, ४ के गणेश, ५ के सर्प, ६ के कार्तिकेय, ७ के सूर्य, ८ के शिव, ९ के दुर्गा, १० के यम, ११ के विश्वेदेव, १२ के विष्णु, १३ के कन्दर्प, १४ के महादेव, पूर्णिमा तथा अमावास्या के स्वामी चन्द्रमा हैं। वि०—इन देवों की अपनी अपनी तिथि में प्रतिष्ठा तथा पूजा शुभ होती है ॥ ४ ॥

तिथि की नन्दादिक संज्ञा—

नन्दाख्या प्रतिपत् षष्ठी तथा चैकादशी स्मृता ।
भद्रासंज्ञा द्वितीया च सप्तमी द्वादशी तथा ॥ ७ ॥
जयाख्या च तृतीया स्यादष्टमी च त्रयोदशी ।
तथा रिक्ता चतुर्थी च नवमी च चतुर्दशी ॥ ८ ॥
पूर्णा पञ्चदशी प्रोक्ता पञ्चमी दशमी तथा ।
एवं पञ्चविधास्तिथ्यो नामतुल्यफलप्रदाः ॥ ९ ॥

दोहा—प्रतिपद ओ एकादशी, षष्ठी नन्दा जान ।
दूज सप्तमी, द्वादशी ये भद्रातिथि मान ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

जया तृतीया अष्टमी, त्रयोदशी ये तीन ।
नवमी चौथ चतुर्दशी, है रिक्ता फलहीन ॥
पञ्चदशी अरु पञ्चमी, दशमी पूर्णा नाम ।
सब तिथियों के नाम सम, जानो फल परिणाम ॥

अथ नन्दादि तिथियों में कर्तव्य—

नन्दासु चित्रोत्सववास्तुतन्त्र क्षेत्रादि कुर्वीत तथैव नृत्यम् ।
विवाहभूषाशकटाध्वयाने भद्रासु चैतान्यपि पौष्टिकानि ॥१०॥

भाषा—नन्दातिथियों में चित्रकर्म, उत्सव, वास्तु, तन्त्र, खेती, नाच तामसा, विवाह, गाड़ी आदि वाहनों पर चढ़ना शुभ है। भद्रा तिथियों में भी उपरोक्त कार्य शुभ है तथा पौष्टिक कर्म भी करे ॥

जयासु संग्रामबलोपयोगिकार्याणि सिद्ध्यन्ति विनिर्मितानि ।
रिक्तासु तद्वद्वधबन्धनादिविषाग्निशस्त्राणि च यान्ति सिद्धिम् ॥११॥

जयातिथियों में संग्राम के लिये उपयोगी कार्य सब सिद्ध होते हैं। तथा रिक्ता में वध, बन्धन आदि, विष अग्नि सम्बन्धी, और शस्त्र बनाये हुए शुभ होते हैं ॥११॥

पूर्णासु माङ्गल्यविवाहयात्रासपौष्टिकं शान्तिककर्म कार्यम् ।
सदैव दर्शे पितृकर्म मुक्त्वा नान्यद्विदध्याच्छुभमङ्गलानि ॥१२॥

पूर्णा तिथियों में मांगल्य, विवाह, यात्रा तथा पौष्टिक सहित शान्ति कर्म करे। परञ्च अमावास्या में केवल पितृकर्म छोड़कर और कोई कार्य न करे ॥ १२ ॥

अमावास्या के भेद—

सिनीवालीकुहूभेदादमावास्या द्विधा भवेत् ।
सा दृष्टेन्दुः सीनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः ॥१३॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अमावास्या के दो भेद हैं। जिसमें चन्द्रमा की कला दृष्ट हो वह सिनीवाली और जिसमें चन्द्रमा की कला नष्ट रहे वह कुहू कहलाती है ॥ १३ ॥

सत् असत्तिथियाँ—

द्वादशी चैव दर्शश्च रिक्ता षष्ठी तथाऽष्टमी ।
असत्तिथ्यो बुधैः प्रोक्ताः शेषाः सत्तिथयः स्मृताः ॥१४॥

१२, ३०, ४, ९, १४, ६, ८, ये असत्तिथियाँ हैं और बाकी [१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५] ये सत्तिथियाँ हैं ॥ १४ ॥

पर्वदिन—

अमावास्याष्टमी चैव पूर्णिमा च चतुर्दशी ।
एतानि पञ्च पर्वाणि रविसङ्क्रान्तिगं दिनम् ॥१५॥

अमावास्या, अष्टमी पूर्णिमा, चतुर्दशी, रविसङ्क्रान्ति दिन ये ५ पर्वदिन हैं।

तिथि की संज्ञा आदि जानने का चक्र—

तिथि	१	२	३	४	५
संज्ञा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
स्वामी	अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सर्प
शुक्ल	अशुभ				
कृष्ण	शुभ				

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

तिथि	६	७	८	९	१०
संज्ञा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
स्वामी	कार्तिकेय	सूर्य	शिव	दुर्गा	यम
शुक्ल	मध्यम				
कृष्ण	मध्यम				

तिथि	११	१२	१३	१४	१५	३०
संज्ञा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	पूर्णा.
स्वामी	विश्वे	विष्णु	कंदर्प	शिव	चन्द्र	पितर
शुक्ल	शुभ					
कृष्ण	अशुभ					

अथ सिद्धियोग—

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरौ पूर्णा च दैवज्ञैः सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥१६॥

शुक्र में नन्दा, बुध में भद्रा, मंगल में जया, शनि में रिक्ता और गुरुवार में पूर्णा सिद्धि योग होते हैं ॥ १६ ॥

अथ अमृतयोग—

रवौ सोमे तथा पूर्णा कुजे भद्रा गुरौ जया ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

तथा बुधे शनौ नन्दा शुक्रे रिक्तामृताऽह्वया ॥१७॥

रवि और सोम में पूर्णा, मंगल में भद्रा, बृहस्पति में जया, शुक्र में रिक्ता तथा बुध और शनि में नन्दा ये अमृत योग हैं ॥१७॥

अथ मृत्युयोग—

नन्दा रवौ कुजे चैव, भद्रा भार्गवसोमयोः ।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा मृताह्वया ॥ १८ ॥

रवि और मंगल में नन्दा, शुक्र और सोम में भद्रा, बुध में जया, बृहस्पति में रिक्ता, शनिवार में पूर्णा ये मृत्युयोग हैं ॥ १८ ॥

विशेष—यह आर्षवचनों से अमृत योग ही है। मुहूर्तचिन्तामणि पीयूषधारा टीका देखिये ॥

तिथियो में वर्ज्य—

तैलं विवर्जयेत् षष्ठ्यामष्टम्यां मांसमेव च ।
क्षौरक्रियां चतुर्दश्यां दर्शे स्त्रीसेवनं तथा ॥१९॥

षष्ठी में तैल, अष्टमी में मांस, चतुर्दशी में क्षौर, अमावस्या में स्त्री का सेवन न करे ॥ १९ ॥

दोषपरिहार—

शनौ षष्ठ्यां स्मृतं तैलं महाष्टम्यां पलाशनम् ।
क्षौरं शुक्लचतुर्दश्यां दीपमाल्यां च मैथुनम् ॥२०॥

शनिवार में षष्ठी हो तो तैल लगाने में, आश्विन शुक्ल महाष्टमी में मांस खाने में, शुक्लपक्ष की चतुर्दशी में क्षौर कराने में और दीपमालिका की अमावास्या में स्त्री संभोग करने में दोष नहीं है ॥ २० ॥

अथ दग्ध विधि—

मीने चापे द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयोः ।
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायां मिथुनेऽष्टमी ॥ २१ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एताश्च तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ २२ ॥

मीन और धन राशि में सूर्य रहें तो द्वितीया, वृष कुम्भ में ४, मेष कर्क में ६, कन्या मिथुन में ८, वृश्चिक सिंह में १०, मकर तुला में १२ ये दग्ध तिथियां शुभ कार्य में वर्जित हैं ॥ २२ ॥

इति तिथिप्रकरण ।

अथ नक्षत्रप्रकरण

नक्षत्रनाम —

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, (अभिजित्) श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती ॥

ताराविचार, राशिविचार आदि में अभिजित् की गणना नहीं होती है, इसलिये नक्षत्र की संख्या २७ ही प्रसिद्ध है। कहा भी है "उत्तराषाढतुर्यांशः श्रुतिपञ्चदशांशकः। कथितं चाभिजिन्मानं पुराणगणकोत्तमैः ॥" अर्थात् उत्तराषाढ के अन्तिम चतुर्थांश श्रवण के आदि के पञ्चदशांश अभिजित् का मान है ॥

अश्विन्यादि नक्षत्रों के स्वामी—

दस्रो यमोऽनलो ब्रह्मा शशी रुद्रोऽदितिर्गुरुः ।
सर्पश्च पितरश्चैव भगश्चाथोऽर्यमा रविः ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

त्वष्टा वायुश्च शक्राग्नी मित्रः शक्रश्च राक्षसः ।
जलं विश्वे विधिश्चैव विष्णुश्च वसुरम्बुपः ॥ २ ॥
अजपादस्त्वहिर्बुध्न्यः पूषा चैते यथाक्रमम् ।
अश्विन्यादिकभानां हि स्वामिनः परिकीर्तिताः ॥ ३ ॥

अश्विनी के स्वामी दस्र (अश्विनीकुमार), भरणी के यम, कृत्तिका के अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा, मृगशिरा के चन्द्रमा, आर्द्रा के शिव, पुनर्वसु के अदिति, पुष्य के गुरु, आश्लेषा के सर्प, मघा के पितर, पूर्वाफाल्गुनी के भग (सूर्य विशेष), उत्तराफाल्गुनी के अर्यमा (सूर्य विशेष), हस्त के रवि, चित्रा के त्वष्टा, स्वाती के वायु, विशाखा के इन्द्र और अग्नि दोनों, अनुराधा के मित्र, ज्येष्ठा के इन्द्र, मूल के राक्षस, पूर्वाषाढा के जल, उत्तराषाढा के विश्वेदेव, अभिजित् के विधि, श्रवण के विष्णु, धनिष्ठा के वसु, शतभिषा के वरुण, पूर्वाभाद्रपदा के अजपाद, उत्तराभाद्रपदा के अहिर्बुध्न्य, और रेवती के स्वामी पूषा हैं ॥१-३॥

अथ नक्षत्र की ध्रुवादि संज्ञा—

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ।
तत्र स्थिरं बीजगेहशान्त्याशमादि सिद्धये ॥ ४ ॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी और रविवार ये ध्रुव और स्थिर संज्ञक हैं, इनमें स्थिर कार्य-बीजवपन, शान्ति, बगीचा लगाना और आदि शब्द से मृदुसंज्ञक नक्षत्रोक्त कर्म सिद्ध होता है ॥ ४ ॥

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि परं चलम् ।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिका-गमनादिकम् ॥ ५ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और सोमवार ये चर और चल संज्ञक हैं, इनमें हाथी आदि पर चढ़ना, वाटिका लगाना,

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

यात्रा करना, आदि शब्द से लघुसंज्ञक नक्षत्र में कहा हुआ कर्म शुभ है ॥ ५ ॥

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति ॥६॥

तीनों पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्र) भरणी, मघा और मंगलवार ये उग्र और क्रूरसंज्ञक हैं, इनमें घात कर्म, अग्निदाह, शठता, विष सम्बन्धि कर्म, शस्त्र, आदि शब्द से दारुण नक्षत्रोक्त कर्म शुभ हैं ॥ ६ ॥

विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम्।
तत्राग्निकार्यं मिश्रश्च वृषोत्सर्गादि सिद्धये ॥ ७ ॥

विशाखा कृत्तिका और बुधवार ये मिश्र और साधारण संज्ञक हैं, इनमें अग्नि सम्बन्धी कर्म, मिश्रित कार्य, वृषोत्सर्ग, आदि शब्द से नक्षत्रोक्त कर्म शुभ हैं ॥ ७ ॥

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा।
तस्मिन् पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम् ॥ ८ ॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् और गुरुवार ये क्षिप्र और लघु-संज्ञक हैं, इनमें दूकान, रति, ज्ञान, शिल्प (चित्रकारी) कला कर्म, आदि से चर नक्षत्रोक्त कर्म शुभ हैं ॥ ८ ॥

मृगान्त्यचित्रा मित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा।
तत्र गीताम्बरक्रीडामित्रकार्यं विभूषणम् ॥ ९ ॥

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार ये मृदु और मैत्र नासक हैं, इनमें गीत, वस्त्र, क्रीडा, मित्र के कार्य और भूषण धारण करना शुभ है ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

मूलेन्द्राद्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ १० ॥

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार ये तीक्ष्ण और दारुण संज्ञक हैं, इनमें अभिचार घात, पापकर्म, चुगलपन, पशुओं की शिक्षा आदि शब्द से बन्धन आदि शुभ होते हैं ॥ १० ॥

नक्षत्र की अन्धादि संज्ञा—

अन्धाक्षं वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्याभिधं
मन्दाक्षं रविविश्वमित्रजलपाश्लेषाश्वि चान्द्रं भवेत् ।
मध्याक्षं शिवपित्रजैकचरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकं
स्वक्षं स्वात्यदितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगम् ॥ ११ ॥

धनिष्ठा, पुष्य, रोहिणी, पूर्वाषाढ़ा, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, रेवती ये अन्धसंज्ञक हैं । हस्त, उत्तराषाढ़ा, अनुराधा, शतभिषा, आश्लेषा, अश्विनी, मृगशिरा ये मन्दाक्ष हैं । आर्द्रा, मघा, पूर्वाभाद्र, चित्रा, ज्येष्टा, अभिजित, भरणी ये मध्यनेत्र हैं । स्वाती, अदिति, श्रवण, कृत्तिका, उत्तराभाद्र, मूल, पूर्वाफाल्गुनी ये सुलोचन संज्ञक हैं ॥ ११ ॥

प्रयोजन नाश लाभ ज्ञान—

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः ।
स्याद् दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने ॥ १२ ॥

अन्ध नक्षत्र में नष्ट हुई चीज शीघ्र मिलती है, मन्द नक्षत्रों में यत्न करने से, मध्य नक्षत्र में नष्ट वस्तु की खबर मात्र हो; प्राप्ति नहीं हो, और सुलोचन नक्षत्रों में नष्ट हुई चीजों की खबर और प्राप्ति कुछ भी नहीं होती है ॥ १२ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ पञ्चक (मदवा)—

पञ्च भानि धनिष्ठातः पञ्चकं परिकीर्त्यते ।
गृहार्थं तृणकाष्ठानां संग्रहं तत्र वर्जयेत् ॥ १३ ॥

धनिष्ठादि पाँच नक्षत्र पञ्चक कहलाता है, इन नक्षत्रों में गृह बनाने के लिये तृण काष्टका संग्रह आदि न करे ॥ १३ ॥

पञ्चक में मतान्तर—

न गच्छेद्दक्षिणामाशां षट्के च श्रवणादिके ।
गृहार्थं तृणकाष्ठादेः शय्यादेः संग्रहं त्यजेत् ॥ १४ ॥

श्रवण आदि ६ नक्षत्रों में दक्षिणदिशा की यात्रा गृह के लिए तृण काष्ठ का संग्रह और शय्या आदि बनवाना त्याग करे ॥ १४ ॥

अथ परिहार—

वस्वादौ शतभे मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके ।
पञ्च पञ्च घटीः प्राज्ञो रेवतीं सकलां त्यजेत् ॥ १५ ॥

धनिष्ठा के आदि की, शतभिषा के मध्य की, पूर्वाभाद्रपद के आदि की, उत्तराभाद्रपद के अन्त की पाँच पाँच घटी त्याज्य है और रेवती सम्पूर्ण त्याज्य है ॥ १५ ॥

अथ वारनक्षत्रभव अमृतयोग—

हस्तः सूर्य मृगश्चन्द्रे रेवती कुजवासरे ।
अनुराधा बुधे, पुष्यो गुरुवारे तथैव च ॥
अश्विनी भृगुवारे च रोहिणी शनिवासरे ।
योगश्चामृतसंज्ञोऽयं प्राचीनैः परिकीर्तितः ॥ १६ ॥

रविवार में हस्त, सोम में मृगशिरा, मङ्गल में रेवती, बुध में अनुराधा, गुरुवार में पुष्य, शुक्र में अश्विनी, शनि में रोहिणी ये अमृतयोग हैं ॥ १६ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ शुभयोग—

मूलं रवौ पुष्यकरोत्तराणि
वेधा मृगाङ्कः श्रवणश्च सोमे ।
कृशानुपुष्योत्तरभानि भौमे
बुधेऽनुराधा वरुणः कृशानुः ॥ १७ ॥
बृहस्पतौ पुष्यपुनर्वसू च
भगोऽश्विनी च श्रवणश्च शुक्रे ।
शनैश्चरे स्वातिपितामहौ च
योगाः किलैते शुभदायिनः स्युः ॥ १८ ॥

रवि में मूल, पुष्य, तीनों उत्तरा, सोम में रोहिणी मृगशिरा और श्रवण, तथा मंगल में कृत्तिका पुष्य तीनों उत्तरा, बुध में अनुराधा शतभिषा कृत्तिका, बृहस्पति में पुष्य पुनर्वसु, शुक्र में पूर्वाफाल्गुनी अश्विनी श्रवण, शनैश्चर में स्वाती रोहिणी ये शुभ योग हैं ॥१७-१८॥

अथ सर्वार्थसिद्धियोग—

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्र-
चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं
ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् ॥ १९ ॥
जीवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं
शुक्रेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोभम् ।
शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि
सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वैः ॥ २० ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

रविवार में हस्त मूल तीनों उत्तरा पुष्य अश्विनी, चन्द्रवारमें श्रवण रोहिणी मृगशिरा पुष्य अनुराधा, मंगलवार में अश्विनी उत्तराभाद्रा कृत्तिका आश्लेषा, बुधवार में रोहिणी अनुराधा कृत्तिका हस्त मृगशिरा, बृहस्पति में रेवती अनुराधा अश्विनी पुनर्वसु पुष्य, शुक्र में रेवती अनुराधा अश्विनी पुनर्वसु श्रवण, शनि मे रोहिणी स्वाती श्रवण ये प्राचीनाचार्यों ने सर्वार्थसिद्धियोग कहे हैं ॥ १९–२० ॥

अथ भवारोत्थ मृत्युयोग—

त्यज रविमनुराधे वैश्वदेवे च सोमे
शतभिषजि च भौमं चन्द्रजं चापि दस्रे ।
मृगशिरसि सुरेज्यं सर्पदेवे च शुक्रं
रविसुतमपि हस्ते मृत्युयोगाभिधानम् ॥२१॥

रविवार में अनुराधा, सोम में उत्तराषाढा, मङ्गल में शतभिषा, बुध में अश्विनी, बृहस्पति में मृगशिरा, शुक्र में आश्लेषा, शनि में हस्त ये मृत्युयोग हैं । इसलिये इनका त्याग करना चाहिये ॥ २१ ॥

अथ यमघण्टयोग—

स्वाती मघा रवौ चन्द्र पुष्यः श्लेषा तथैव च ।
मङ्गले भरणी मैत्रं बुधे चार्द्रा तथार्यमा ॥२२॥
गुरौ च रेवती मूलं शुक्रे स्वाती च रोहिणी ।
यमघण्टो बुधैः प्रोक्तः शतभं श्रवणः शनौ ॥२३॥

रवि में स्वाती मघा, सोम में पुष्य आश्लेषा, मङ्गल में भरणी अनुराधा, बुध में आर्द्रा उत्तराफाल्गुनी बृहस्पति में रेवती मूल, शुक्र में स्वाती रोहिणी, शनि में शतभिषा श्रवण ये यमघण्ट हैं ॥२२-२३॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ अशुभयोगपरिहार—

यमघण्टे त्यजेदष्टौ मृत्यौ द्वादशनाडिकाः ।
अन्येषु पापयोगेषु मध्याह्नात्परतः शुभम् ॥२४॥

यमघण्ट में ८ घड़ी, मृत्युयोग में १२ घड़ी त्याग करे और दूसरे पापयोगों में मध्याह्न से पश्चात् शुभ होते हैं ॥ २४ ॥

आनन्दादि अष्टाविंशतियोग जानने का प्रकार—

दास्रादर्के मृगादिन्दौ सार्पाद्भौमे कराद्बुधे ।
मैत्राद् गुरौ भृगौ वैश्वाद्गण्या मन्दे च वारुणात् ॥२५॥

रविवार में अश्विनी आदिक अभिजित् सहित २८ नक्षत्र आनन्द आदि २८ योग होते हैं, सोमवार में मृगशिरा से, मङ्गल में आश्लेषा से, बुध में हस्त से, गुरुवार में अनुराधा से, शुक्रवार में उत्तराषाढा से, और शनिवार में शतभिषा से गणना करना चाहिये ॥ २५ ॥

अथ आनन्दादियोगनाम—

आनन्दाख्यः कालदण्डश्च धूम्रो
धाता सौम्यो ध्वांक्षकेतू क्रमेण ।
श्रीवत्साख्यो वज्रकं मुद्गरश्च
छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुम्बौ ॥ २६ ॥
उत्पातमृत्यू किल काणसिद्धी
शुभोऽमृताख्यो मुसलं गदश्च ।
मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्य-
प्रवर्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना ॥ २७ ॥

आनन्द, कालदण्ड, धूम्र, धाता, सौम्य, ध्वांक्ष, केतु, श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर, छत्र, मित्र, मानस, पद्म, लुम्ब, उत्पात, मृत्यु, काण, सिद्धि,

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शुभ, अमृत, मुसल, गद, मातङ्ग, रक्ष, चर, सुस्थिर, प्रवर्धमान ये २८ योग अपने नाम के तुल्य फल देने वाले हैं ॥ २६-२७ ॥

आनन्दादि योगों का फल—

सिद्धिर्मृत्युर्भयं सौख्यं शुभं चारिष्टमेव च ।
सिद्धिः शुभं कलिर्घातो मनोवाञ्छितजं फलम् ।
सौख्यं धनं शुभं कर्म हानिर्विघ्नं मृतिस्तथा ।
धनक्षतिर्धनप्राप्तिः सर्वसौख्यं तथैव च ॥ २८ ॥
शुभं मानक्षयो रोगो वाहनं चाशुभं तथा ।
चालनं तोषणं वृद्धिरानन्दादिफलं क्रमात् ॥ २६ ॥

ये क्रमसे आनन्दादियोगों के फल हैं ।

योगजानने का उदाहरण—

जैसे—सोमवार में पुष्य नक्षत्र, आनन्दादियोगों में कौनसा योग होगा-तो यहां "मृगादिन्दौ" इस उपरोक्त नियम के अनुसार मृगशिरा से पुष्य तक गिनने से ४ चार हुआ तो आनन्दादि से चौथा धाता नामक योग हुआ । इसका फल सौख्य है, इसलिये सोमवार का पुष्य नक्षत्र शुभ हुआ । इसी प्रकार सब वारों में समझना॥२८-२६॥

इति नक्षत्र प्रकरण ।

अथ योगप्रकरण ।

योगजानने की रीति ।

यस्मिन्वृक्षे स्थितो भानुर्यत्र तिष्ठति चन्द्रमाः ।
एकीकृत्य त्यजेदेकं योगा विष्कम्भकादयः ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

जिस नक्षत्र में सूर्य हो और जिस नक्षत्र में चन्द्रमा हो दोनों की संख्या के जोड़ में एक घटाकर विष्कम्भादिक योग होते हैं, संख्या यदि सत्ताईस से अधिक हो तो २७ घटाकर शेष विष्कम्भादि योग समझना ॥ १ ॥

विष्कम्भादियोगनाम—

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान्सौभाग्यः शोभनस्तथा ।
अतिगण्डः सुकर्माख्यो धृतिः शूलस्तथैव च ॥ २ ॥

गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।
वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान्परिघः शिवः ॥ ३ ॥

सिद्धः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मेन्द्रौ वैधृतिस्तथा ।
सप्तविंशतियोगास्ते स्वनामफलदाः स्मृताः ॥ ४ ॥

विष्कम्भ, प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान्, परिघ, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐन्द्र, वैधृति, ये २७ योग अपने २ नाम के सदृश फलदायक हैं ॥ २-४ ॥

वि०—विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति ये अशुभ योग हैं ॥

अशुभयोगपरिहार—

विरुद्धयोगेषु सदाद्यपादः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयः ।
सवैधृतिस्तु व्यतिपातयोगः सर्वोऽप्यनिष्टः परिघस्य चार्धम् ॥

तिस्रस्तु विष्कम्भकवज्रयोश्च व्याघातसंज्ञे नव पञ्च शूले ।
गण्डातिगण्डे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शुभकार्य में अशुभ योग का प्रथम चरण त्याग करना चाहिये, वैधृति और व्यतीपात समस्त वर्जनीय है। परिघ योग का पूर्वार्ध, तथा विष्कम्भ और वज्र योग के आदि की तीन तीन घड़ी, व्याघात में ९ घड़ी, शूल में ५ घड़ी, गण्ड अतिगण्ड में ६ घड़ी त्याग करना चाहिये ॥ ५-६ ॥

इति योगप्रकरण ।

अथ करणप्रकरण ।

करणानयन—

गततिथ्यो द्विनिघ्न्यश्च सप्तभक्ताश्च शेषकम् ।
बवाद्यं करणं पूर्वे भागे सैकं तथोत्तरे ॥ १ ॥

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से गिनकर गत तिथि को २ से गुना करके सात का भाग देने से जो शेष बचे वे बवादिक करण वर्तमानतिथि के पूर्वार्ध में होते हैं और १ जोड़ने से उत्तरार्ध में करण होता है ॥१॥

यथ चरकरणनाम—

बवाह्वयं बालवकौलवाख्ये ततो भवेत्तैतिलनामधेयम् ।
गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्याः करणानि सप्त ॥२॥

बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज और विष्टि ये सात चल करण हैं ॥ २॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ स्थिरकरण—

स्थिराणि शकुनिर्नागस्तृतीयं तु चतुष्पदम् ।
किंस्तुघ्नं तु चतुर्दश्याः कृष्णायाश्चापरार्धतः ॥ ३ ॥

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध में शकुनि, अमावास्या के पूर्वार्ध में नाग, उत्तरार्ध में चतुष्पद और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्न नामक करण होता हैं। ये चार स्थिर करण हैं ॥३॥

बवादीनि ततः सप्त चराख्यकरणानि च ।
तिथ्यर्धभोगं सर्वेषां करणानां प्रकल्पयेत् ॥ ४ ॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के उत्तरार्ध से कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के पूर्वार्ध पर्यन्त बवादिक ७ सातों चल करण महीने में आठ आवृत्ति करके भोग करते हैं। और तिथि के आधे सब करणों का मान है स्पष्टार्थ नीचे चक्र देखो—

कृष्णपक्ष तिथि करण ज्ञान चक्र—

कृष्णपक्ष तिथि	१	२	३	४	५	६	७	
पूर्वार्ध—	बालव	तैति	वणि	बव	कौल	गर	विष्टि	
उत्तरार्ध	कौल	गर	विष्टि	बाल	तैति	वणि	बव	
कृष्णपक्ष तिथि	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१[illegible]
पूर्वार्ध	बालव	तैति	वणि	बव	कौल	गर	वि.	च[illegible]
उत्तरार्ध	कौल	गर	विष्टि	बाल	तैति	वणि	शकु	ना[illegible]

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शुक्लपक्ष तिथि करण ज्ञान चक्र—

शुक्लपक्ष तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८
पूर्वार्ध	किंस्तु	बाल	तैति	वणि	बव	कौल	गर	विष्टि
उत्तरार्ध	बव	कौल	गर	विष्टि	बाल	तैति	वणि	बव
शुक्लपक्ष तिथि	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
पूर्वार्ध	बाल	तैति	वणि	बव	कौल	गर	विष्टि	
उत्तरार्ध	कौल	गर	विष्टि	बाल	तैति	वणि	बव	

इन करणों में विष्टि (भद्रा) सर्वथा त्याज्य है, जैसे—बृहस्पति का वचन—

विष्टिस्तु सर्वथा त्याज्या क्रमेणैवागता तु या ।
अक्रमेणागता भद्रा सर्वकार्येषु शोभना ॥ ५ ॥

क्रम से आई हुई भद्रा (अर्थात् पूर्वार्ध की भद्रा दिन में और परार्ध की भद्रा रात्रि में) सब शुभ कार्यों में त्याज्य है। तथा अक्रम से आई हुई (अर्थात् पूर्वार्ध की भद्रा रात्रि में और उत्तरार्ध की भद्रा दिन में) सब कार्यों में शुभ होती है ॥ ५ ॥

भद्राज्ञान—

शुक्ले पूर्वार्धेऽष्टमीपञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्द्धे ।
कृष्णेऽन्त्यार्धे स्यात्तृतीयादशम्योः पूर्वेभागे सप्तमी शम्भुतिथ्योः ॥६॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शुक्लपक्ष की अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्ध में, और एकादशी चतुर्थी के उत्तरार्ध में भद्रा रहती है। तथा कृष्णपक्ष की तृतीया दशमी के उत्तरार्ध में और सप्तमी चतुर्दशी के पूर्वार्ध में भद्रा रहती है ॥ ६ ॥

भद्रामें अवश्य वर्जनीय—

भद्रायां द्वे न कर्तव्ये, श्रावणी फाल्गुनी तथा ।
श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ॥ ७ ॥

भद्रा में श्रावणी (रक्षाबन्धन आदि) और फाल्गुनी (होलिकादाहादि) न करे। क्योंकि भद्रा में श्रावणी करने से राजाओं का नाश, और फाल्गुनी करने से ग्राम में अग्निभय होता है ॥ ७॥

परिहार—

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात्त्रयेऽलिगे ।
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम् ॥ ८ ॥

कुम्भ, मीन, कर्क, सिंह इन राशियों के चन्द्रमा में मृत्युलोक में, और मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक के चन्द्रमा में स्वर्ग में तथा कन्या, धन,तुला और मकर के चन्द्रमा में पाताल में भद्रा रहती है। जहाँ रहती है वहाँ ही फल देती है ॥ ८॥

इति करणप्रकरणम् ।

अथ अवकहडा-चक्रोद्धार—

शतपदचक्रानुसार नक्षत्र चरण—

चू चे चो ला, पदा दास्रे, ली लू ले लो, तु याम्यभे ।
अ ई ऊ ए कृत्तिकायां, ओ वा वी वु, च धातृभे ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

वे वो का की मृगे प्रोक्ताः कू घ ङा छा, च रुद्रभे ।
के को हा ही तथादित्ये, हू हे हो डा तु पुष्यभे ॥
डी डू डे डो तथा सार्पे, मा मी मू मे, तु पित्र्यभे ।
मो टा टी टू पदा भाग्ये, टे टो पाप्यर्यमर्क्षके ॥
पू ष ण ठ तथा हस्ते, पे पो रा री, तु त्वाष्ट्रभे ।
रू रे रोता पदाः स्वातौ, ती तू ते तो द्विदैवते ॥
ना नी नू ने पदा मैत्रे, नो या यी यू तथैन्द्रभ ।
ये यो भा भी पदा मूले, भू धा फा ढा जलर्क्षके ॥
भे भो जा जी तु वैश्वर्क्षे, जू जे जो खाऽभिजित्पदाः ।
खी खू खे खो श्रुतौ ज्ञेयाः गा गी गू गे, तु वासवे ॥
गो सा सी सू जलेशऽक्ष से सो दाद्यजपादभे ।
दु थ झ ञोत्तराभाद्रे दे दो चा ची तथाऽन्त्यभे ॥

चू चे चो ला अश्विनी, ली लू ले लो भरणी, अ ई उ ए कृत्तिका, जो वा वि बू रोहिणी, वे वो का की मृगशिरा, कू घ ङ छ आर्द्रा, के को हा ही पुनर्वसु, हू हे हो डा पुष्य,डी डू डे डो आऽश्लेषा, मा मी मू मे मघा, मो टा टी टू पूर्वफाल्गुनी, टे टो पा पी उत्तर-फाल्गुनी, पू ष ण ठ हस्त, पे पो रा री चित्रा, रू रे रो ता स्वाती, ती तू ते तो विशाखा, ना नी नू ने अनुराधा, नो या यी यू जेष्ठा, ये यो भा भी मूल, भू धा फा ढा पूर्वाषाढा, भे भो जा जी उत्तराषाढा, जू जे जो खा अभिजित्, खी खू खे खो श्रवण, गा गी गू गे धनिष्ठा, गो सा सी सू शतभिषा, से सो दा दी पूर्वाभाद्रपदा, दू थ झ ञ उत्तरा-भाद्रपदा, दे दो चा ची रेवती, इस प्रकार एक नक्षत्र में चार चार चरण हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

जिस नक्षत्र के जिस चरण में जन्म हो उस चरण में जो वर्ण पठित हैं वही अक्षर नाम के आदि में रखना चाहिये। जैसे—मृगशिर के तृतीय चरण में ककार है इसलिये ककारादि नाम रखना चाहिये, जैसे—'कमलाकान्त' 'कालीदत्त' 'कन्तलाल' इत्यादि ऐसे सब नक्षत्र में समझना ॥

कोई कोई कहते हैं कि—"आर्द्रा के तृतीय चरण, हस्त के तृतीय चरण और उत्तराभाद्रपदा के चतुर्थ चरण में किसी का जन्म हो तो क्रमसे ङकार णकार तथा ञकार नाम के आदि अक्षर में पड़ेंगे, परन्तु ऐसा नाम कोई नहीं मिलता है। इसलिये ङकार के स्थान में गकार ग्रहण करना चाहिये अर्थात् आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्म वाले का गकाराद्यक्षर (गजानन-गणपति इत्यादि) नाम रखना चाहिये"। किन्तु उन लोगों का ऐसा कहना भ्रम है, क्योंकि ऐसे करने से आर्द्रा तृतीय चरण में जन्मवालों का धनिष्ठा के प्रथम चरण का सन्देह होगा। इसलिये आर्द्रा तृतीय चरण वाले का णकाराद्यक्षर तथा उत्तराभाद्रपदा के चतुर्थ चरण वाले का ञकाराद्यक्षर ही जन्म नाम समझना चाहिये पुकारने के लिये कोई दूसरा नाम रख लेना चाहिये ॥

उपर क्तभ्रम का मूल

नरपतिजयचर्या आदि स्वरग्रन्थ में नाम के आद्यक्षर से वर्ण स्वर, मात्रा स्वर आदि का विचार किया जाता है, वहां "ङ, ञ, ण" इन तीनों वर्णों का ग्रहण नहीं किया गया है, क्योंकि ये पुकार के नाम के आदि में नहीं देखे जाते हैं। इसलिये लिखा है—

न प्रोक्ता ङ ञ णा वर्णा नामादौ सन्ति ते नहि।
चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया गजडास्ते यथाक्रमम् ॥ ८ ॥

वर्णस्वरचक्र में "ङ ञ ण" ये वर्ण नहीं कहे गये हैं, क्योंकि ये तीनों वर्ण नाम के आदि में नहीं पाये जाते हैं—अगर किसी नाम

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

के आदि में हो तो वहां ङकार के जगह गकार, ञकार के स्थान में जकार तथा णकार के स्थान में डकार समझना चाहिये। यह स्वर विचार में कहे हैं। किन्तु इसका अर्थ कितने अनभिज्ञ उलटा समझ कर शतपद चक्रानुसार नामकरण में लगाते हैं, वह मानने योग्य नहीं है॥ ८॥

नाम के आदि अक्षर से नक्षत्र का ज्ञान—

यन्नामाद्यक्षरं यस्य नक्षत्रस्य पदे भवेत्।
तदेव तस्य नक्षत्रं विज्ञेयं गणकोत्तमैः॥ ९॥

नाम का प्रथम अक्षर जिस नक्षत्र के चरण में हो वही उसका नक्षत्र समझना चाहिये। उदाहरण—जैसे "गजानन" का नक्षत्र कौन है? यहाँ नाम के आदि में 'ग' कार है, वह धनिष्ठा के प्रथम चरण में है, इसलिये "गजानन" नाम का धनिष्ठा नक्षत्र हुआ॥ ९॥

यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षरलक्षणः।
ग्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले॥ १०॥

यदि नाम के आदि में संयुक्ताक्षर हो तो उनमें प्रथम वर्ण का ग्रहण करना चाहिये। उदाहरण—जैसे-'श्रीपति' नाम के आदि में संयुक्त वर्ण 'श्र' के प्रथम 'श' कार है, वह शतभिषा के द्वितीय चरण में है, इसलिये श्रीपतिका नक्षत्र शतभिषा हुआ॥ १०॥

अनुक्तत्वादृकारस्य रेफो ग्राह्यो विचक्षणैः।
ऋद्धिनाथस्य नक्षत्रं यथा चित्राख्यमेव हि॥ ११॥

शतपद चक्र में ऋकार नहीं कहा गया है, इसलिये ऋकार के स्थान में रेफ (र) ग्रहण करना चाहिये। जैसे 'ऋद्धिनाथ' नाम के आदि अक्षर 'ऋ' कार के स्थान में 'र' ग्रहण करके चित्रा नक्षत्र का तृतीय चरण सिद्ध हुआ॥ ११॥

तथा च—

अ आ, इ ई, उ ऊ, ए ऐ, ओ औ, द्वौ द्वौ मिथः समौ।
ब वौ, शसौ तथैवात्र ज्ञेयौ दैवविदां सदा॥ १२॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शतपद्चक्र में अकार और, आकार, तथा इकार और ईकार, उकार और ऊकार तथा एकार और ऐकार, एवं ओकार और औकार परस्पर तुल्य समझे जाते हैं, तथा बकार और वकार शकार और सकार ये दो दो अक्षर तुल्य समझना चाहिये। जैसे 'अमरनाथ' और आदित्यप्रसाद दोनों का एक ही (कृत्तिका) नक्षत्र का प्रथम चरण हुआ, ऐसे ही 'शक्तिनाथ' और सन्तलाल का शतभिषा नक्षत्र का द्वितीय चरण हुआ। ऐसे ही और भी समझना ॥ १२ ॥

अथ राशिपरिभाषा—

कला स्याद्विकलात्षष्ट्या तत्षष्ट्या चांश उच्यते ।
त्रिंशदंशर्भवेद्राशिर्भगणो द्वादशैव ते ॥ १३ ॥

६० विकला की १ कला, ६० कला का १ अंश, ३० अंश की १ राशि और १२ राशियों का १ भगण होता है ॥ १३ ॥

राशि नाम—

मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कः सिंहश्च कन्यका ।
तुला च वृश्चिकश्चैव धनुश्च मकरस्तथा ॥ १४ ॥
कुम्भो मीनस्तथा ज्ञेया राशिसंज्ञा यथाक्रमम् ।

मेष, वृष, मिथुन, कर्क सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन ये क्रमसे बारहों राशि के नाम हैं ॥ १४ ॥

नक्षत्र से राशि जानने का प्रकार—

एकैकस्मिंस्तथा राशौ नक्षत्रचरणा नव ॥ १५ ॥

एक एक राशि में नौ नौ चरण होते हैं ॥ १५ ॥

यथा—

मेषोऽश्विनी च भरणी कृत्तिकैकपदन्तथा ।
कृत्तिकाङ्घ्रित्रयं ब्राह्मं मृगार्धं वृष उच्यते ॥ १६ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

मिथुनं मृगार्धमार्द्रा च पुनर्वसुपदत्रयम्।
पुनर्वसुपदैकं तु पुष्यःऽश्लेषा च कर्कटः॥ १७॥
सिंहो मघा च पूर्वा स्यादुत्तरैकपदं तथा।
उत्तराङ्घ्रित्रयं हस्तश्चित्रार्धं चैव कन्यका॥ १८॥
तुला चित्रादलं स्वाती विशाखा चरणत्रयम्।
विशाखैकपदं मैत्रं ज्येष्ठा सर्वा च वृश्चिकः॥ १९॥
मूलं पूर्वोत्तराषाढपदमेकं धनुस्तथा।
उत्तराङ्घ्रित्रयं कर्णो धनिष्ठार्धं मृगस्तथा॥ २०॥
धनिष्ठार्धं शतभिषा पूर्वापादत्रयं घटः।
मीनः पूर्वापदैकं स्यादुत्तरा रेवती तथा॥ २१॥

भा.—चौ.पाई—

असुनी भरणी पद निःशेष, कृत्तिका एक चरण है मेष।
कृत्तिका तीन रोहिणी चार, दो पद मृगशिर वृषभ उचार॥
मृगशिर दोपद आर्द्रा चार, तीन पुनर्वसु मिथुन विचार।
एक पुनर्वसु पुष्यश्लेष, जानो कर्कट राशि विशेष॥
मघा पूर्व उत्तर पद एक, सिंह राशि का करो विवेक।
उत्तर तीन सकल पद हस्त, दो चित्रा कन्या परशस्त॥
दो चित्रा स्वाती समतूल, तीन विशाखा पद है तूल।
एक विशाखा पद अनुराध, जेष्ठा है वृश्चिक निर्बाध।
मूल पूर्व उत्तरपद एक, धनुष राशि पर करो विवेक।
उत्तर तीन श्रवण पद वेद, दोय धनिष्ठा मकर विभेद॥
दोय धनिष्ठा शतभिष चार, पूर्वा तीन कुम्भ निर्धार।
पूर्वा एक उत्तरा चार, सकल रेवती मीन विचार॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

उदाहरण—जैसे विचार करना है कि "अनिरुद्ध चौधरी" की कौन राशि है तो यहां नाम के आदि का अक्षर अकार है तथा अकार कृत्तिका के प्रथम चरण में है, उपरोक्त पद्यानुसार कृत्तिका के प्रथम चरण की मेष राशि है। इसलिये "अनिरुद्ध चौधरी" की मेष राशि हुई, इसी प्रकार सर्वत्र समझना, विशेष स्पष्ट के लिये नीचे चक्र देख के समझ लेना।

राशि की पुं-स्त्री आदि संज्ञा—

पुँस्त्री क्रूराक्रूरौ चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञाः स्युः।
क्षत्रिय-वैश्यक-शूद्र-ब्राह्मणवर्णाः क्रमादजाद्यास्ते ॥ २२ ॥

अर्थ—मेषादिक बारहों राशि क्रमसे पुरुष; स्त्री, अशुभ, शुभ, तथा चर, स्थिर, द्विस्वभाव, और क्षत्रिय, वैश्य शूद्र, ब्राह्मण वर्ण हैं ॥ २२ ॥

नाम आदि अक्षर से राशि जानने का चक्र।

	मे.	वृ.	मि.	[illegible]	सिं	कं	तु	वृ	ध.	म.	कु.	मी.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अक्षर—	चू	इ	क	हि	मा	टो	रा	नो	ये	भो	गु	दी
	चे	उ	कि	हू	मि	प	रि	न	यो	जजी	गे	दू
	चो	ए	कु	हे	मू	पि	रू	नि	भ	जूजे	गो	थ
	ल	ओ	घ	हो	मे	पु	रे	नू	भि	जोखा	सा	झ
	लि	वा	ङ	डा	मो	ष	रो	ने	भु	खि	सि	ञ
	लू	वि	छ	डि	टा	ण	ता	नो	धा	खु	सू	दे
	ले	वू	के	डू	टि	ठ	ति	या	फा	खे	से	दो
	लो	वे	को	डे	टू	पे	तू	यि	ढा	खोग	सो	च
	अ	वो	ह	डो	टे	पो	ते	यू	भे	गि	दा	ची

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शुभाशुभ	पुँ० स्त्री	चरादिसंज्ञा	स्वामी	राशि
अशुभ	पुरुष	चर	मंगल	मेष
शुभ	स्त्री	स्थिर	शुक्र	वृष
अशुभ	पुरुष	द्विस्वभाव	बुध	मिथुन
शुभ	स्त्री	चर	चन्द्र	कर्क
अशुभ	पुरुष	स्थिर	रवि	सिंह
शुभ	स्त्री	द्विस्वभाव	बुध	कन्या
अशुभ	पुरुष	चर	शुक्र	तुला
शुभ	स्त्री	स्थिर	मंगल	वृश्चिक
अशुभ	पुरुष	द्विस्वभाव	बृहस्पति	धन
शुभ	स्त्री	चर	शनि	मकर
अशुभ	पुरुष	स्थिर	शनि	कुम्भ
शुभ	स्त्री	द्विस्वभाव	बृहस्पति	मीन

विशेष—राशि विचार में अभिजित् की गणना नहीं की जाती है, क्योंकि अभिजित् का भोग उत्तराषाढ़ा और श्रवण के अन्तर्गत है। इस लिये अभिजित् के 'जू जे जो' ये तीनों चरण उत्तराषाढ़ा में और चौथा चरण (ख) श्रवण में मानकर मकर राशि मानी जाती है ॥

अथ राशि स्वामी—

सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कर्कस्याधिपतिः शशी ।
मेषवृश्चिकयोर्भौमः कन्यामिथुनयोर्बुधः ॥ २३ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

जीवो मीनधनुःस्वामी शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
मृगकुम्भपतिः सौरिः कथितो गणकोत्तमैः ॥ २४ ॥

सिंह के स्वामी सूर्य, कर्क के चन्द्रमा, मेष वृश्चिक के मङ्गल, मिथुन, कन्या के बुध, धनु; मीन के बृहस्पति, वृष तुला के शुक्र और मकर कुम्भ के स्वामी शनि हैं ॥ २३-२४ ॥

शंका—यहाँ शंका है कि ग्रहों में सूर्य और चन्द्रमा, प्रधान होकर एक राशि के स्वामी और कुजादि पांचों ग्रह दो दो राशियों के स्वामी क्यों हुए ?

इसके उत्तर में प्राचीन वचन है—

सिंहादिषट्कस्य पतिर्दिनेशः
कर्कादिषट्कस्य पतिर्निशेशः ।
ताभ्यां प्रदत्तं च कुजादिकेभ्य
एकैकमस्माद् द्विगृहाधिपास्ते ॥ २५ ॥

सिंह से (आगे की) ६ राशियों के स्वामी सूर्य, कर्क से लेकर (पीछे की) ६ राशियों के स्वामी चन्द्रमा थे । ये दोनों मङ्गलादिक पाँचों ग्रहों को एक एक राशि दिये । इस लिये सूर्य और चन्द्रमा को एक एक बची और मंगलादिक को दो दो राशियाँ हुईं ॥२५॥

अथ तारा विचार—

जन्मभाद्दिनभं यावत् सङ्ख्यैव नवतष्टिता ।
तारा तत्राद्यपश्चाद्रित्रिसङ्ख्या न शुभप्रदाः ॥ २६ ॥

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र पर्यन्त गिनकर जो संख्या हो उसमें नौ का भाग देने से जो शेष बचे वही तारा होती है । उनमें १, ३, ५, ७, वीं तारायें शुभ नहीं होतीं, अर्थात २, ४, ६, ८, ९, वीं तारायें शुभ हैं ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

उदाहरण—जैसे बाबू "शिवशङ्कर" चौधरी को पुनर्वसु नक्षत्र में पश्चिम दिशा की यात्रा करनी है तो-यहां नाम के आद्य अक्षर (शि) के अनुसार जन्मनक्षत्र शतभिषा हुआ, इस लिये शतभिषा से दिन के नक्षत्र (पुनर्वसु) तक गिनने से ११ हुए, इन में ९ का भाग देने से २ बचा अर्थात् दूसरी तारा हुई, दूसरी शुभ है। इसी प्रकार और भी समझना ॥ २६ ॥

अथ तारानाम—

जन्माख्यसम्पद्विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः ।
वधमैत्रातिमैत्राख्यास्तारा नामसदृक्फलाः ॥ २७ ॥

जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र, ये तारायें अपने २ नाम तुल्य फल देती हैं ॥ २७ ॥

विशेष—

प्रथमे च द्वितीये च पर्यये प्रत्यरिः शुभः ।
जन्मातारा विवाहादौ माङ्गल्ये च शुभाः स्मृताः ॥ २८ ॥

प्रथम और द्वितीय आवृत्ति की प्रत्यरि (५ वीं तारा) शुभ है, और जन्मकी तारा तीनों आवृत्ति की विवाहादि शुभ कार्य में शुभ है ॥ २८ ॥

दुष्टतारा की शान्ति—

प्रत्यरौ लवणं दद्यात् शाकं दद्यात् त्रिजन्मसु ।
गुडं विपत्तितारायां वधे च तिलकाञ्चनम् ॥ २९ ॥

(आवश्यक कार्य में) प्रत्यरि (५) तारा में लवण दान करे। जन्म (१) तारा में शाक, विपत् (३) तारा में गुड़, और वध (७) तारा में तिल और सुवर्ण दान करे तो शुभ होता है ॥२९॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ चन्द्रविचार—

जन्मराशिं समारभ्य या सङ्ख्या चन्द्रमावधिः ।
चन्द्रस्तत्सङ्ख्यको ज्ञेयस्तथा च तत्फलं वदेत् ॥३०॥

जन्मराशि से इष्ट दिन की चन्द्र राशि पर्यन्त गिनने से जो सङ्ख्या हो तत्सङ्ख्यक चन्द्रमा समझना और तदनुसार उसका फल कहना ॥ ३० ॥

अथ चन्द्रफल—

आद्ये चन्द्रे शुभं ज्ञेयं मनस्तोषं द्वितीयके ।
तृतीये धनसम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥ ३१ ॥
पञ्चमे ज्ञानवृद्धिः स्यात्षष्ठे धान्यधनागमः ।
सप्तमे राज-सम्मानमष्टमे प्राणसंशयः ॥३२॥
नवमे धर्मलाभः स्यात् सिद्धिस्तु दशमे भवेत् ।
एकादशे जयो नित्यं द्वादशे सर्वथा क्षतिः ॥३३॥

१ प्रथम चन्द्र में शुभ, २ में मानस तुष्टि, ३ में धन सम्पत्ति, ४ में कलह (लड़ाई), ५ में ज्ञान की वृद्धि, ६ में धन धान्य प्राप्ति, ७ में राजा से सम्मान, ८ में प्राणसंशय, ९ में धर्मलाभ, १० में सिद्धि, ११ में जय लाभ और १२ वें चन्द्रमा में सर्वथा हानि होती है।

चन्द्रमा जानने का उदाहरण—जैसे बाबू "जगन्नाथ" चौधरी को रोहिणी नक्षत्र वृषराशि के चन्द्रमा में पूर्वदिशा की यात्रा करनी है तो नामाद्यक्षर (ज) के अनुसार जन्मराशि मकर हुई। मकर से इष्ट दिन की वृष राशि पर्यन्त गिनने से ५ वां चन्द्रमा सिद्ध हुआ। पांचवें चन्द्रमा का फल ज्ञान की वृद्धि है। इसलिये शुक्लपक्ष में पांचवां चन्द्रमा शुभ हुआ। ऐसे ही सर्वत्र जनना ॥ ३१–३३ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विशेष

कृष्णपक्षे द्वितीयस्तु पञ्चमो नवमोऽशुभः।
कृष्णे बलवती तारा शुक्ले पक्षे बली शशी ॥३४॥

कृष्ण पक्ष में २, ५, ९ वें चन्द्र अशुभ हैं। कृष्ण पक्ष में तारा बलवती होती है और शुक्लपक्ष में चन्द्रमा बली होता है ॥ ३४ ॥

राशिवश से पूर्वादि दिशाओं में चन्द्रवास—

मेषे च सिंहे धनुषीन्द्रभागे वृषे सुतायां मकरे च याम्ये।
कुम्भे तुलायां मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीनेषु तथोत्तरस्याम् ॥

मेष सिंह धनु पूर्व चन्द्र, दक्षिण कन्या वृष मकरन्द। घट तुला मिथुन पश्चिमाधीन, उत्तर कर्कट वृश्चिक मीन ॥ ३५ ॥

चन्द्रमा का वर्ण और फल—

अलौमेषसिंहेऽरुणो युद्धकारी
सितो गोवणिक्कर्कटर्क्षेषु सिद्धिः।
धनुर्मीनयुग्मेषु पीतः शशी श्री-
र्घटस्त्रीमृगाख्येषु कृष्णो भयञ्च ॥३६॥

मेष, सिंह, वृश्चिक के चन्द्रमा अरुण (लाल) वर्ण और युद्ध कारक होते हैं, वृष, कर्क तुला में श्वेत वर्ण और सिद्धिदायक होते हैं, मिथुन, धन, मीन, में पीतवर्ण और लाभदायक होते हैं, तथा कन्या मकर, कुम्भ में कृष्णवर्ण और भयकारक होते हैं ॥३६॥

सम्मुख आदि चन्द्र का फल—

सम्मुखे चार्थलाभः स्याद्दक्षिणे सुखसम्पदः।
पृष्ठे च शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे धनक्षतिः ॥३७॥

सम्मुख चन्द्रमा में धनलाभ, दक्षिण (दहिने) भाग में सुख और सम्पत्ति, पृष्ठ दिशा के चन्द्रमा में शोक, सन्ताप, और वाम चन्द्र में धनक्षति होती है ॥ ३७ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ घात-चन्द्र-तिथि-वार-नक्षत्र—

जन्मेन्दुनन्दार्कमघाश्च मेषे वृषे शनिः पञ्चमहस्तपूर्णाः ।
स्वातिश्च युग्मे नवचन्द्रभद्राः कर्केऽनुराधाबुधयुग्मभद्राः ॥३८॥

सिंहे जया षड्रविजश्च मूलं
पूर्णाशनिर्दिक् श्रवणः स्त्रियाञ्च ।
गुरुस्त्रिरिक्ताः शतभं तुलायां
नन्दालिके रेवतिसप्तशुक्राः ॥३६॥

चापे चतुःशुक्रजयाभरण्यो
मृगेऽष्टमो रोहिणिभौमरिक्ताः ।
कुम्भेजयाद्री-गुरु-शम्भुघातो
झषे भृगुश्चान्त्यभुजङ्गपूर्णाः ॥४०॥

प्रथम चन्द्र, नन्दातिथि, रविवार मघानक्षत्र ये मेष राशि के घातक हैं। इसी प्रकार वृषराश्यादि के घात चन्द्र आदि समझना। स्पष्टार्थ—नीचे चक्र देखो—

घातक चन्द्रादि चक्र—

मे.	वृ.	मि.	क.	सि	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशि
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	घातचन्द्र
सू.	श.	चं.	बु.	श.	श	वृ.	शु.	शु.	म.	बृ.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा	अ.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.	घातनक्षत्र
१ ६ ११	५ १० १५	२ ७ १२	२ ७ १२	३ ८ १३	५ १० १५	४ ९ १४	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	३ ८ १३	५ १० १५	घाततिथि

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ स्त्रीघात चन्द्रादि चक्र।

महीनागशैलाङ्कवेदाग्नितर्काः
करासाशिवाः पाण्डवाश्चित्रभानुः।
कुरङ्गीदृशां घातचन्द्रास्त्वजादे-
र्नृनार्योः समं घाततिथ्यादिकं च ॥ ४१ ॥

मेष आदि राशिवाली स्त्रीके क्रम से १, ८, ७, ९, ४, ३, ६, २, १०, ११, ५, १२, ये घात चन्द्र होते हैं तथा तिथि, वार नक्षत्र ये पुरुष और स्त्री को समान घातक होते हैं॥ ४१॥

विशेष

तीर्थयात्राविवाहान्नप्राशनोपनयनादिषु।
सर्वमाङ्गल्यकार्येषु घातचन्द्रं न चिन्तयेत् ॥ ४२ ॥

तीर्थयात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन, आदि सर्वमंगलकार्यों में घातकचन्द्र का दोष नहीं हैं॥ ४२॥

युद्धे चैव विवादे च कुमारीपूजने तथा।
राजसेवाप्रयाणादौ घातचन्द्रं विवर्जयेत् ॥ ४३ ॥

युद्ध में, विवाद में, कुमारी पूजन में, राजसेवा में तथा यात्रादि में घातचन्द्र वर्जित है॥ ४३॥

अथ दुष्टचन्द्रादि शान्ति—

चन्द्रे शङ्खं च तारासु लवणं तण्डुलांस्तिथौ।
धान्यं दुष्टर्क्षवारे च दद्याल्लग्ने तिलांस्तथा ॥ ४४ ॥

दुष्टचन्द्र में शङ्ख * दुष्टतारा में लवण, × अशुभ तिथि में

---

* टि०—"शङ्खाभावे महत्स्वच्छं तण्डुलं वा नवं दधि"
यदि शङ्ख न हो सके तो स्वच्छ चावल, अथवा नवीन दही दान करे।

× दुष्ट तारा की शान्ति पृथक् पृथक् पहले कही गयी है, उन वस्तुओं के अभाव में लवण मात्र भी दान करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

बृहस्पतौ दधि प्राश्य शुक्रवारे यवांस्तथा ।
माषान् भुक्त्वा शनौ गच्छेत् शूलदोषोपशान्तये ॥५४॥

रविवार में घृत, सोम में दूध, मंगल में गुड़, बुध में तिल बृहस्पति में दही, शुक्र में जव, शनिवार में माष भोजन करके यात्रा करे तो शूल का दोष नहीं होता ॥ ५२–५४ ॥

अथ योगिनीवास—

पूर्वस्यां योगिनी ज्ञेया नवम्यां प्रतिपद्यपि ।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तथैव च ॥ ५५ ॥
त्रयोदश्यां च पञ्चम्यां दक्षिणस्यां शिवा स्मृता ।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैर्ऋत्यां चैव योगिनी ॥५६॥
चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च पश्चिमायां च योगिनी ।
सप्तम्यां पूर्णिमायां च वायव्यां पार्वती स्मृता ॥५७॥
दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवप्रिया ।
ऐशान्यां च तथाऽष्टम्यां दर्शे च योगिनी स्मृता ॥५८॥

प्रतिपदा और नवमी में पूर्व दिशा में, ३, ११ में अग्निकोण में, ५, १३ तिथि में दक्षिण में, १२, ४ में नैर्ऋत्यकोण में १४, ६, में पश्चिम में, पूर्णिमा, सप्तमी में वायुकोण में, १०, २ में उत्तर में और अष्टमी अमावस्या में ईशान्यकोण में योगिनी रहती है ॥ ५५–५८ ॥

अथ योगिनीफल—

सुखदा योगिनी वामे पृष्ठे वाञ्छितदायिनी ।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥५९॥

यात्रा में वाम भाग में योगिनी सुख देती है । पृष्ठभाग में वाञ्छित पदार्थ देती है । दहिने भाग में योगिनी पड़े तो धन को नाश करती है । सम्मुख भाग में पड़े तो मरण देती है ॥ ५९ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

स्वरशास्त्रानुसार योगिनी का फल—

सर्वदा दक्षिणे पृष्ठे योगिनी गमने हिता ।
वामसम्मुखयोनष्टा वायुमेव विचिन्तयेत् ॥ ६० ॥

यात्रा में दक्षिण और पृष्ठ भाग में योगिनी शुभप्रदा और वाम तथा पृष्ठ भाग में अशुभप्रदा होती है । वायु (नासिकास्वर) का फल भी इसी प्रकार समझना चाहिये ॥ ६० ॥

अथ कालवास—

शनौ शुक्रे गुरौ ज्ञे च भौमे सोमे रवौ क्रमात् ।
पूर्वादिषु दिशास्वत्र कालवासो निगद्यते ॥ ६१ ॥

शनि में पूर्व दिशा में, शुक्र में अग्निकोण में, बृहस्पति में दक्षिण, बुध में नैर्ऋत्य कोण, मंगल में पश्चिम, सोम में वायुकोण और रविवार में उत्तर दिशा में काल रहता है ॥ ६१ ॥

अथ राहुनिवास—

धनुरलिमकरार्के राहुरास्ते च पूर्वे
सघटसफरमेषे दक्षिणे दिग्विभागे ।
वृषमिथुनकुलीरे पश्चिमस्थश्च कालो
हरियुवतितुलायामुत्तरे सैंहिकेयः ॥६२॥

वृश्चिक धन मकर के सूर्य में पूर्व; कुम्भ मीन मेष के सूर्य में दक्षिण, वृष मिथुन कर्क के सूर्य में पश्चिम तथा सिंह कन्या तुला के सूय में उत्तर दिशा में राहु (काल) रहता है ॥ ६२ ॥

सम्मुखे दक्षिणे राहौ स्त्री यात्रां परिवर्जयेत् ।
गृहारम्भप्रवेशौ च सम्मुखे चैव वर्जयेत् ॥ ६३ ॥

सम्मुख दक्षिण राहु में स्त्री यात्रा न करे और गृहारम्भ, गृहप्रवेश केवल सम्मुख राहु में त्याग करे ॥ ६३ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ यात्राप्रकरण

यात्रा में शुभ नक्षत्र—

अश्विनी रेवती ज्येष्ठा पुष्यो हस्तः पुनर्वसुः ।
मैत्रं मृगशिरो मूलं यात्रायामुत्तमाः स्मृताः ॥ १ ॥

अश्विनी, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, मूल ये यात्रा में उत्तम हैं ॥ १ ॥

यात्रा में अशुभ नक्षत्र—

भरणी कृत्तिकाऽश्लेषा विशाखा चोत्तरात्रयम् ।
मघाऽऽर्द्रा चाशुभा ज्ञेयास्तथा चान्याश्च मध्यमाः ॥२॥

भरणी, कृत्तिका, श्लेषा, विशाखा, तीनों उत्तरा, मघा, आर्द्रा, ये यात्रा में अशुभ हैं। और शेष नक्षत्र मध्यम हैं ॥ २ ॥

अथ सर्वदिग्गमनार्ह नक्षत्र—

कराश्विनीचान्द्रधनिष्ठमैत्रः
पौष्णामराचार्यचतुर्भुजैश्च ।
प्रयाति सर्वां ककुभं मनस्वी
नरः कृतार्थो गृहमेति भूयः ॥३॥

हस्त, अश्विनी, मृगशिरा, धनिष्ठा, अनुराधा, रेवती, पुष्य, श्रवण इन सर्वदिग्द्वार नक्षत्रों में सब दिशाओं में जाने से मनुष्य कृतकार्य होकर सकुशल घर आता है ॥ ३ ॥

यात्रा में विहित लग्न—

कन्यायां मिथुने लग्ने मकरे च तुलाधरे ।
यात्रा चन्द्रबले कार्या शकुनश्च विचारयेत् ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

कन्या, मिथुन, मकर, तुला इन लग्नों में चन्द्रमा का बल देखकर यात्रा करे ॥ ४ ॥

यात्रा में वर्ज्य—

जन्मतारेऽष्टमे चन्द्रे संक्रान्तौ सूर्यगे विधौ ।
भद्रागण्डान्तरिक्तासु षष्ठ्यां नैव व्रजेत्क्वचित् ॥ ५ ॥
द्वादश्यामपि चाष्टम्यां न गच्छेत्प्रस्थितोऽपि सन् ।
जन्ममासे न गन्तव्यं राज्ञा विजयमिच्छता ॥ ६ ॥

जन्मतारा, अष्टम चन्द्र, संक्रान्ति दिन (उपलक्षण से मासांत और मासादि दिन) अमावस्या, भद्रा, गण्डान्त, रिक्ता और षष्ठी में कदापि यात्रा न करे, तथा द्वादशी, अष्टमी और जन्म मास में प्रस्थान करने पर भी विजय चाहने वाला यात्रा न करे ॥ ५-६ ॥

यात्रा में लग्नशुद्धि—

केन्द्रत्रिकोणद्विगताश्च सौम्या-
स्तृतीयलाभारिगताश्च पापाः ।
एवं यदि स्याद्गमने नरस्य
तदार्थसिद्धिः पुनरागमश्च ॥ ७ ॥

शुभग्रह केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोण (५।९) और २ इन स्थानों में हों और पापग्रह ३।११।६, इन स्थानों में हों तो ऐसे लग्न में यात्रा करने से अर्थसिद्धि सहित भवन में सकुशल आता है ॥ ७ ॥

अथ सर्वाङ्कज्ञान—

तिथिं वारञ्च नक्षत्रमेकीकृत्य त्रिधा पुनः ।
द्वित्रिचतुर्भिर्गुणितं रससप्ताष्टभाजितम् ॥ ८ ॥
आदिशून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये दरिद्रता ।
अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वाङ्की विजयी भवेत् ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से तिथि सङ्ख्या, रव्यादिदिन सङ्ख्या और अश्विनी से नक्षत्र संख्या जो हो सबका योग करके ३ जगह धरे और क्रम से २, ३, ४ से गुना करके ६, ७, ८ से भाग देने से प्रथम स्थान में शून्य हो तो हानि, मध्य में शून्य हो तो दरिद्रता, अन्त्य में शून्य बचे तो मृत्यु होती है और तीनों जगह अङ्क बचे तो विजयी होता है। यह शुद्ध यात्रा में विचार करना चाहिये ॥ ८—९ ॥

कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ सर्वथा यततो बुधैः ।
तत्र प्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदे पदे ॥ १० ॥

कुम्भलग्न और कुम्भ का नवांश यात्रा में अवश्य त्याग करे, क्योंकि उसमें यात्रा करने से पद पद में अर्थनाश होता है ॥१०॥

त्र्यहं क्षीरं च पञ्चाहं क्षौरं सप्तदिनं रतम् ।
वर्ज्यं यात्रादिनात्पूर्वमशक्तस्तद्दिनेऽपि च ॥ ११ ॥

यात्रा, दिन से तीन दिन पूव दूध, ५ दिन पूर्व और, सात दिन पूर्व मैथुन त्याग करे। ऐसा न हो सके तो यात्रा के दिन अवश्य त्याग करे ॥ ११ ॥

सम्मुखे दक्षिणे शुक्रे युद्धयात्रां विवर्जयेत् ।
रेवत्यादेर्मृगं यावदन्धः शुक्रो न दोषकृत् ॥ १२ ॥

सम्मुख और दक्षिण शुक्र में युद्धयात्रा न करे, परञ्च रेवती से मृगशिर पर्यन्त शुक्र अन्ध रहता है, उसमें सम्मुख शुक्र दोषकारक नहीं होता है ॥ १२ ॥

यात्रा में प्रशस्त लग्न—

दिग्द्वारभे लग्नगते प्रशस्ता
यात्रार्थदात्री जयकारिणी च ।
हानिं विनाशं रिपुतो भयं च
कुर्यात्तथादिक्प्रतिलोमलग्ने ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

दिग्द्वारं राशि ("मेष सिंह धनु पूर्वे चन्द्र" इत्यादि) लग्न में यात्रा प्रशस्त है और धन जय को देने वाली होती है। पृष्ठ लग्न में (जैसे मेष लग्न में पश्चिम दिशा जाने में) हानि धननाश और शत्रु से भय होता है ॥ १३ ॥

समयफल—

उषःकालो विना पूर्वां गोधूलिः पश्चिमां विना ।
विनोत्तरं निशीथः स्याद्याने याम्यां विनाऽभिजित् ॥१४॥

उषःकाल में पूर्वदिशा में न जाय, तथा गोधूलि में पश्चिम न जाय, दोपहर रात्रि में उत्तर न जाय और अभिजित् (दोपहर दिन) में दक्षिण न जाय ॥ १४ ॥

सम्मुखस्थः शशी हन्ति दोषं तिथिभवारजम् ।
सर्वे दोषा विनश्यन्ति मनःशुद्धिर्यदा नृणाम् ॥ १५ ॥

यदि चन्द्रमा सम्मुख रहे तो तिथि, नक्षत्र, वार सम्बन्धी सब दोष नाश हो जाता है। यदि मनःशुद्धि हो तो सब दोषों का नाश होता है ॥ १५ ॥

उपरोक्त विषय का विचार—

पुरात्पुरे यदैकस्मिन् दिने यात्राप्रवेशकौ ।
तदा तु योगिनीशूलप्रतिशुक्रान्न चिन्तयेत् ॥ १६ ॥

यदि एकही दिन में अपने स्थान से यात्रा करके गन्तव्य स्थान में पहुँच सके तो दिक्शूल, योगिनी, संमुखशुक्र आदि का विचार नहीं करना चाहिये ॥ १६ ॥

सर्वारम्भ लग्नशुद्धि—

सर्वकर्माणि कार्याणि शुभे लग्ने शुभांशके ।
त्रिलाभारिगतैः पापैः शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः ॥ १७ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शुभ राशि के लग्न में, शुभ राशि के नवांश में पापग्रह ३, ६, ११ स्थान में, तथा शुभग्रह १।४।७।१०।५।९ स्थान में हों तो सब कार्य का आरम्भ करना शुभ है ॥ १७ ॥

अथ सर्वारम्भमुहूर्त—

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते ।
चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति ॥ १८ ॥

जन्मराशि वा जन्मलग्न से उपचय (३।६।१०।११) राशि लग्न में हो और द्वादश तथा अष्टमस्थान शुद्ध (ग्रहवर्जित) हो और चन्द्रमा ३।६।१०।११ इन स्थान में हो तो सब वस्तु का आरम्भ शुभ होता है ॥ १८ ॥

अथ विवाहप्रकरण

वर कन्या की वर्षशुद्धि—

कन्याया दशमे वर्षे नवमेऽप्यष्टमेऽपि वा ।
वरस्य षोडशादूर्ध्वं विवाहो यौवने शुभः ॥ १ ॥

दसवें, नववें, आठवें वर्ष में कन्या का, और वर का १६ वर्ष के अनन्तर युवावस्था में (अर्थात् ४० वर्ष के भीतर) विवाह शुभ है ॥ १ ॥

कन्या की संज्ञा—

अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी ।
दशवर्षा च कन्या स्यादत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

आठवें वर्ष में गौरी, नवम वर्ष में रोहिणी, दशम वर्ष में कन्या कहलाती है, दश वर्ष के बाद रजस्वला कहलाती है ॥ २ ॥

गौरीं ददन्नागलोकं लभते स्वश्च रोहिणीम् ।
कन्यां ददन्मर्त्यलोकं रौरवं तु रजस्वलाम् ॥ ३ ॥

गौरी दान करने से नागलोक, रोहिणी दान करने से स्वर्गलोक, कन्या दान करने से मर्त्यलोक और रजस्वला दान करने से रौरव (नरक) पाता है ॥ ३ ॥

मतान्तर—

गुरुशुद्धिवशेन कन्यकानां
समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात् ।
रविशुद्धिवशाच्छुभो वराणा-
मुभयोश्चन्द्रविशुद्धितो विवाहः ॥ ४ ॥

६ वर्ष के ऊपर सम (८।१०) वर्ष में गुरुशुद्धि होने पर कन्या का और रविशुद्धि से वर का तथा कन्या और वर की चन्द्र-शुद्धि से विवाह शुभ होता है ॥ ४ ॥

रविशुद्धि—

जन्मराशेस्त्रिषष्ठायदशमेषु रविः शुभः ।
पश्चात् त्रयोदशांशेभ्यो द्विपञ्चनवमेष्वपि ॥ ५ ॥

जन्मराशि से ३, ६, १०, ११ वें स्थान में रवि शुभ है । यदि १३ अंश से अधिक हो जाय तो २, ५, ९ वीं राशि में भी शुभ होता है ॥ ५ ॥

चन्द्रशुद्धि—

जन्मराशेस्त्रिषष्ठाद्य-सप्तमायखसंस्थितः ।
शुभश्चन्द्रो द्विकोणस्थः शुक्ले चाऽन्यत्र निन्दितः ॥६॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

जन्मराशि से ३, ६, १, ७, ११, १० वे स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है २, और ५, ९, वें में शुक्ल पक्ष में शुभ है। ४, ८, १२ वें में अशुभ होता है॥ ६॥

गुरुशुद्धि—

वटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः।
श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयान्यत्र निन्दितः॥७॥

बालक और कन्या की जन्म राशि से २, ६, ९, ७, ११ वें स्थान में गुरु शुभ होता है। तथा १०, ६, ३, १ इनमें शान्ति करने से शुभ होता है और ४, ८ १२ इनमें अशुभ है॥ ७॥

विशेष—

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः।
अशुभोऽपि शुभो ज्ञेयो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसन्॥८॥

अपने उच्च में अपनी राशि में मित्र की राशि में अपने नवांश में गुरु रहे तो अशुभ भी शुभ होता है और नीच तथा शत्रु की राशि में रहे तो शुभ भी अशुभ होता है॥ ८॥

अथ वरवरण (तिलक मुहूर्त)—

कन्याभ्राताऽथवा विप्रो वस्त्रालङ्करणादिना।
ध्रुवपूर्वानलैः कुर्याद्वरवृत्तिं शुभे दिने॥ ९॥

कन्या के सहोदर भाई अथवा कोई ब्राह्मण वस्त्र अलंकरण आदि से शुभ दिन में ध्रुव संज्ञक, तीनों पूर्वा और कृत्तिका नक्षत्र में वर को तिलक चढ़ावे॥ ९॥

अथ कन्यावरण मुहूर्त—

विवाहोक्तैश्च नक्षत्रैः शुभे लग्ने शुभे दिने।
वस्त्रालङ्करणाद्यैश्च कन्यकावरणं शुभम्॥ १०॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विवाहोक्त नक्षत्र, शुभ दिन, शुभ लग्न में वस्त्र अलङ्कार फल पुष्प आदि से कन्यावरण शुभ होता है ॥ १० ॥

वर कन्या की कुण्डली विचार—

लग्ने व्यये चतुर्थे च सप्तमे वाष्टमे कुजः।
भर्तारं नाशयेद्भार्या भर्ता भार्यां विनाशयेत् ॥ ११ ॥

यदि लग्न, द्वादश, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम इन भावों में स्त्री की कुण्डली में मंगल हो तो स्वामी का नाश होता है और पुरुष की कुण्डली में हो तो स्त्री का नाश करता है ॥ ११ ॥

परिहार—

शनिर्भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत् ॥ १२ ॥

यदि सप्तम, लग्न, चतुर्थ, अष्टम, द्वादश इन भावों में शनैश्चर मंगल या कोई पापग्रह—हो तो भौम का दोष नहीं होता है ॥ १२ ॥

अथ मेलापक (आठ प्रकार के कुट)—

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणकूटं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥ १३ ॥

यथा—१ वर्ण, २ वश्य, ३ तारा, ४ योनि, ५ ग्रहमैत्री, ६ गणकूट, ७ राशिकूट, ८ नाड़ी ये आठ प्रकार के कूट हैं। इनमें क्रम से एक एक गुण अधिक होते हैं।

यथा—वर्ण में १, वश्य में २, तारा में ३, योनि में ४, ग्रहमैत्री में ५, गण मैत्री में ६, भकूट में ७, नाड़ी में ८ गुण होते हैं। सबका योग ३६ होता है ॥ १४ ॥

अथ वर्णज्ञान—

कर्कमीनालयो विप्राः सिंहो मेषो धनुर्नृपाः।
कन्यावृषमृगा वैश्याः शूद्रा युग्मतुलाघटाः ॥ १४ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

कर्क, मीन, वृश्चिक ये ब्राह्मण वर्ण हैं। मेष, सिंह, धनु ये क्षत्रिय। कन्या, वृष, मकर ये वैश्य और मिथुन, तुला, कुम्भ ये शूद्र वर्ण हैं ॥ १४ ॥

वर्णगुणसंख्या—

एको गुणः सदृग्वर्णे तथा वर्णोत्तमे वरे।
हीनवर्णे वरे शून्यं केऽप्याहुः सदृशे दलम् ॥ १५ ॥

वर और कन्या एक वर्ण हो अथवा कन्या से वर का वर्ण उत्तम हो तो एक गुण, हीन वर्ण वर हो तो शून्य गुण होता है। कोई समान वर्ण में आधा गुण कहते हैं ॥ १५ ॥

वर्णगुणचक्र—

वर्णज्ञानचक्र

राशि	मीन कर्क वृ.	मे. सिं. ध.	वृ. क. म.	मि. तु. कुं.
वर्ण	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.

वरवर्ण—

कन्यावर्ण	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्रा.	१	०	०	०
क्ष.	१	१	०	०
वै.	१	१	१	०
शू.	१	१	१	१

अथ वश्यज्ञान

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः
सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः।
सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं
ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ॥ १६ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

सिंहराशि को छोड़कर सब राशि नरराशि के वश्य होती हैं और जलचर राशि भक्ष्य हैं। और वृश्चिक को छोड़कर सब राशि सिंह के वश में हैं। और राशियों के वश्यावश्य को व्यवहार से समझना ॥ १६ ॥

वश्यज्ञानार्थ–द्विपदादिसंज्ञा—

वृषसिंहधनुर्मेषा मकरार्धं चतुष्पदाः ।
मृगोत्तरार्धं कुम्भश्च मीनश्चैते जलेचराः ॥ १७ ॥
नरा मिथुनकन्ये च धनुःपूर्वार्धकं तुला ।
कीटस्तु कर्कटः प्रोक्तो वृश्चिकश्च सरीसृपः ॥ १८ ॥

मेष, वृष, सिंह, धन के उत्तरार्धं और मकर के पूर्वार्धं ये चतुष्पद हैं। मकर के उत्तरार्ध, कुम्भ, मीन ये जलचर हैं। मिथुन, तुला, कन्या, धन के पूर्वार्धं ये द्विपद हैं। कर्क, कीट और वृश्चिक सरीसृप हैं ॥ १७–१८ ॥

वश्यगुणबोधक चक्र—

वरराशि—

कन्याराशि—		चतु.	द्विपद;	जल.	वन.	कीट.
	चतु.	२	१	१	॥	०
	द्विपद	१	२	१	०	०
	जल	१	॥	२	१	१
	वन.	०	०	१	२	०
	कीट.	०	०	१	०	२

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

वश्य गुणविभाग—

सख्यं वैरं च भक्ष्यं च वश्यमाहुस्त्रिधा बुधाः ।
वैरभक्ष्ये गुणाभावो द्वयोः सख्ये गुणद्वयम् ॥ १६ ॥
वश्यवैरे गुणस्त्वेको वश्यभक्षे गुणार्धकम् ।

सख्य (मैत्री), वैर, भक्ष्य, ये तीन प्रकार के वश्य कूट होते हैं। यदि वर कन्या की राशि में परस्पर वर भक्ष्य हो तो शून्य गुण और दोनों में मैत्री हो तो २ गुण, वश्य वैर हो तो १ गुण, वश्य भक्ष्य हो तो आधा (॥) गुण होता है ॥ १९ ॥

अथ ताराकूट—

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत् कन्याभं वरभादपि ॥ २० ॥
गणयेन्नवहृच्छेषे त्रीष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ।

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक और वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर पृथक् ९ का भाग देने से ७, ५, ३ बचे तो अशुभ अर्थात् १, २, ४, ६, ८, ९ बचे तो शुभ है ॥ २० ॥

तारा गुणविभाग—

एकतश्चेच्छुभा तारा परतश्चाशुभा तदा ।
सार्धश्चैको गुणो ग्राह्यस्ताराशुद्ध्या मिथस्त्रयः ॥ २१ ॥
उभयोर्न शुभा तारा तदा शून्यं समादिशेत् ।

एक से शुभ तारा दूसरे से अशुभ हो तो डेढ़ (१॥) गुण, दोनों से यदि शुभ तारा हो तो ३ गुण। यदि दोनों से अशुभ तारा हो तो ० गुण समझना ॥ २१ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

तारागुणबोधक चक्र— वरतारा संख्या—

कन्या की तारा संख्या

सं.	१	२	३	४	५	६	७	८	९.
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

अथ योनिकूट—

अश्विन्यम्बुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयो कासरः
सिंहो वस्वजपाद्भयोः समुदितो याम्यान्त्ययोः कुञ्जरः ।
मेषो देवपुरोहितानलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः
स्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चान्द्राब्जयोन्योरहिः ॥ २२ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरङ्ग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा
मार्जारोदितिसार्पयोरथ मघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः ।
व्याघ्रो द्वीशभचित्रयोरपि च गौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयो-
र्योनिः पादगयोः परस्परमहावैरं भयोन्योस्त्यजेत् ॥२३॥

अश्विनी, शतभिषा की अश्व योनि, स्वाती हस्त की महिष, धनिष्ठा पूर्वाभाद्रपदा की सिंह, भरणी रेवती की हस्ती, पुष्य कृत्तिका की मेष, श्रवण पूर्वाषाढा की वानर, उत्तराषाढा अभिजित की नकुल,मृगशिरा रोहिणी की सर्प, ज्येष्ठा अनुराधा की हरिण, मूल आर्द्रा की कुत्ता, पुनर्वसु, आश्लेषा की मार्जार, मघा, पूर्वाफाल्गुनी की मूषक, विशाखा चित्रा की व्याघ्र, उत्तराफाल्गुनी उत्तराभाद्रपदा की गौ योनि है। श्लोक के प्रति चरण में जो दो दो योनि पठित है उनमें परस्पर महावैर है, इसलिये त्याज्य है ॥ २२-२३ ॥

अथ योनिगुण विभाग—

महावैरे च वैरे च समे चैव यथाक्रमम् ।
मैत्रे चैवातिमैत्रे च खैकद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥ २४ ॥

परस्पर महावैर में ० शून्य, वैर में १, सम में २, मैत्री में ३, अति मैत्री में ४ गुण ग्रहण करना चाहिये ॥ २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

योनिगुणबोधक चक्र—

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा	मू.	गौ.	म.	व्या	मृ.	वा.	न.	सिं.
अश्व	४	२	३	२	२	२	२	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	२	२	२	३	२	२	३	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	३
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	२	२	२	३	२	४

अथ ग्रहमैत्री—

रवेः समो ज्ञो मित्राणि चन्द्रारेज्याः परावरी ।
इन्दोर्न शत्रवो मित्रे रविज्ञावितरे समाः ॥ २५ ॥
समौ कुजस्य शुक्रार्की बुधोऽरिः सुहृदः परे ।
ज्ञस्य चन्द्रो रिपुर्मित्रे शुक्रार्कावितरे समाः ॥ २६ ॥
आरार्कज्ञा गुरोर्मित्राण्यार्किर्मध्यः परावरी ।
भृगोः समावीज्यकुजौ मित्रे ज्ञार्कौ परौ रिपू ॥ २७ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शनेर्गुरुः समो मित्रे शुक्रज्ञौ शत्रवः परे ।
कश्यपोक्त्याऽनया विज्ञो ग्रहमैत्रीं विचारयेत् ॥ २८ ॥

रविके बुध सम, चन्द्रमा मङ्गल बृहस्पति मित्र, शुक्र, शनि शत्रु हैं। चन्द्रमा के शत्रु नहीं हैं, रवि बुध मित्र, मङ्गल बृहस्पति शुक्र शनि सम है। मङ्गल के शुक्र शनि सम, बुध शत्रु, चन्द्र रवि बृहस्पति मित्र हैं। बुध के चन्द्रमा शत्रु, सूर्य शुक्र मित्र, मङ्गल बृहस्पति शनि सम हैं। बृहस्पति के रवि मङ्गल बुध मित्र, शनि सम, चन्द्र शुक्र शत्रु हैं। शुक्र के मङ्गल बृहस्पति सम, बुध शनि मित्र, रवि चन्द्र शत्रु हैं। शनि के गुरु सम, बुध शुक्र मित्र, रवि चन्द्र मङ्गल शत्रु हैं। इस काश्यप मुनि की उक्ति से ग्रहमैत्री विचार करना चाहिये ॥ २५-२८॥

ग्रहमैत्री गुणविभाग—

ग्रहमैत्रं सप्तविधं गुणाः पञ्च प्रकीर्तिताः ।
तत्रैकाधिपतित्वे च मित्रत्वे गुणपञ्चकम् ॥ २९ ॥
चत्वारः सममित्रत्वे द्वयोः साम्ये त्रयो गुणाः ।
मित्रवैरे गुणश्चैकः समवैरे गुणार्द्धकम् ॥ ३० ॥
परस्परं खेटवैरे गुणं शून्यं विनिर्दिशेत् ।
असङ्गे सममित्रादौ व्येका ग्राह्या यथोदिताः ॥ ३१ ॥

ग्रहमैत्री कूट सात प्रकार के हैं और ५ गुण हैं। इनमें यदि वर कन्या की राशीश में एकाधिपत्य वा मैत्री हो तो ५ गुण, सम मित्रता हो तो ४ गुण, दोनों में समता हो तो ३ गुण, मित्र

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शत्रुत्व हो तो १ गुण, सम शत्रुता हो तो अर्ध (॥) गुण, परस्पर शत्रुता हो तो शून्य गुण होता है। मित्रादि होने पर भी यदि नीच आदि में हो तो उचित गुण में एक अल्प करके ग्रहण करना चाहिये॥

अथ ग्रहमैत्री गुणबोधक चक्र—

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सू.	५	५	५	४	५	०	०
चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
मं.	५	४	५	॥	५	३	॥
बु.	४	१	॥	५	॥	५	४
बृ.	५	४	५	॥	५	॥	३
शु.	०	॥	३	५	॥	५	५
श.	०	॥	॥	४	३	५	५

अथ गणकूट—

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहिवस्विन्द्रमूलवरुणानलतक्षराधाः।
पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि॥३२॥

मघा, श्लेषा, धनिष्ठा, मूल, शततारका, कृत्तिका, चित्रा, विशाखा ये राक्षसगण हैं। तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी, आर्द्रा

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

ये नरगण है। अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती और लघुसंज्ञक (हस्त, पुष्य, अश्विनी, अभिजित्) ये देवगण हैं ॥३२॥

अथ फल—

स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा नरदेवयोः ।
नरराक्षसयोर्मृत्युः कलहो देवरक्षसोः ॥ ३३ ॥

अपने गण में उत्तम प्रीति, देव-मनुष्य गण में मध्यम प्रीति होती है, नर-राक्षस गण में मृत्यु, और देव-राक्षस गण में कलह होता है ॥३३॥

अथ गणकूट गुणविभाग—

स्वगणे षड्गुणाः प्रोक्ताः पञ्च देवमनुष्ययोः ।
देवराक्षसयोश्चैकः शून्यं मनुजरक्षसोः ॥ ३४ ॥

स्वगण में ६ गुण, देव नर में ५, देव राक्षस में १, नर राक्षस में शून्य ० गुण होता है ॥ ३४ ॥

गुण गुणबोधक चक्र—

वर—

कन्या—	देव	नर	राक्षस
देव	६	५	१
नर	५	६	०
राक्षस	१	०	६

वर—

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

गणादि दोष परिहार—

राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयोः।
गणादिदौष्ट्येऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रप्रवर्धनः ॥ ३५ ॥

राशीश में मैत्री हो अथवा अंश के स्वामी में मैत्री हो तो गुणादि दुष्ट रहने पर भी विवाह पुत्र पौत्र को बढ़ानेवाला होता है ॥ ३५ ॥

अथ राशिकूट—

मृत्युः षट्काष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे।
द्विर्द्वादशे दरिद्रत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ ३६ ॥

वर की राशि से कन्या की राशि तक और कन्या की राशि से वर की राशि तक गिनने से ६।८ हो तो दोनों की मृत्यु, ९।५ हो तो सन्तान हानि, २।१२ हो तो दरिद्रता होती है, इससे भिन्न में शुभ होता है ॥ ३६ ॥

दुष्टभकूटपरिहार—

एकाधिपत्ये राशीशमैत्र्यां दुष्टभकूटके।
नाडीनक्षत्रशुद्धिश्चेद्विवाहः शुभदस्तदा ॥ ३७ ॥

वर और कन्या दोनों की राशि के स्वामी एक ही ग्रह हो अथवा दोनों राशीश में मैत्री हो और नाड़ी नक्षत्र शुद्ध रहे तो दुष्टभकूट में भी विवाह शुभ होता है ॥ ३७ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

राशिकूट गुणबोधक चक्र—

वर की राशि

कन्या की राशि।

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृ.	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	७
मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिं.	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कं.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुं.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

अथ नाडीकूट—

ज्येष्ठरौद्रार्यमाम्भःपतिभयुगयुगं दास्रभं चैकनाडी
पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्न्ये च मध्या।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं चापरा स्या-
द्दम्पत्योरेकनाड्यां परिणयनमसन्मध्यनाड्यां च मृत्युः ॥

ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, शतभिषा, पूर्वभाद्र, अश्विनी ये आदि नाड़ी और पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तराभाद्रा ये मध्यनाड़ी तथा स्वाती, विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, उत्तराषाढा, श्रवण, रेवती ये अन्त्यनाडी हैं। वर कन्या की एक नाड़ी में विवाह अशुभ है, मध्यनाड़ी में मृत्यु होती है ॥ ३८ ॥

नाडीबोधक चक्र—

आदि	अ	आ	पु	उ.फा.	ह	ज्ये.	मू.	श	पू
मध्य	भ	मृ	पु	पू.फा.	चि.	अ	पू	ध	उ
अन्त्य	कृ	रो	श्ले	म	स्वा	वि	उ.	श्र	रे

नाडी गुणबोधक चक्र—

वरनाड़ी

कन्या नाड़ी—	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विशेष—

नाडीदोषोऽस्ति विप्राणां वर्णदोषोऽस्ति भूभुजाम् ।
वैश्यानां गणदोषः स्यात् शूद्राणां योनिदूषणम् ॥३९॥

ब्राह्मणों को नाड़ीदोष, क्षत्रियों को वर्णदोष, वैश्यों को गणदोष, और शूद्रों को योनिदोष विशेष करके हैं ॥ ३९ ॥

परिहार—

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्या-
न्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव ।
नाडीदोषो नो गणानां न दोषो
नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥ ४० ॥

वर कन्या की एक राशि हो और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हो अथवा एक नक्षत्र हो और भिन्न २ राशि हो तो नाड़ीदोष और गणदोष नहीं होता है। तथा एक नक्षत्र में चरण के भेद होने से शुभ होता है ॥४०॥

ग्राह्य अग्राह्य गुण संख्या—

अशुभोऽष्टादशाल्पश्चेत् शुभोऽष्टादशतोऽधिकः ।
शुभोऽतिगुणयोगश्चेत्सप्तविंशतितोऽधिकः ॥ ४१ ॥

आठों कूट के गुण का योग १८ से अल्प अशुभ, और १८ से अधिक शुभ है तथा २७ से अधिक हो तो अत्यन्त शुभ है ॥ ४१ ॥

अथ वर्गकूट—

अवर्गो गरुडस्योक्तो मार्जारस्य कवर्गकः ।
सिंहस्यैव चवर्गस्तु कुक्कुरस्य टवर्गकः ॥ ४२ ॥
सर्पस्योक्तस्तवर्गस्तु पवर्गो मूषकस्य च ।
यवर्गस्तु गजस्योक्तो मेषस्य तु शवर्गकः ॥ ४३ ॥

अवर्ग के स्वामी गरुड़, कवर्ग के मार्जार, चवर्ग के सिंह, टवर्ग के कुक्कुर, तवर्ग के सर्प, पवर्ग के मूषक, यवर्ग के हरिण (मृग) शवर्ग के स्वामी मेष हैं ॥ ४२-४३ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

स्ववर्गात्पञ्चमः शत्रुश्चतुर्थो मित्रसंज्ञकः।
उदासीनस्तृतीयः स्याद्वर्गभेदस्त्रिधोदितः॥ ४४॥
स्ववर्गे परमा प्रीतिर्मित्रवर्गेऽपि तादृशी।
उदासीने प्रीतिरल्पा शत्रुवर्गे मृतिर्भवेत्॥ ४५॥

अपने से ५ वां वर्गेश शत्रु, ४ था मित्र, ३ तृतीय उदासीन (सम) होता हैं। इस प्रकार तीन भेद हैं। एक वर्ग में अत्यन्त प्रीति, मित्र वर्ग में उत्तम प्रीति, और उदासीन में थोड़ी प्रीति होती है। परस्पर शत्रुवर्ग में मृत्यु होती है॥ ४४-४५॥

वर्ग चक्र—

	वर्ग	स्वामी	मित्र	सम	शत्रु	दिशा	स्वर
अवर्ग	अ इ उ ए ओ	गरुड़	श्वान	सिंह	सर्प	पूर्व	८
कवर्ग	क ख ग घ ङ	मार्जार	सर्प	श्वान	मूषक	अग्निको	५
चवर्ग	च छ ज झ ञ	सिंह	मूषक	सर्प	मृग	दक्षिण	६
टवर्ग	ट ठ ड ढ ण	श्वान	मृग	मूषक	मेष	नैऋत्य	४
तवर्ग	त थ द ध न	सर्प	मेष	मृग	गरुड़	पश्चिम	७
पवर्ग	प फ ब भ म	मूषक	गरुड	मेष	मार्जार	वायव्य	१
यवर्ग	य र ल व	मृग	मार्जार	गरुड	सिंह	उत्तर	३
शवर्ग	श ष स ह	मेष	सिंह	मार्जार	श्वान	ईशान	२

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ विवाहमुहूर्तं—(नारदः)

रेवत्युत्तररोहिणीमृगमघामूलानुराधाकर-
स्वातीषु प्रमदातुलामिथुनके लग्ने विवाहः शुभः ।
मासाः फाल्गुनमाघमार्गशुचयो ज्येष्ठस्तथा माधवः
शस्ताः सौम्यदिनं तथैव तिथयो रिक्ताकुहूवर्जिताः ॥४६॥

रेवती तीनों उत्तरा रोहिणी मृगशिरा मघा मूल अनुराधा हस्त स्वाती इन नक्षत्रों में, कन्या तुला मिथुन लग्न में, फाल्गुन माघ मार्ग (अग्रहण) आषाढ़ ज्येष्ठ इन मासों में (शनि मंगल छोड़ कर) और शुभ दिन में रिक्ता तिथि और अमावास्या को छोड़कर और तिथियों में विवाह शुभ है ॥ ४६ ॥

विशेष—

मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगेऽपि रवौ त्रिलवे शुचेः ।
अलिमृगाजगते करपीडनं भवति कार्तिकपौषमधुष्वपि ॥

मिथुन के सूर्य (आषाढ़) में, कुम्भ के सूर्य (फाल्गुन) में, मकर के सूर्य (माघ) में, वृश्चिक के सूर्य (अग्रहण) में, वृष के सूर्य (ज्येष्ठ) में, मेष के सूर्य (वैशाख) में, विवाह शुभ है। विशेष यह है कि मिथुन के सूर्य रहने पर भी आषाढ़ के त्रिलव (अर्थात् केवल आषाढ़ शुक्ल १ से १० दशमी पर्यन्त) विवाह शुभ है; हरिशयन में विवाह वर्जित है तथा वृश्चिक, मकर, मेष वा कुम्भ के सूर्य रहें तो कार्तिक, पौष, और चैत्र में भी विवाह शुभ है ॥ ४७ ॥

विवाह में विहित—

केन्द्रे कोणे द्वितीये च तृतीये च शुभग्रहाः ।
पापास्त्रिषष्ठलाभेषु स्थिताः श्रेष्ठफलप्रदाः ॥ ४८ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विवाह लग्न से १।२।३।४।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह, तथा (३ । ६ । ११) इन स्थानों में पापग्रह शुभफलदायक होते हैं ॥ ४८ ॥

विवाह में वर्जित—

जन्ममासर्क्षवारेषु पित्रोः श्राद्धतिथौ तथा ।
ज्येष्ठापत्यस्य च ज्येष्ठे विवाहं परिवर्जयेत् ॥ ४९ ॥

जन्ममास, जन्मनक्षत्र, जन्मदिन में तथा माता, पिता के मरण दिन में तथा ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठ सन्तान का विवाह शुभ नहीं है ॥४९॥

ज्येष्ठमासो वरो ज्येष्ठस्तथा ज्येष्ठा च कन्यका ।
त्रिज्येष्ठं न शुभं प्रोक्तं मध्यं ज्येष्ठद्वयं स्मृतम् ॥ ५० ॥

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ वर, ज्येष्ठा कन्या, ये तीन ज्येष्ठ विवाह में शुभ नहीं है। दो ज्येष्ठ मध्यम है, अर्थात एक ज्येष्ठ शुभ है ॥ ५० ॥

विवाह लग्न में त्याज्य—

लग्ने व्यये शनिस्त्याज्यः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः ।
रन्ध्रे शन्यादयः पञ्च सर्वेऽस्ते च गुरुं विना ॥ ५१ ॥

लग्न और द्वादश में शनि, षष्ठ में शुक्र चन्द्र लग्नेश, अष्टम में शनि, रवि, चन्द्र, भौम, बुध, और सप्तम में बृहस्पति को छोड़कर सब ग्रह त्याज्य हैं ॥ ५१ ॥

यामार्धं च व्यतीपातं भद्रां वैधृतिकं तथा ।
वर्जयेत् सर्वकार्येषु रविदग्धं दिनत्रयम् ॥ ५२ ॥

अधपहरा, व्यतीपात योग, भद्रा करण, वैधृति योग, और सूर्य के संक्रान्ति से दूषित ३ दिन (अर्थात मासान्त, संक्रान्ति, मासादि) सर्व कार्य में त्याग करना चाहिये ॥ ५२ ॥

क्षीणेऽस्ते च गुरौ शुक्रे तथा न्यूनाधिमासके ।
गण्डान्ते च विवाहादि शुभं कर्म विवर्जयेत् ॥ ५३ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection: TN.

Digitization by eGangotri-South Center

गुरु शुक्र क्षीण हो अथवा अस्त हो तथा क्षयमास और मलमास में तथा गण्डान्त में विवाह उपनयन मुण्डन आदि शुभ कार्य न करे ॥ ५३ ॥

अथ गण्डान्तलक्षण—

ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिकायुग्मं च मूलाश्विनी
पित्र्यादौ घटिकाद्वयं निगदितं तद्भस्य गण्डान्तकम् ।
कर्काल्यण्डजभान्ततोऽर्धघटिका सिंहाश्वमेषादिगा
पूर्णान्ते घटिकात्मकं त्वशुभदं नन्दातिथेश्चादिमम् ॥५४॥

ज्येष्ठा रेवती आश्लेषा इन नक्षत्रों के अन्त्य की दो २ घड़ी, और मूल, अश्विनी, मघा इनके आदि की दो २ घड़ी नक्षत्र गण्डान्त है, और कर्क वृश्चिक मीन इनके अन्त्य की आधी घड़ी, सिंह धनु मेष के आदि की आधी घड़ी राशि गण्डान्त है। तथा पूर्णातिथि के अन्त्य की १ घड़ी, नन्दा तिथि के आदि की १ घड़ी तिथि गण्डान्त होता है ॥ ५४ ॥

विशेष—

मिथिलेतरदेशेषु क्वचिद्रिक्ता शनौ यदि ।
तदा पाणिग्रहः शस्तो मन्यते गणकोत्तमैः ॥५५॥

मिथिला से भिन्न देश में शनिवार में रिक्ता तिथि हो तो कितने स्थानों में विवाह शुभ मानते हैं ॥ ५५ ॥

इति विवाहप्रकरण ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ वधूप्रवेशप्रकरण* ।

वधूप्रवेशमुहूर्तं—

समाद्रिपञ्चाङ्कदिने विवाहाद्वधूप्रवेशोऽष्टिदिनान्तराले ।
शुभः परस्ताद्विषमाब्दमासदिनेऽक्षवर्षात्परतोयथेष्टम् ॥१॥

विवाह दिन से १६ दिन के भीतर पञ्चम सप्तम नवम तथा सम (६।८।१०।१२।१४।१६ वें) दिन में वधूप्रवेश शुभ है, १६ दिन के बाद विषममास, विषमवर्ष, विषम (१।३ इत्यादि) दिन में शुभ है + और ५ वर्ष के बाद जब इच्छा हो शुभ मुहूर्त्त में वधूप्रवेश शुभ है ॥ १ ॥

नक्षत्रादिशुद्धि—

ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले ।
वधूप्रवेशः सन् नेष्टो रिक्ताराऽर्कें बुधे परैः ॥ २ ॥

ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाती इन नक्षत्रों में वधूप्रवेश शुभ है। और रिक्ता तिथि रविवार मंगलवार में अशुभ है। कितने आचार्य के मत से बुध में भी वधूप्रवेश अशुभ है ॥ २ ॥

इति वधूप्रवेश प्रकरण ।

---

* नूतनविवाहिता कन्या के प्रथम स्वामी के गृह में प्रवेश करना वधूप्रवेश कहलाता है ॥

\+ १६ दिन के बाद १ मास के भीतर विषम दिन में, १ मास के बाद एक वर्ष के भीतर विषममास में तथा १ वर्ष के बाद विषम वर्ष में वधूप्रवेश शुभ है ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ द्विरागमनप्रकरण ।

पूषापुष्यपुनर्वसूत्तरमृगा मैत्राश्वहस्तत्रयी
रोहिण्यः श्रवणा द्विरागमविधौ मूलं धनिष्ठा तथा ।
कुम्भाजालिरविश्च वर्षमसमं त्यक्त्वा कुजार्कौ च गो-
कन्यामन्मथमीनतौलिमकरा लग्नानि यात्रातिथिः ॥१॥

रेवती, पुष्य, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, अनुराधा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, रोहिणी, श्रवण, मूल, धनिष्ठा ये नक्षत्र, कुम्भ, मेष, वृश्चिक में सूर्य हो तथा विवाह से विषम (१।३ इत्यादि) वर्ष, शनि, मंगल छोड़कर और वार, वृष, कन्या, मिथुन, मीन, तुला, मकर ये लग्न और यात्रोक्त तिथि में द्विरागमन में शुभ हैं ॥१॥

द्विरागमन में त्याज्य—

अस्तंगते भृगोः पुत्रे तथा सम्मुखमागते ।
नष्टे जीवे निरंशे वा नैव सञ्चालयेद्वधूम् ॥२॥

शुक्र अस्त हो अथवा सम्मुख हो तथा बृहस्पति अंश रहित अथवा अस्त हो तो द्विरागमन न करे ॥ २ ॥

गर्भिण्या बालकेनापि नववध्वा द्विरागमे ।
पदमेकं न गन्तव्यं शुक्रे सम्मुखदक्षिणे ॥३॥

शुक्र यदि सम्मुख वा दक्षिण हो तो गर्भिणी वा बालक के सहित अथवा नवीन वधू का द्विरागमन न करे ॥ ३ ॥

विशेष—

काश्यपेषु वशिष्ठेषु चात्रिभृग्वङ्गिरस्सु च ।
भारद्वाजेषु वात्स्येषु प्रतिशुक्रो न दुष्यति ॥४॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

काश्यप, वशिष्ठ, अत्रि, भृगु, अंगिरा, भरद्वाज, वत्स इनके गोत्रों में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं है ॥ ४ ॥

रेवत्यादि मृगान्तञ्च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥५॥

रेवती से मृगशिरा पर्य्यन्त जब तक चन्द्रमा रहते हैं तब तक शुक्र अन्ध रहता है। इनमें सम्मुख दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता है ॥५॥

अस्तेऽथवा शिशुत्वे वा वृद्धत्वे गुरुशुक्रयोः ।
शुभो द्विरागमो यावत् वर्षमेकं विवाहतः ॥६॥

गुरु शुक्र के अस्त शिशुत्व, वृद्धत्व में भी विवाह से १ वर्ष के भीतर द्विरागमन शुभ है ॥ ६ ॥

तथा च—

स्वभवनपुरप्रवेशे देशानां विभ्रमे तथोद्वाहे ।
नूतनवध्वा गमने प्रतिशुक्रो नैव दोषकृद्भवति ॥७॥

अपने भवन और नगर के प्रवेश में, देशोपद्रव में तथा नूतन वधूप्रवेश में प्रतिशुक्र (सम्मुख शुक्र) का दोष नहीं होता है ॥७॥

पुनः विशेष—

सम्मुखे दक्षिणे राहौ शुभो वध्वा द्विरागमः ।
द्विरागमगता कन्या चागता पितृवेश्मनि ॥ ८ ॥
बालिका युवती वापि ततो भर्तृगृहं प्रति ।
पदमेकं न गच्छेत्सा राहौ सम्मुखदक्षिणे ॥ ९ ॥

सम्मुख दक्षिण राहु में द्विरागमन शुभ है। द्विरागमन में पति के भवन जाकर फिर पिता के गृह में आवे तो बाला रहे या युवती सम्मुख दक्षिण राहु में स्वामी के भवन की ओर एक पद भी न चले ॥ ८-९ ॥

॥ इति द्विरागमन प्रकरण ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ संस्कारप्रकरण ।

प्रथम रजोदर्शन फल—

आद्यं रजः शुभं माघमार्गराधेषफाल्गुने ।
ज्येष्ठश्रावणयोः शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा ॥ १ ॥
श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौ सिताम्बरे ।
मध्यं च मूलादितिभे पितृमिश्रे परेष्वसत् ॥ २ ॥

माघ, मार्गशीर्ष, वैशाख, आश्विन, फाल्गुन, ज्येष्ठ, श्रावण मास, शुक्ल पक्ष, शुभ ग्रह के दिन, शुभ लग्न, दिन के समय, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मृदु क्षिप्र ध्रुव संज्ञक स्वाती नक्षत्र, और उजला वस्त्र इन सबों में स्त्रियों का प्रथम मासिक धर्म होना शुभ है। तथा मूल पुनर्वसु मघा मिश्र संज्ञक इन नक्षत्रों में मध्यम और शेष मास वारादि में अशुभ है ॥ १–२ ॥

गर्भाधान मुहूर्त—

गण्डान्तं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलान्तकं
दास्रं पौष्णमघोपरागदिवसं पातं तथा वैधृतिम् ।
पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्धं स्वपत्नीगमे
भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभम् ॥३॥

तीनों प्रकार के गण्डान्त, सप्तम तारा, जन्म तारा, मूल भरणी अश्विनी रेवती मघा और ग्रहण दिन, पात योग, वैधृति योग, माता पिता के श्राद्ध दिन तथा दिवस, परिघ योग का पूर्वार्धं, उत्पात हत नक्षत्र, जन्म राशि से अष्टम राशि लग्न में हों और पापग्रह की राशि इन सबों को अपनी स्त्री के समागम में त्याग करना चाहिये ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

तथा च—

भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्च सन्ध्याभौमार्कार्कीनाद्यरात्रीश्चतस्रः ।
गर्भाधानं त्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्राह्मस्वातीविष्णुवस्वम्बुपे सत् ॥४॥

भद्रा, षष्ठी, पर्व दिन, रिक्ता तिथि, सन्ध्या समय, मंगल, रवि, शनिवार, रजो दर्शन से चार रात्रि इन सबों को छोड़कर, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा इन नक्षत्रों में गर्भाधान शुभ है ॥ ५ ॥

गण्डान्त में जन्मनिषेध—

नक्षत्रराशिगण्डान्ते यदि जन्म भवेत्तदा ।
शान्तिः कार्या प्रयत्नेन तत्पित्रा विधिपूर्विका ॥५॥

यदि नक्षत्र राशि गण्डान्त में किसी का जन्म हो तो उसका पिता अवश्य दोष निवृत्ति के लिये विधिपूर्वक शान्ति करे ॥ ५ ॥

सीमन्त पुंसवन मुहूर्त—

जीवार्कारदिने मृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितिब्रघ्नभैः
रिक्तामार्करसाष्टवर्ज्यतिथिभिः षष्ठेऽष्टमे मासि वा ।
सीमन्तोऽथ तृतीयमासि शुभदैः केन्द्रत्रिकोणे खल-
र्लाभारित्रिषु पुंसवं शुभयुते लग्ने च पुंभांशके ॥ ६ ॥

बृहस्पति, रवि या मंगल के दिन में, मृगशिरा, पुष्य, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त, इन नक्षत्रों में, रिक्ता अमावास्या द्वादशी षष्ठी अष्टमी इन तिथियों को छोड़ कर और तिथियों में शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण में हों पापग्रह ३, ६, ११ वें स्थान में हों, शुभ तथा पुरुष राशि का नवांश लग्न में हो तो ६ वा ८ वें मास में सीमन्त, तथा तीसरे ३ मास में पुंसवन कर्म शुभ है ॥६॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri South Center

अथ जातकर्म—

पर्वरिक्तोनसद्वारे मृदुक्षिप्रचरध्रुवे ।
जन्मन्येकादशे वाऽह्नि द्वादशे जातकर्म सत् ॥७॥

पर्व, रिक्ता रहित तिथि तथा शुभ दिन में मृदु संज्ञक क्षिप्र चर ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रों में जन्म दिन में तथा ११ वें अथवा १२ वें दिन में जातकर्म शुभ है ॥७॥

शिशुविलोकन—

तृतीये मासि तुर्ये वा यात्रोक्तेऽह्न्यर्कचन्द्रयोः ।
वारे च कुलरीत्या वा शुभं शिशुविलोकनम् ॥ ८ ॥

तृतीय वा चतुर्थ महीने में यात्रा में कथित मुहूर्तों में वा रवि चन्द्रवार में अपने कुलानुसार बालक को देखना शुभ है ॥८॥

दुग्धदान—

रिक्तां भौमं परित्यज्य विष्टिं पातं सवैधृतिम् ।
मृदुध्रुवक्षिप्रभेषु स्तन्यपानं हितं शिशोः ॥९॥

रिक्ता तिथि, मङ्गलवार, भद्रा, पात, वैधृति योग इनको छोड़कर बाकी दिन और तिथि में तथा मृदु ध्रुव क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में बालक को स्तनपान कराना शुभ है ॥९॥

सूती स्नान—

व्यर्कषड्वसुरिक्तेऽह्नि कुजेऽर्केज्ये ध्रुवे करे ।
विचित्रमृदुवाताश्वे सूतिस्नानं शुभं स्मृतम् ॥१०॥

१२, ६, ८, रिक्ता इनसे भिन्न तिथियों में, मङ्गल, रवि, गुरुवार में, चित्रा को छोड़कर मृदु संज्ञक (मृगशिरा, रेवती, अनुराधा) स्वाती अश्विनी इन नक्षत्रों में सूतीस्नान शुभ है ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ नामकरण—(नारद-मनू)

सूतकान्ते नामकर्म विधेयं स्वकुलोचितम् ।
पुण्ये तिथौ मुहूर्ते वा नक्षत्रे वा गुणान्विते ॥११॥

जन्मसूतक के अन्त में (अर्थात् ब्राह्मण का ११ वें दिन, क्षत्रिय का १३ वें दिन, वैश्य का १६ वें दिन, शूद्र का ३१ वें दिन में) अपने कुलानुसार बालक का नाम धरे। वा पुण्यतिथि, पुण्य मुहूर्त, वा पुण्य नक्षत्र में नामकरण शुभ है ॥११॥

दन्तोत्पत्तिकथन—

जन्मतः पञ्चमासेषु दन्तोत्पत्तिर्न शोभना ।
शुभा षष्ठादिके ज्ञेया न सदन्तर्जनिःशुभा ॥ १२ ॥

जन्म से पाँच महीने तक दन्त निकलना शुभ नहीं है, और छठें आदि महीनों में शुभ है, तथा दन्त सहित बालक का जन्म लेना शुभ नहीं है ॥ १२ ॥

दोलारोहण-निष्क्रमण-मुहूर्त—

जन्मार्कभूपधृतिदिङ्मितवासरे स्याद्वारे शुभे मृदुलघुध्रुवभैः शिशूनाम् ।
दोलाधिरूढिरथनिष्क्रमणं चतुर्थमासेगमोक्तसमयेऽर्कमितेऽह्नि वा स्यात्

जन्म से १७, १२, १६, १८ वें दिन में शुभग्रह के वार में, मृदु, लघु, ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में बालक को दोलापर चढ़ाना शुभ है। तथा चौथे महीने में वा जन्म से १२ वें दिन में यात्रोक्त मुहूर्त में बालक को प्रथम घर से बाहर ले जाना शुभ है ॥ १३ ॥

जन्मनक्षत्र में वर्ज्य—

निष्कासनं प्राशनकर्णवेधौ क्षौरं विवादं गमनं च युद्धम् ।
श्राद्धं गृहं वा कृषिभेषजौ च न जन्मभे शस्तमुशन्ति सन्तः ॥१४॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विशेष—

नृपविप्राज्ञया यज्ञे मरणे बन्धमोक्षणे ।
प्रयागेऽखिलवारर्क्षतिथिषु क्षौरमिष्टदम् ॥ २१ ॥

राजा तथा ब्राह्मण की आज्ञा से, यज्ञ में मरणाशौच में, कैद से छूटने पर और प्रयाग में सब तिथि वार नक्षत्र में, क्षौर शुभ है ॥२१॥

निषिद्धवारादि में क्षौर कराने का मन्त्र— (श्रीपतिः)

"केशवमानर्तपुरं पाटलिपुत्रं पुरीमहीच्छत्राम् ।
दितिमदितिं च स्मरतां क्षौरविधौ भवति कल्याणम् ॥"

अथ उपनयनवर्षशुद्धि—

विप्राणां च शुभं व्रतं निगदितं वर्षेऽष्टमे पञ्चमे
शुद्धेऽर्के च गुरौ तथा क्षितिभुजां षष्ठेऽथवैकादशे ।
वैश्यानां च तथाष्टमेऽतिशुभदं वा द्वादशे वत्सरे
कालेऽथ द्विगुणे गते निगदिते गौणं तदाहुर्बुधाः ॥ २२ ॥

जन्म से वा गर्भ से-पञ्चम वा अष्टम वर्ष में ब्राह्मणों का तथा ६ ठे वा ११ वें वर्ष में क्षत्रियों का और ८ वें वा १२ वें वर्ष में वैश्यों का उपनयन शुभ है। अथवा उपरोक्त काल के दूना समय तक गुरु शुद्धि तथा रवि शुद्धि से उपनयन शुभ है; किन्तु इसको पण्डितों ने गौणपक्ष कहा है ॥ २२ ॥

उपनयन मुहूर्त—

जलभे चाश्विभे हस्तत्रये च श्रवणत्रये ।
ज्येष्ठाभाग्यमृगे पुष्ये रेवत्यां चोत्तरायणे ॥ २३ ॥
द्वितीयायां तृतीयायां पञ्चम्यां दशमीत्रये ।
रवौ सोमे गुरौ शुक्रे बुधवारे सिते दले ॥ २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

कन्यायुग्मधनुःसिंहवृषलग्नेषु सद्व्रतम् ।
सर्वारम्भोक्तलग्नादिशुद्धिमत्रापि चिन्तयेत् ॥२५॥

पूर्वाषाढा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, मृगशिरा, पुष्य इन नक्षत्रों में उत्तरायण में २, ३, ५, १०, ११, १२ इन तिथियों में, रवि सोम बुध बृहस्पति शुक्र इन वारों में, शुक्लपक्ष में कन्या मिथुन धनु सिंह वृष इन लग्नों में उपनयन शुभ है। सर्वारम्भ में जो लग्न शुद्धि कही गयी है वह उपनयन में भी विचारना चाहिये ॥२५॥

विशेष—

जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रते विद्याधिको व्रती ।
आद्यगर्भेऽपि विप्राणां क्षत्रादीनामनादिमे ॥२६॥

जन्मनक्षत्र, जन्ममास, जन्मलग्न, आदि में ब्राह्मण के प्रथम सन्तान का और क्षत्रिय वैश्य के द्वितीय आदि बालक का उपनयन होने से विद्यावान होता है ॥२६॥

अनध्याय—

पौषे माघे शुचौ ज्येष्ठे रुद्रार्कदिग्द्विसम्मिताः ।
तिथयः स्युरनध्याया व्रतबन्धे न ते शुभाः ॥२७॥

पौष की ११, माघ की १२, आषाढ की १०, ज्येष्ठ की २ ये तिथियां व्रतबन्ध में अनध्याय हैं ॥२७॥

निषेध—

कृष्णे प्रदोषेऽनध्याये शनौ निश्यपराह्णके ।
प्राक्सन्ध्यागर्जिते नेष्टो व्रतबन्धो गलग्रहे ॥२८॥

कृष्णपक्ष में, अनध्याय में, शनिवार में, रात्रि में, अपराह्न में, प्रातःकाल मेघ गर्जन हो तो तथा गलग्रह में उपनयन अशुभ है ॥२८॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

स्वाती तीनो उत्तारा श्रवण आर्द्रा अश्विनी मूल पुष्य पुनर्वसु मृगशिरा रेवती ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में शुक्ल पक्ष में शनि मंगल छोड़कर और दिन में शुभ लग्न में स्त्रियों का केशबन्धन शुभ है ॥३७॥

वस्त्रक्षालन मुहूर्त—

क्रूरपञ्चाश्विनीपुष्यवसुभे व्यार्किवित्कुजे ।
षष्ठीरिक्तोनतिथ्यां च वस्त्राणां क्षालनं शुभम् ॥ ३८॥

हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी पुष्य धनिष्ठा इन नक्षत्रों में, शनि बुध मंगल को छोड़कर अन्य वारों में तथा रिक्ता षष्ठी से भिन्न तिथियों में कपड़ा धोलाना शुभ है ॥३८॥

दन्तधावन—

रूपरामरसभूतपूर्णिमानागदर्शरविसङ्क्रमे दिने ।
श्राद्धयज्ञनियमेषु पण्डितैर्दन्तकाष्ठकरणं न कीर्तितम् ॥३९॥

१, ३, ६, १४, १५, ८, अमावास्या इन तिथियों में रवि सङ्क्राति दिन में श्राद्ध यज्ञ व्रत में काष्ठ के दतवन न करै ॥ ३९ ॥

औषधभक्षण मुहूर्त—

मृदुमूलचरक्षिप्रे व्यार्किभौमदिने शुभे ।
द्व्यङ्गलग्नेऽष्टमे शुद्धे सत्तिथौ भेषजं शुभम् ॥४०॥

मृदुसंज्ञक मूल चर क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में शनि मंगल छोड़कर और दिन में द्विस्वभाव राशि लग्न हो उसमें शुभ नक्षत्र हो और शुभ तिथि में औषध बनाना और खाना शुभ है ॥४०॥

रोगविमुक्तस्नान—

व्यन्त्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्ये-
रिक्ते तिथौ चरतनौ विकचीन्दुवारे ।
स्नानं रुजा विरहितस्य जनस्य शस्तं
हीने विधौ खलखगैर्भवकेन्द्रकोणे ॥४१॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

रेवती पुनर्वसु ध्रुव संज्ञक मघा स्वाती आश्लेषा इन से भिन्न नक्षत्रों में रिक्ता तिथियों में चर लग्न में, शुक्र और सोम को छोड़कर और दिनों में चन्द्रमा क्षीणबली हो पाप ग्रह ११ और केन्द्र त्रिकोण में हो ऐसे लग्न में रोग छूटने पर स्नान शुभ है॥ ४१ ॥

स्त्रियों के लिये शतभिषा में स्नान निषेध—

चन्द्रे शतभिषां प्राप्ते नारी न स्नानमाचरेत् ।
भ्रमात् स्नाता तदा पुष्पैः गन्धाद्यैः पूजयेत्पतिम् ॥४२॥

चन्द्रमा जिस दिन शतभिषा नक्षत्र में रहे उस दिन स्त्री स्नान न करे। कदाचित् भ्रम से स्नान करे तो गन्ध पुष्पादि से पति का पूजन करें तो दोष का नाश होता है॥ ४२ ॥

अथ गृहप्रकरण ।

तत्र वास्तुभूमिशुभाशुभ लक्षण—

पूर्वोत्तरप्लवा भूमिः सुप्रसन्ना समापि च ।
ईशप्लवा निरुच्छिष्टा प्रशस्ता वास्तुकर्मणि ॥ १ ॥
दक्षिणापरनीचा भूः सोषरा विषमापि वा ।
वृक्षच्छायासमायुक्ता वर्जनीया प्रयत्नतः ॥ २ ॥
उक्तास्योऽन्यस्वरूपा तु मध्यमा परिकीर्तिता ।
तस्यामपि वसेच्छान्त्याऽथवा देवद्विजाज्ञया ॥ ३ ॥

जो भूमि पूर्व तथा उत्तर दिशा में क्रम से नीच हो अथवा समान हो वा ईशानकोण में नीचे हो, देखने में सुन्दर मालूम हो, जहाँ से पहले कोई वास करके चला न गया हो, ऐसी भूमि वास करने में

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शुभ है। जो भूमि दक्षिण या पश्चिम दिशा में झुकी हो, ऊसर हो, या नीचा ऊँचा गढ़ा इत्यादि वाली हो, देखने से मन प्रसन्न न होता हो, जहाँ वृक्ष की छाया दिन भर रहती हो ऐसी भूमि में वास नहीं करना चाहिये। और इन दोनों से भिन्न लक्षण वाली भूमि मध्यम है, उस में भी देवादिकों की शांति करके ब्राह्मणों की आज्ञा से वास करना शुभ है॥

अथ भूमिवर्ण—

श्वेता च ब्राह्मणी भूमिः क्षत्रियारुणविग्रहा।
वैश्या पीततरा ख्याता कृष्णा शूद्राभिधीयते॥ ४॥
ब्राह्मणी ब्राह्मणस्योक्ता क्षत्रिया क्षत्रियस्य च।
वैश्या वैश्यस्य निर्दिष्टा शूद्रा शूद्रस्य शस्यते॥ ५॥

श्वेत वर्ण भूमि ब्राह्मणी, लाल वर्ण भूमि क्षत्रिया, पीले वर्ण की वैश्या (वैश्यजाति), काले वर्ण की भूमि शूद्रा कहलाती है। ब्राह्मणी भूमि ब्राह्मण को, क्षत्रिया क्षत्रिय को, वैश्या वैश्य वर्ण को, शूद्रा भूमि शूद्र को शुभ देने वाली होती है॥ ४–५॥

अथ शल्योद्धारः—

स्मृत्वेष्टदेवतां प्रश्नवचनस्याद्यमक्षरम्।
गृहीत्वा तु ततः शल्याशल्यं सम्यग्विचारयेत्॥ ६॥

इष्ट देवता को स्मरण कर के प्रश्न के आदि अक्षर से शल्य है या नहीं? है तो कहाँ है इत्यादि विचार करै॥ ६॥

अकचटतपयश-हपया वर्णाः पूर्वादि-मध्येषु।
शल्यकरा इह नान्ये शल्यगृहे निवसतां नाशः॥ ७॥

यदि प्रश्न के आदि में अ-क-च-ट-त-प य-श-ह-प-य ये वर्ण पड़े तो यथाक्रम से पूर्वादि दिशाओं में तथा हपय से मध्य में भी शल्य कहना, अन्य अक्षर पड़े तो शल्य नहीं है ऐसा कहना। शल्यवाले घर में रहने से नाश होता है॥ ७॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शल्यज्ञान—

प्रश्नाद्ये यदि 'अः' प्राच्यां नरशल्यं तदा भवेत्।
सार्द्धहस्तप्रमाणेन तच्च मानुष्यमृत्युकृत् ॥ ८ ॥
आग्नेय्यां यदि कः प्रश्ने शशशल्यं करद्वये।
राजदण्डो भवेत्तत्र भयं नैव निवर्तते ॥ ९ ॥
याम्यायां यदि चः प्रश्ने कुर्यादाकटिसंस्थितम्।
नरशल्यं गृहेशस्य मरणं चिररोगता ॥ १० ॥
नैर्ऋत्यां यदि टः प्रश्ने सार्द्धहस्तादधस्तले।
शुनोऽस्थि जायते तच्च बालानां जनयेन्मृतिम् ॥ ११ ॥
तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते।
सार्द्धहस्तमिते तत्र स्वामिनं नेच्छति ध्रुवम् ॥ १२ ॥
वायव्यां यदि पः प्रश्ने तुषाङ्गाराश्चतुःकरे।
कुर्वन्ति मित्रनाशं च दुःस्वप्नदर्शनन्तथा ॥ १३ ॥
उदीच्यां यदि यः प्रश्ने तदा शल्यं कटेरधः।
तद्गृहे निर्धनत्वं च कुबेरसदृशं यदि ॥ १४ ॥
ऐशान्यां यदि शः प्रश्ने गोशल्यं सार्धहस्ततः।
तद् गोधनानां नाशाय जायते गृहमेधिनः ॥ १५ ॥
हपया मध्यकोष्ठे च वक्षोमात्रं भवेदधः।
नृकपालमथो भस्म लोहं तत्कुलनाशकृत ॥ १६ ॥

जिस भूमि में शल्य विचार करना हो उस भूमि को नौ भाग बनावे। प्रश्न के आदि अक्षर में यदि 'अ' हो तो पूर्व भाग में डेढ हाथ नीचे मनुष्य का शल्य कहना, वह नाशकारक होता है। यदि

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

प्रश्न में ककार हो तो अग्निकोण में २ हाथ नीचे शशक (खरहा आदि) का शल्य राजदण्ड कारक होता है। प्रश्नादि में चकार हो तो दक्षिण भाग में कटि पर्यन्त नीचे मनुष्य का शल्य गृहपति को मारने और रोगी करने वाला होता है। प्रश्नादि में टकार हो तो नैऋत्य कोण में डेढ़ हाथ नीचे कुत्ते का शल्य कहना, वह बालकों का मरण कारक होता है। यदि तकार हो तो पश्चिम में बच्चों का शल्य कहना, वह गृहेश को अशुभ कारक होता है। यदि पकार हो तो वायव्य कोण में भूसा अथवा कोयला आदि कहना, वहाँ मित्र का नाश और दुःस्वप्न देखने में आता है। यदि प्रश्नादि में यकार हो तो उत्तर भाग में कमर भर नीचे शल्य कहना, वह दारिद्र्य कारक होता है। यदि प्रश्नादि में शकार हो तो ईशानकोण में गोशल्य डेढ़ हाथ नीचे कहना, वह पशुओं का नाशकारक होता है, यदि प्रश्नादि में ह-प-य अक्षर हों तो मध्य भाग में मनुष्य के कपाल वा भस्म अथवा लोह छाती प्रमाण नीचे में कहना, वह कुलनाशकारक होता है। विशेष—प, पश्चिम, और 'य' वायव्य में कहा गया है और इन दोनों अक्षर से मध्य में भी शल्य समझना ॥ ८–१६ ॥

अथ शुभाशुभभूमि परीक्षा—

हस्तमात्रं खनेत्खातं जलेनैव प्रपूरयेत् ।
पूरिते वास्तुकर्ता च गच्छेत्पदशतं पुनः ॥ १७ ॥
समागत्याम्भसां वृद्धिं दृष्ट्वा वृद्धिरनुत्तमा ।
समेऽपि स्यान्महावृद्धिः क्षये क्षयमथादिशेत् ॥ १८ ॥

जिस भूमि में वास्तु करना हो उस भूमि में एक हाथ लम्बा एक हाथ चौड़ा एक हाथ गहिरा खात बना कर उसको जल से पूरित करके वास्तुकर्ता वहाँ से एक सौ पद चल कर फिर वहाँ आवे। यदि खात में जल बढ़ जाय तो अत्यन्त वृद्धि, यदि जल न बढ़े न घटे तो भी वृद्धि देनेवाली भूमि होती है, यदि जल घट जाय तो हानि करने वाली भूमि समझना ॥ १७–१८ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ गृहसमीप में शुभ वृक्ष—

यत्र तत्र स्थिता वृक्षा बिल्वदाडिमकेसराः।
पनसो नारिकेलश्च शुभं कुर्वन्ति नित्यशः॥ १९॥
जम्बीरश्च रसालश्च रम्भाशेफालिकास्तथा।
निम्बाशोकशिरीषाश्च मल्लिकाद्याः शुभप्रदाः॥ २०॥

बेल, दाडिम, केसर, (नागकेसर, मौलसरी) कटहर, नारिकेल ये वृक्ष सर्वत्र शुभ होते हैं तथा नीबू, आम, केला, शृंगारहार, नीम, अशोक, शिरीष तथा मल्लिका ये वृक्ष भी घर के समीप में शुभ हैं॥

अथ अशुभ वृक्ष—

मालतीं चैव चम्पां च केतकीं कुन्दमेव च।
मुनिवृक्षं ब्रह्मवृक्षं वर्जयेद् गृहसन्निधौ॥ २१॥
तिन्तिलीको वटः प्लक्षः पिप्पलश्च सकोटरः।
क्षीरी च कण्टकी चैव निषिद्धास्ते महीरुहाः॥ २२॥

मालती, चम्पा, केवला, कुन्द, अगस्त्य, ब्रह्मवृक्ष, ये घर के समीप में वर्जित हैं तथा, तेतर, बड़, पाकड़, पींपर तथा खोधर वाला वृक्ष और जिसमें दूध होता हो तथा काँटा वाले जितने वृक्ष हैं, ये घर के समीप में निषिद्ध हैं॥ २१–२२॥

विशेष—

वृक्षप्रासादिनी छाया सञ्छन्नं यदि मन्दिरम्।
अचिरेणैव कालेन उद्वासो जायते ध्रुवम्॥२३॥

वृक्ष की छाया यदि सर्वदा (दिन भर) घर पर पड़ती हो तो वहाँ से शीघ्र हट कर दूसरे स्थान में जाना पड़ता है। इसलिये ऐसे स्थान में वास न करै॥२३॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

प्रथमान्तयामवर्ज्यं च द्वित्रिप्रहरसम्भवा ।
छाया वृक्षध्वजादीनां सदा दुःखप्रदायिनी ॥ २४ ॥

प्रथम और चतुर्थ प्रहर को छोड़ कर, दूसरे और तीसरे प्रहर में वृक्ष अथवा ध्वजा आदि की छाया मकान पर पड़े तो वह अशुभ होती है ॥२४॥

प्रथम गृहकर्म–(वास्तु)

तत्र वास्तु योग्य ग्राम विचार—

यद्भं द्व्यङ्कसुतेशदिङ्मितमसौ ग्रामः शुभो नामभात्
स्वं वर्गं द्विगुणं विधाय परवर्गाढ्यं गजैः शेषितम् ।
काकिण्यस्त्वनयोश्च तद्विवरतो यस्याऽधिकाः सोऽर्थदोऽ-
थ द्वारं द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनां हितं पूर्वतः ॥ २५ ॥

नाम राशि से ग्राम राशि तक गिनने से २, ९, ५, ११, १० संख्या हो तो ग्राम शुभ होता है । अथ काकिणी विचार-नाम की वर्ग संख्या को दूना करके उसमें ग्राम की वर्ग संख्या (विवाह प्रकरण के ४३-४४ श्लोकोक्त) अवर्ग से गिन कर जोड़ कर ८ का भाग देने से जो शेष बचे वह नाम की काकिणी होती है । ऐसी ही ग्राम की वर्ग संख्या को दूना कर नाम की वर्ग-संख्या जोड़ दे, उसमें ८ का भाग देने से जो शेष बचे वह ग्राम की काकिणी होती है । दोनों में जिसकी काकिणी अधिक होती है वह धन देनेवाला होता है । इसलिये ग्राम की अधिक काकिणी शुभ होती है * । द्वार विचार-ब्राह्मण वर्ण राशिवाले को पूर्व मुख, वैश्य वर्ण राशिवाले को

---

* यह रामाचार्य का मत है । नारदादि मुनि के वाक्य से स्पष्ट है कि नाम की काकिणी अधिक होने से शुभ (धनप्रद) होती है ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

दक्षिण मुख, शूद्र राशिवाले को पश्चिम मुख, क्षत्रिय राशि वाले को उत्तर मुख का द्वार शुभ है ॥२५॥

वर्ग की दिशा और शर संख्या—

अ-क-च-ट-त-प-य-शवर्गाः पूर्वादीनां दिशां ज्ञेयाः ।
तेषां वसुशररसयुगगिरिशशिगुणबाहवः क्रमादङ्काः ॥२६॥

अवर्ग पूर्व दिशा के, कवर्ग अग्नि कोण के, चवर्ग दक्षिण के, टवर्ग नैर्ऋत्य के तवर्ग पश्चिम के, पवर्ग वायुकोण के, यवर्ग उत्तर के, शवर्ग ईशान कोण के स्वामी हैं। तथा अवर्ग की शर संख्या ८, कवर्ग की ५, चवर्ग की ६, टवर्ग की ४, तवर्ग की ७, पवर्ग की १, यवर्ग की ३, शवर्ग की २, शर संख्या होती है ॥२६॥

अथ गृहदशाज्ञान (अर्थात् दिशा वश से शुभाशुभ गृह)

अवर्गादिशरैः संख्यां नामग्रामदिशामयीम् ।
नागैर्भागं समाहृत्य शेषं गृहदशा रवेः ॥२७॥
शुभानां च दशा शस्ता पापानामशुभा स्मृता ।
शनिसूर्यकुजाः पापाः गुरुज्ञेन्दुसिताः शुभाः ॥२८॥

नाम ग्राम और दिशा की वर्ग संख्याओं का योग करके उसमें ८ का भाग देने से शेष रव्यादि ग्रह की गृहदशा होती है। शुभ ग्रह की दशा शुभ, पाप ग्रह की दशा अशुभ होती है। शनि रवि मंगल ये पाप ग्रह और बुध बृहस्पति शुक्र सोम ये शुभ ग्रह हैं।

उदाहरण—विचार करना है कि—जगन्नाथ चौधरी को नेहरा मौजे में दक्षिण दिशा का घर कैसा है—तो यहाँ नाम के चवर्ग की शर संख्या ६, ग्राम के तवर्ग की शर संख्या ७, दक्षिण दिशा का चवर्ग है, उसकी शर संख्या ६ सब के योग १९ में ८ का भाग देने से ३ शेष बचा, रवि से मंगल की दशा हुई। यद्यपि मंगल पाप ग्रह है, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

सामवेदी के लिये मंगल शुभ है, इसलिये शुभ हुआ। इसी प्रकार और भी विचार करें ॥२७-२८॥

वास्तु मुहूर्त—

रोहिण्यां श्रवणत्रयेऽदितियुगे हस्तत्रये मूलके
रेवत्युत्तरफाल्गुनीन्दुतुरगे मित्रोत्तराषाढ़योः ।
शस्तं वास्तु कुजार्कवर्जितदिने गोकुम्भसिंहे झषे
कन्यायां मिथुने नभः शुचिसहोराधोर्जके फाल्गुने ॥२९॥

रोहिणी श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा मूल रेवती उत्तरफाल्गुनी मृगशिरा अश्विनी अनुराधा उत्तराषाढ़ा इन नक्षत्रों में, मंगल रवि को छोड़ कर और दिनों में, वृष मिथुन सिंह कन्या कुम्भ मीन इन लग्नों में श्रावण, आषाढ़ अगहन वैशाख कार्तिक फाल्गुन इन मासों में वास्तु (गृहारम्भ) शुभ होता है ॥२९॥

वृषवास्तुचक्रोद्धार—

सूर्याक्रान्तात्त्यजेत् सप्त, शुभान्येकादश त्वथ ।
शेषं नन्दर्क्षकं दुष्टमिति वास्तुनि कीर्तितम् ॥३०॥

सूर्य जिस नक्षत्र में रहै उससे ७ नक्षत्र त्याग करके बाद ११ नक्षत्र में गृहारंम्भ शुभ है। उसके आगे ९ नक्षत्र अशुभ हैं, यह वास्तु में अवश्य विचार करै ॥ ३० ॥

पृथ्वी शयन—

प्रद्योतनात् पञ्च नगाङ्कसूर्य-
नन्देन्दु-षड्विंशमितेषु भेषु ।
शेते मही नैव गृहं प्रकुर्यात्
तडागवापीखननं न शस्तम् ॥३१॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

सूर्य के नक्षत्र से ५ वें, ७ वें, ९ वें, १२ वें, १९ वें, २६ वें नक्षत्र में पृथ्वी शयन करती है। इसलिये इनमें मकान, पोखरा, कूआँ का खनना आरम्भ न करै ॥३१॥

राहुसम्मुखमें विशेष—

यस्यां दिशि यदा राहुस्तस्यां द्वारं न कारयेत्।
प्रवेशः सम्मुखे राहौ नैव कार्यः कदाचन ॥३२॥

जिस दिशा में जब राहु रहै उस दिशा में द्वार न बनावें और सम्मुख राहु में गृहप्रवेश न करे ॥३२॥

अथ गृहप्रवेश मुहूर्त—

आश्लेषां च विशाखया सह मघां पूर्वात्रयं याम्यभं
रिक्तां सूर्यकुजौ विहाय च कुहूं वेश्मप्रवेशः शुभः।
गोसिंहालिघटास्तथैव धवलः पक्षः प्रशस्तोऽधिको
मध्या मन्मथचापमीनवनिता मासास्तु वास्तूदिताः ॥३३॥

आश्लेषा विशाखा मघा तीनों पूर्वा भरणी नक्षत्र, रिक्ता तिथि रवि भौमवार, अमावस्या इन सबों को छोड़कर अन्य तिथि नक्षत्र वार में, वृष, सिंह वृश्चिक कुम्भ मिथुन धन मीन कन्या लग्नों में तथा वास्तु में कथित मासों में गृहप्रवेश शुभ है ॥३३॥

अथ जलाशयखनन—

चित्रयुगे करपौष्णयुगेन्दौ मित्रधनोत्तरधातृजलेशे।
पुष्यमघादितिभे शुभवारे चैषु खनेत्सलिलाशयमिष्टम् ॥३४॥

चित्रा स्वाती हस्त रेवती अश्विनी मृगशिरा अनुराधा धनिष्ठा तीनों उत्तरा रोहिणी शतभिषा पुष्य मघा पुनर्वसु इन नक्षत्रों में शुभ ग्रहों के वार में जलाशय खनवाना शुभ है ॥३४॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ देवादिप्रतिष्ठा—

प्राजेशशक्रहरिहस्तसमीरणेषु
मूलेन्दुमैत्रगुरुपौष्णशिवोत्तरेषु ।
शस्ते दिने शुभतिथौ शशिनि प्रवृद्धौ
धन्यां वदन्ति निखिलां शुभदां प्रतिष्ठाम् ॥३५॥

रोहिणी ज्येष्ठा श्रवण हस्त स्वाती मूल मृगशिरा अनुराधा पुष्य रेवती आर्द्रा तीनों उत्तरा, इन नक्षत्रों में शुभ ग्रह के दिन में शुभ तिथि में शुक्ल पक्ष में देवादि की प्रतिष्ठा शुभ है ॥३५॥

विशेष—

गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठा परिणयदहनाधानगेहप्रवेशा-
श्चौलं राजाभिषेको व्रतमपि शुभदं नैव याम्यायने स्यात् ।
नो वा बाल्यास्तवार्द्धे सुरगुरुसितयोर्नैव केतूदये स्यात्
न्यूने मासेऽधिके वा नहि च सुरगुरौ सिंहनक्रस्थिते वा ॥३६॥

देवता, तड़ाग आदि की प्रतिष्ठा, विवाह, अग्निहोत्र, गृहप्रवेश चूडाकरण, राजाभिषेक उपनयन ये कर्म दक्षिणायन, बृहस्पति शुक्र के अस्त बाल्य वार्धक, केतु का उदय, क्षयमास, अधिमास तथा सिंह मकरस्थ बृहस्पति इनमें न करना चाहिये ॥३६॥

पाकारम्भ चुल्हिकास्थापन—

गृहप्रवेशवारादौ पाकारम्भोऽपि शस्यते ।
तत्रैव रविवारेऽपि चुल्हिकास्थापनं शुभम् ॥३७॥

गृहप्रवेश में कहे हुए दिनादि में प्रथम पाकारम्भ करना शुभ है। तथा गृहप्रवेश मुहूर्त और रविवार में भी चुल्ही का स्थापन शुभ है ॥३७॥

मार्जनीबन्धन—

श्रवणादीनि षड् भानि त्यक्त्वाऽर्कशनिमङ्गलान् ।
विरिक्तसङ्क्रमे वारे मार्जनीबन्धनं शुभम् ॥ ३८ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

श्रवणादि ६ नक्षत्र रवि शनि मङ्गल वार रिक्ता तिथि सङ्क्रान्ति दिन उपलक्षण से मासान्त और मासादि इन सबों को छोड़ कर दूसरे दिन में बढ़नी (झाडू) बाँधना शुभ है ॥ ३८ ॥

अथ कृषि-प्रकरण

तत्र हल और बीजवपनमुहूर्त—

'षष्ठीं चैवाष्टमीं रिक्तां त्यक्त्वार्कशनिमङ्गलान् ।
मूल-द्वी-श-मघाक्षि-प्रचरध्रुवमृदूडुषु ॥ १ ॥
मीनयुग्मालिगोकन्याधनुर्लग्ने हलक्रिया ।
बीजोप्तिश्च शुभे तेषु द्वीशश्रुत्यम्बुपान् विना' ॥ २ ॥

षष्ठी अष्टमी रिक्ता तिथि, रवि शनि मङ्गलवार इन सबों को छोड़कर अन्य तिथि और दिन में मूल विशाखा मघा क्षिप्र चर ध्रुव मृदु संज्ञक नक्षत्रों में, मिथुन वृश्चिक वृष कन्या धनु लग्न में, हल क्रिया (प्रथम हल जोतवाना) शुभ है। और विशाखा श्रवण शतभिषा इन नक्षत्रों को छोड़कर उपरोक्त मुहूर्तों में बीजवापन शुभ है ॥ १-२ ॥

सस्यरोपण-छेदन—

बीजोप्तितिथिवारर्क्षलग्नेष्वेव शुभं स्मृतम् ।
रोपणं सर्वसस्यानां छेदनं प्रथमं तथा ॥ ३ ॥

बीजोप्ति तिथिवारादि में सब प्रकार के धान्यका रोपण और छेदन शुभ है ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

खल (खरिहान) स्थान—

पुरासन्ने प्रसन्नायां भूमौ कुर्यात् खलं शुभम् ।
तत्र स्थाप्यानि सस्यानि मर्दनार्थं शुभे दिने ॥ ४ ॥

ग्राम के समीप में प्रसन्न भूमि में कणमर्दन करने के लिये खरिहान बनावे । और वहाँ मर्दन (दौनी) करने के लिये धान्य स्थापन करे ॥ ४ ॥

अथ मेधि (मेह) स्थापन—

वटोदुम्बरनीपानां शाखोटबदरस्य च ।
शाल्मलेर्मुशलेनैव मेधिं कुर्याद् विचक्षणः ॥ ५ ॥
कपित्थबिल्ववंशानां मेधिर्नैव शुभावहः ।
न पौषे न च रिक्तायां न कुजार्किदिने तथा ॥ ६ ॥
मृदुक्षिप्रचरर्क्षेषु खाते द्रव्यं नियुज्य च ।
सम्पूज्य धान्यबद्धाग्रं मेधिं संस्थापयेद् बुधः ॥ ७ ॥

बड़, गूलर, कदम्ब, साहोर, बैर, सेमर इनका (मेधी) मेंह बनाना चाहिये, और कैथ, बेल बाँस का मेह शुभ नहीं होता है। तथा पौष, रिक्ता, मङ्गल शनि इनको छोड़ कर बाकी तिथि दिन में और मृदु क्षिप्र चर संज्ञक नक्षत्र में खात खन करके उसमें कुछ द्रव्य देकर पूजन करके मेधी के अग्र में धान्य बाँध कर स्थापन करे ॥ ५–७ ॥

धान्यमर्दन—

भाग्येर्यम्णे श्रुतौ मूले ब्राह्ममैत्रमघासु च ।
पौष्णेन्द्रयोः शुभे वारे शुभं स्याद्धान्यमर्दनम् ॥ ८ ॥

पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी श्रवण मूल रोहिणी अनुराधा मघा रेवती ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में शनि मङ्गल को छोड़ कर अन्य दिनों में धान्य मर्दन शुभ है ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

बीजरक्षण—

अजपादान्त्यमूलेन्दुवातहस्तमघासु च।
विश्वब्राह्मे स्थिरे लग्ने बीजं स्थाप्यं शुभे दिने ॥ ९ ॥

पूर्वाभाद्रपदा रेवती मूल मृगशिरा स्वाती हस्त मघा उत्तराषाढ़ा रोहिणी इन नक्षत्रों में स्थिर लग्न में शुभ दिन में धान्यादिक बीज-धारण करना चाहिये ॥ ९ ॥

गृहादि में धान्यादिस्थापन–धान्यवृद्धि—

मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषु
कर्काजतौलिरहिते च तनौ शुभाहे।
धान्यस्थितिः शुभकरी गदिता ध्रुवेज्य–
द्वीशेन्द्रदस्रचरभेषु च धान्यवृद्धिः ॥ १० ॥

मिश्र उग्र संज्ञक, आर्द्रा श्लेषा ज्येष्ठा इनसे भिन्न नक्षत्रों में कर्क मेष तुला से भिन्न लग्नों में शुभ ग्रह के दिन में घर वा बखाड़ी में धान्य आदि रखना शुभ है। और ध्रुव संज्ञक पुष्य विशाखा ज्येष्ठा अश्विनी चरसंज्ञक इन नक्षत्रों में वृद्धि के लिये अन्न सवाया लगाना शुभ है ॥ १० ॥

अथ अर्घ [अन्नमूल्य] विचार—

समं मृदुक्षिप्रवसुश्रवोऽग्नि-मघात्रिपूर्वास्त्रपभं बृहत्स्यात्।
ध्रुवद्विदैवादितिभं जघन्यं सार्पाम्बुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यम् ॥११॥

मृदु संज्ञक, क्षिप्र संज्ञक धनिष्ठा श्रवण कृत्तिका मघा तीनों पूर्वा मूल ये सम संज्ञक नक्षत्र हैं। और ध्रुव संज्ञक, विशाखा पुनर्वसु ये बृहत्संज्ञक हैं। तथा श्लेषा शतभिषा आर्द्रा स्वाती ज्येष्ठा भरणी ये जघन्य संज्ञक हैं ॥ ११ ॥

जघन्येऽर्कस्य संक्रान्तिस्तदान्नस्य महर्घता।
बृहत्संज्ञे समर्घत्वं समत्वं समसंज्ञके ॥ १२ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

जघन्य नक्षत्रों में रवि की संक्रान्ति हो तो अन्न की महँगी (तेजी) होती है। बृहत्संज्ञक नक्षत्र में संक्रांति हो तो सस्ती (मन्दी) होती है। सम नक्षत्र में संक्रांति हो तो उस महीने में अन्न का भाव समान रहता है ॥ १२ ॥

संक्रान्ति में पुण्यकाल—

सूर्यसंक्रान्तितः पूर्वं पश्चात् षोडश षोडश।
नाडिकाः पुण्यदास्तत्र स्नानं दानं समाचरेत् ॥ १३ ॥

सूर्य के संक्रान्तिकाल से पूर्व और पश्चात् १६, १६, घड़ी पुण्य-काल होता है। उसमें स्नान दान करने से विशेष फल होता है ॥१३॥

विशेष—

रात्रिपूर्वार्धकेऽर्कस्य संक्रान्तिर्यदि जायते।
तदा पूर्वदिनस्यैव पराह्णे पुण्यनाडिकाः ॥ १४ ॥
उत्तरार्धेऽग्रिमस्योक्ताः पूर्वाह्णे पुण्यनाडिकाः।
निशीथे यदि संक्रान्तिस्तदा पुण्यं दिनद्वयम् ॥ १५ ॥

रात्रि के पूर्वार्ध में रवि संक्रान्ति हो तो पूर्व दिनके पराह में पुण्यकाल होता है। यदि रात्रि उत्तरार्ध में संक्रान्ति हो तो अग्रिम दिन के पूर्वभाग में पुण्यकाल होता है। यदि ठीक मध्यरात्रि में संक्रान्ति हो तो पूर्व और पर दोनों दिन पुण्यकाल होता है ॥ १४-१५ ॥

अथ क्रयविक्रय—

यमाहिशक्राग्निहुताशपूर्वा नेष्टाः क्रये विक्रयणे तु शस्ताः।
पौष्णाश्विचित्राशतविष्णुवाताः क्रये हिता विक्रयणे निषिद्धाः ॥१६॥

भरणी श्लेषा विशाखा कृत्तिका तीनों पूर्वा क्रय (खरीद) करने में अशुभ और विक्रय (बेचने) में शुभ है। तथा रेवती अश्विनी चित्रा श्रवण स्वाती ये क्रय में शुभ और विक्रय में अशुभ हैं ॥ १६ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ द्रव्यप्रयोग—

ऋणं ग्राह्यं न संक्रान्तौ करे वृद्धौ कुजे रवौ।
न देयं ज्ञे ध्रुवे मिश्रे तीक्ष्णोग्रे विष्टिपातयोः॥ १७॥

रवि कुजवार संक्रान्ति दिन हस्त नक्षत्र वृद्धि योग इनमें ऋण न ग्रहण करै। बुधवार ध्रुव मिश्र तीक्ष्ण उग्र संज्ञक नक्षत्र और भद्रा, पातयोग इनमें ऋण न लगावे॥ १७॥

अथ नवान्नभक्षण मुहूर्त—

वृश्चिकेऽर्के च पूर्वार्धे मृगकुम्भस्थिते रवौ।
सत्तिथौ शुक्लपक्षे च पञ्चम्यन्ते सितेतरे॥ १८॥
मृदुक्षिप्रचरर्क्षेषु सत्तनौ सत्क्षणेषु च।
हुत्वा वह्नौ विधानेन नवान्नं भक्षयेत्सुधीः॥ १९॥

वृश्चिक के सूर्य में १५ अंश पर्यन्त तथा मकर कुम्भ के सूर्य (माघ फाल्गुन) में शुभ तिथि में शुक्ल पक्ष में तथा पञ्चमी पर्यन्त कृष्ण पक्ष में भी मृदु क्षिप्र चर संज्ञक नक्षत्रों में अग्नि में विधि पूर्वक हवन करके नवान्न भक्षण करना चाहिये॥१८-१९॥

निषेध—

तुलाचापद्विदैवार्के चैत्रं नन्दां त्रयोदशीम्।
जन्मर्क्षं शयनं विष्णोः शनिशुक्रकुजान् विना॥ २०॥

तुला धनु विशाखा इनमें स्थित रवि, चैत्र मास, नन्दा त्रयोदशी तिथि, जन्मतारा हरिशयन शनि मङ्गल शुक्रवार इनको छोड़कर नवान्न भक्षण शुभ है॥ २०॥

होमाहुति मुहूर्त—

सैकातिथिर्वारयुता कृताप्ता
शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे
प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥ २१ ॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से तिथि सङ्ख्या गिनकर १ जोड़ दे, फिर उसमें रव्यादिक वार सङ्ख्या जोड़कर ४ से भाग देने से ०, ३ शेष बचे तो पृथ्वी में अग्नि का वास रहता है उसमें होम करने से सुख होता है। और १, २ शेष बचे तो क्रम से आकाश और पातल में अग्निवास रहता है, उसमें होम करने से प्राण और धन का नाश होता है॥

अथ महारुद्रादौ शिववासफलम्

तिथिं च द्विगुणीकृत्य बाणैः संयोजयेत्ततः।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत् ॥ २२॥
एकेन वासः कैलासे द्वितीये गौरिसन्निधौ।
तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुष्टये ॥ २३॥
पञ्चके भोजने चैव क्रीडायां षण्मिते तथा।
श्मशाने सप्तशेषे च शिववास इतीरितः ॥ २४ ॥
कैलासे लभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदः।
वृषभेऽभीष्टसिद्धिः स्यात् सभा सन्तापकारिणी॥ २५॥
भोजने च भवेत् पीडा क्रीडायां कष्टमेव च।
श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेवं विचारयेत् ॥ २६॥

स्पष्टार्थं—

शिववास शुभ तिथिचक्र—

शुक्लपक्ष–तिथि	२, ५, ६, ८, ९, १२, १३, १४,
कृष्णपक्ष–तिथि	१, ४, ५, ८, ११, १२, ३०,

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ पशुपालन—

लग्ने शुभे चाष्टमशुद्धिसंयुते रक्षा पशूनां निजयोनिभे चरे ।
रिक्ताष्टमीदर्शकुजश्रवोध्रुवत्वाष्ट्रेषु यानं स्थितिवेशनं न सत् ॥२७॥

अष्टम शुद्धि सहित शुभ लग्न में अपने योनि नक्षत्र (विवाह प्रकरणोक्त) में रिक्ता अष्टमी अमावस्यां मङ्गल शनि श्रवण ध्रुव संज्ञक चित्रा इनको छोड़कर बाकी तिथि नक्षत्रों में पशु की रक्षा (पालन) करना शुभ है ॥ २७ ॥

गजाश्वारोहणादि—

क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्तारदिने प्रशस्तम् ।
स्याद्वाजिकृत्यं त्वथ हस्तिकार्यं कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् ॥२८॥

क्षिप्र संज्ञक रेवती धनिष्ठा मृगशिरा स्वाती पूर्वाषाढ़ा पूनर्वसु नक्षत्रों में, रिक्ता मङ्गल को छोड़कर बाकी तिथि दिन में घोड़ा के सम्बन्धी सब कार्य शुभ हैं । मृदु क्षिप्र चर संज्ञक नक्षत्रों में, हस्ति (हाथी) सम्बन्धी कार्य करे ॥ २८ ॥

अथ वृक्षादिरोपण —

शुक्लपक्षे तिथौ शस्ते शुक्रज्ञेन्दुगुरौ दिने ।
तरूणां रोपणं शस्तं मृदुक्षिप्रध्रुवोडुभिः ॥ २९ ॥

शुक्ल पक्ष में, शुभ तिथि में, शुक्र बुध सोम गुरुवार में मृदु क्षिप्र ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में वृक्षादिरोपण शुभ है ॥ २९ ॥

कदलीरोपणे विशेषः—

श्रवणादीनि षड् भद्रां भाद्रसूर्यकुजार्कजान् ।
यन्तश्य:ञतिथींस्त्यक्त्वा कदलीरोपणं शुभम् ॥३०॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

०	श्रीः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०		२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
७	रा. ० मे.	४९	५६	४	११	१८	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२३	३१	४०
२२		२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२
०		६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९
८	रा. १ वृ	५४	३	११	२०	२८	३७	४५	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४
२६		५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६
०		११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
१०	रा. २ मि.	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७
८		४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८
०		१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०
११	रा. ३ क.	२०	३१	४	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०
२४		१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
०		२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५
११	रा. ४ सिं.	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३२	४३
३०		२३	०	३०	०	३०	०	३०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०
०		२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१
११	रा. ५ क.	४१	५३	४	१५	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४४	५५	७	१८
१०		५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०
०		३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६
११	रा. ६ तु.	१६	२८	३९	५०	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५
१०		१५	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
०		३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२
११	रा. ७ वृ.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४२	५४	५	१७	२८	३९
३०		३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८
०		४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८
११	रा. ८ ध.	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
२४		१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६
०		५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३
१०	रा. ९ म.	५५	५	१५	२५	३५	४५	५५	६	१४	२२	३१	३९	४८	५६	५
८		४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२
०		५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७
८	रा. १०कुं.	१९	२८	३६	४५	५३	२	१०	१९	२६	३३	४१	४८	५५	३	१०
२६		५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४
०		५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०
७	रा. ११ मी.	८	१५	२३	३०	३७	४५	५२	०	७	१४	२२	२९	३६	४४	५१
२२		२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

०	श्रीः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०		४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
७	रा. ० मे.	४८	५६	५	१३	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२१	२९	३८	४६
२२		२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
०		९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
८	रा. १ वृ.	१५	२५	३५	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
२६		४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६
०		१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
१०	रा. २ मि.	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	८
८		१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८
०		२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
११	रा. ३ क.	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३
२४		०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
०		२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
११	रा. ४ सिं.	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०
३०		२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०
०		३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
११	रा. ५ क.	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५
१०		२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०
०		३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
११	रा. ६ तु.	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८
१०		०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
०		४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
११	रा. ७ वृ	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०
३०		१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८
०		४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
११	रा. ८ ध.	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४
२४		४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६
०		५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
१०	रा. ९ म.	१३	२१	३०	३८	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४६	५४	३	११
८		२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
०		५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
८	रा. १० कुं.	१७	२५	३२	४०	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३८	४६	५३	१
२६		५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
०		०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
७	रा. ११ मी.	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५०	५७	५	१२	९	२७	३४	४२
२२		५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ जन्मपत्र लिखने की रीति—

आदित्यादिग्रहाः सर्वे नक्षत्राणि च राशयः ।
दीर्घमायुः प्रकुर्वन्तु यदीया जन्मपत्रिका ॥

शुभश्रीमन्नृपतिवीरविक्रमादित्यराजसमयात्संवत्सराः १९८२, शालिवाहनशकाब्दाः १८४७ मासोत्तमे वैशाखमासे शुक्लपक्षे तृतीया दं० १०।०, रोहिणीनक्षत्रे दण्डादि ३२।४४, शोभनयोगे दण्डादि ३३।५२ गरकरणे दण्डादि १०।० रविवासरे श्रीसूर्यभुक्तमेषांशाः ॥१३॥ एवं पञ्चाङ्गशुद्धौ दिनमानम् ३२।१६ रात्रिमानम् २७।४४ अहोरात्रमानम् ६० मिश्रमानम् ४३।५२ श्रीमन्मार्तण्डमण्डलार्धोदयादिष्टम् ४।५, एतस्मिन् समये वृषलग्ने अमुकगोत्रोद्भवामुकशर्मणः स्वेष्टदेवताप्रसादादुभयकुलानन्दकरः श्रीमान् प्रथमः पुत्रो जातः। तदेतस्य शतपदचक्रानुसारेण रोहिणीनक्षत्रस्य तृतीयचरणे जन्म, तेन, इकारस्वरयुक्तवकाराद्यक्षरं नाम बोध्यम् । जातकोऽयं वृषराशिः, वैश्यवर्णः, सर्पयोनिः, देवगणः, अन्त्यनाडीकः एतेषां विवाहादौ विचारः कर्तव्यः । अत्र भयातम् ३६।२० भभोगः ६४।५९।

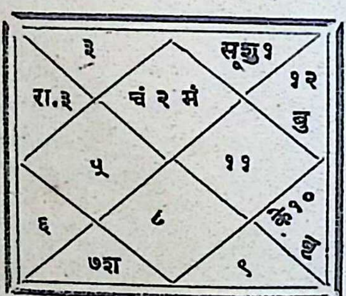

शुभं भूयात् ।

पुरुष स्त्री की कुण्डली जानने की रीति—

लग्नात्समे शनौ स्त्री च विषमे पुरुषः स्मृतः ।
न चेदेवं तदा ज्ञेया खिला सा जन्मपत्रिका ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

लग्न से समभवन में शनि हो तो स्त्री, विषम भवन में हो तो पुरुष समझना। ऐसा न हो तो कुण्डली में लग्न अशुद्ध है, ऐसा कहना॥

अथवा—

लग्नाऽग्वर्ककुजाक्रान्तराशिसङ्ख्याश्च पिण्डयेत्।
त्रिभिर्विभज्य शेषाङ्के समे स्त्री विषमे पुमान्॥१॥

लग्न, राहु, सूर्य, मङ्गल ये जिन २ राशियों में हों सब की सङ्ख्या को जोड़कर तीन का भाग देने से शेष सम बचे तो स्त्री, विषम बचे तो पुरुष समझना चाहिये। दोनों प्रकार से एक मिले तब तो ठीक समझना नहीं तो शनि बलवान् हो तो प्रथम प्रकार से, और लग्नेश बलवान् हो तो द्वितीय प्रकार से जो आवे सो कहना॥

जीवित मृत की कुण्डली जानने का नियम—

प्रश्नलग्नर्क्षसङ्ख्या या जन्मलग्नर्क्षसङ्ख्यया।
जन्मलग्नाष्टमर्क्षस्य सङ्ख्यया च समन्विता॥२॥
साष्टमेशाश्रयर्क्षघ्ना लग्नेशाश्रयसङ्ख्यया।
भाजिता विषमे शेषे जीवितोऽथ समे मृतः॥३॥

जन्मलग्न और जन्मलग्न से अष्टम भाव की राशि संख्या में प्रश्न लग्न की राशि संख्या जोड़कर योगफल को अष्टमेश जिस राशि में बैठा हो उस राशि की संख्या से गुनाकर उसमें लग्नेश जिस राशि में हो उसकी संख्या से भाग देने से विषम शेष बचे तो जीवित की और सम शेष बचे तो मृत की कुण्डली समझना॥

अथ अयनांशानयन—

एकद्विवेदोनशका नवघ्ना
दिग्भिर्हृताश्चायनलिप्तिकाः स्युः।
लब्धीकृतोऽर्कस्त्रिगुणोनखाप्त-
स्तावन्मिताभिर्विकलाभिराढ्याः॥४॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

इष्ट शाके में ४२१ घटा कर शेष को ९ से गुणा करके दश का भाग देने से लब्धि अयन कला होती है। कला शेष को साठ से गुणा कर फिर १० का भाग देने से विकला होती है। फिर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य को अंशात्मक बना कर उसको ३ से गुणा करके बीस से भाग देने से लब्धि विकला को पूर्वानीत अयन कलादि के विकला स्थान में जोड़ कर इष्टकालिक अयनकला होती है। उसमें ६० का भाग देने से अयनांश होता है।

उदाहरण शाके १८५२ मर्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदशी में स्पष्ट सूर्य ८।१८।५।१५ यहां अयनांश बनाना है। उपरोक्त रीति से शाके १८५२ में ४२१ घटाया शेष १४३१ को ९ से गुणा किया, १२८७९ इस में १० का भाग देने से लब्धि अयन कला १२८७ शेष ९ को ६० से गुणा कर १० का भाग देने से अयन विकला ५४। पूर्व लब्धि कला में ६० का भाग देकर वर्षारम्भ में अयनांश २१।२७।५४ हुआ। फिर स्पष्ट सूर्य के अंश २५८ को ३ से गुणा करने से ७७४ हुआ, इसमें २० का भाग देकर लब्ध विकला ३८ वर्षारम्भ कालिक अयनांश की विकला में जोड़ने से इष्टकालिक अयनांश २१।२८।३२ हुआ॥

अथ इष्टकाल में स्पष्टग्रहानयनप्रकार—

पंक्त्याः स्वेष्टो भवेदग्रे पंक्तिमिष्टाद्विशोधयेत् ।
तच्चालनं धनं ज्ञेयं व्यत्ययाद् व्यत्ययं तथा ॥ ५ ॥
धनर्णचालनेनैवं गतिर्निघ्नी खषड्हृता ।
लब्धांशाद्यं क्रमाद्योज्यं शोध्यमिष्टग्रहो भवेत् ॥ ६ ॥
विलोमगमनादत्र राहौ कुर्याद्विपर्ययम् ।
तथा वक्रगतौ खेटे चालनस्य विधिस्त्वयम् ॥ ७ ॥

पंचांग में जिस दिन जिस समय का ग्रह बना रहता है वह समय पंक्ति कहलाता है। अब जिस पंक्ति के समीप में अपना इष्टकाल

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

पड़ता हो उस पंक्ति से यदि इष्टकाल आगे हो तो पंक्ति को इष्टकाल में घटावे तो शेष दिनादि धन चालन होता है। यदि पंक्ति से पीछे (पहिले) इष्टकाल हो तो इष्टकाल के दिनादि को पंक्ति के दिनादि में घटावे तो शेष दिनादि ऋण चालन होता है। धन चालन से ग्रह की गति को गोमूत्रिका गुणन विधि से गुणा करे, फिर उस में ६० के भाग देने से अंशादि फल को पंक्ति स्थित ग्रह में जोड़ने से तात्कालिक स्पष्ट ग्रह होता है। इसी प्रकार ऋण चालन पर से अंशादि फल को पंक्ति के ग्रह में घटाने से तात्कालिक ग्रह होता है। राहु केतु और वक्रगति ग्रह में संस्कार उलटा होता है। (अर्थात् धन चालन में घटाने से और ऋण चालन में जोड़ने से तात्कालिक होता है)।

उदाहरण—जैसे पंक्ति फाल्गुन शुक्ल १० शुक्रवार मिश्रमान काल ४४।१४ में स्पष्ट सूर्य १०।१५।२४।१४ गति ६०।२१ है। और फा॰ शु. ८ बुध इष्ट काल ४१।१२ में स्पष्ट सूर्य बनाना है तो पंक्ति के वारादि ६।४४।१४ में इष्ट वारादि ४।४१।१२ को घटाने से २।३।२ दिनादि ऋण-चालन हुआ। इससे गोमूत्रिका विधि से सूर्यगति ६०।२१ को गुणा किया तो—

(६०।२१) × २ = १२०।४२

(६०।२१) × ३ = १८०।६३

(६०।२१) × २ = १२०।४२

गुणनफल का योग—१२०।२२२।१८३।४२

साठ ६० से भाग चढ़ाने से—२।३।४५।४* = २।३।४५ अंशादि फल ऋण चालन होने के कारण पंक्तिस्थ स्पष्ट सूर्य १०।१५।२४।१४ में घटाने से १०।१३।२०।२९ स्पष्ट सूर्य हुआ। इसी प्रकार सब ग्रह का साधन करना ॥

---

* प्रतिविकला ३० से अधिक होने से विकला स्थान में १ अधिक बना दिया जाता है। ३० से कम हो तो छोड़ दिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

स्पष्टचन्द्रसाधनार्थं भयातभभोगानयन—

गतर्क्षनाडी खरसेषु शुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता ।
भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाडीसहितो भभोगः ॥८॥

इष्टकाल में नक्षत्र की गतघटी भयात कहलाता है और नक्षत्र की सम्पूर्ण भोग घटी भभोग कहलाता है। गत नक्षत्र की घटी जो पञ्चाङ्ग में लिखी हो उसको ६० में घटाकर शेष में सूर्योदय से इष्टकाल को जोड़ देने से भयात होता है और उसी शेष में वर्तमान नक्षत्र की घटी को (जो पंचांग में लिखी रहती है उसको) जोड़ने से भभोग होता है। विशेष-इष्टदिन में नक्षत्र की घटी और पल जो पंचांग में हो उससे यदि इष्टकाल अधिक हो तो वही नक्षत्र गतर्क्ष होता है, वहाँ उसी नक्षत्र की घटी और पल को इष्टकाल के घटी पल में घटाने से भयात होता है। भभोग पूर्ववत् होता है ॥८॥

तात्कालिक चन्द्रमा का साधन—

खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत्
खतर्कघ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम् ।
नवाप्तं शशी भागपूर्वस्तु भुक्तिः
खखाभ्राष्टवेदा भभोगेन भक्ताः ॥९॥

भयात को एकजातीय (पल बना) करके उसको ६० से गुणा करे, उसमें भभोग के (एकजातीय अर्थात् घटी को ६० से गुणा कर पल जोड़ के) भाग देकर लब्धि को गत नक्षत्र की संख्या को ६० से गुणा करके जो हो उसमें जोड़े, उसको २ से गुणा करके नौ (९) का भाग देने से अंशादिक स्पष्ट चन्द्रमा होता है। और ४८००० में भभोग का भाग देने से चन्द्रमा की तात्कालिक स्पष्ट गति होती है॥

विशेष—४८००० को एक दफे ६० से गुणा करके उसमें भभोग को एकजातीय बना करके भाग देना चाहिये। घटी को ६० से गुणा करके उसमें पल जोड़ने से एक जातीय होता है ॥९॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

जैसे रोहिणी नक्षत्र में भयात १५।२० भभोग ६०।१५ भयात के १५।२० एकजातीय ९२० को ६० से गुणा किया तो ५५२०० हुए, इसमें भभोग के एकजातीय ३६१५ से भाग दिया लब्धि १५।१६।११ इसमें गत नक्षत्र संख्या ३ को ६० से गुणाकर १८० जोड़ दिया तो १९५।१६। ११ इसको २ से गुणा किया तो ३९०।३२।२२। इसमें ९ का भाग दिया तो अंशादि ४३।२३।३६ चन्द्रमा हुआ, अंश में ३० का भाग देकर राश्यादि स्पष्ट चन्द्रमा १।१३।२३।३६ हुआ ॥९॥

पलभापर से चरखण्डानयन—

मेषादिगे सायनभागसूर्ये दिनार्धजाभा पलभा भवेत्सा ।
त्रिष्ठा हता स्युर्दशभिर्भुजङ्गैर्दिग्भिश्चरार्धानि गुणोद्धृतान्त्या॥१०॥

सायनमेष की संक्रान्ति जिस दिन हो उस दिन मध्याह्नकालिक द्वादशांगुल (१२) शंकु की छाया पलभा कहलाती है। पलभा को तीन जगह रखकर प्रथम स्थान में १० से, द्वितीयस्थान में ८ से गुणा करै और तृतीय स्थान में १० से गुणा करके ३ का भाग देने से क्रम से मेषादि तीन राशियों की पलात्मक चरखण्डा होती है।

जैसे मिथिला की पलभा = ६, इससे उपरोक्त रीति के अनुसार चरखण्डा ६०।४८।२० ॥ तथा काशी की पलभा ५ अङ्गुल ४५ व्यङ्गुल इस पर से चरखण्डा ५७।४६।१९।१०॥

लङ्कोदय पर से स्वदेशोदय का ज्ञान—

लङ्कोदया विघटिका गजभानि गोऽङ्क-
दस्रास्त्रिपक्षदहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः ।
हीनान्विताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थै—
र्मेषादितो घटत उत्क्रमतस्त्विमे स्युः ॥ ११ ॥

२७८ पल मेष का । २९९ पल वृष का । ३२३ पल मिथुन का लङ्कोदयमान है । येही फिर उत्क्रम से, कर्क, सिंह कन्या का लङ्कोदय मान

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

समझना। मेषादिक तीन राशि के लङ्कोदय मान में क्रम से चरखण्डा को घटाने से और कर्कादि तीन राशि के लङ्कोदयमान में चरखण्डा को उत्क्रम से जोड़ने से स्वदेशोदयमान मेषादिक ६ राशियों का होता है। फिर वही उत्क्रम से तुलादिक ६ राशियों का मान होता है ॥११॥

जैसे—

लङ्कोदय—चरखं.=मिथिलोदय	लं.उ.—चरखं.=काशी के उदय
मे २७८ — ६० = २१८ मी.	मे. २७८ — ५७ = २२१ मी.
वृ. २९९ — ४८ = २५१ कुं.	वृ. २९९ — ४६ = २५३ कुं.
मि. ३२३ — २० = ३०३ म.	मि. ३२३ — १९ = ३०४ म.
क. ३२३ + २० = ३४३ ध.	क. ३२३ + १९ = ३४२ ध.
सिंह २९९ + ४८ = ३४७ वृ.	सिं. २९९ + ४६ = ३४५ वृ.
कं २७८ + ६० = ३३८ तु.	क. २७८ + ५७ = ३३५ तु.

लग्नादि १२ भाव बनाने का सरल प्रकार—

सायनार्कस्य भुक्तांशा भोग्यांशाः स्वोदयैर्हताः।
त्रिंशता विहृता लब्धपलानीष्टात् पलीकृतात् ॥ १२ ॥
विशोध्यानि ततो भुक्तभोग्यराश्युदयासवः।
शोध्यास्त्वेवं न यन्मानं शुद्धयेत् सोऽशुद्धसंज्ञकः ॥१३॥
शेषं त्रिंशद्गुणं भक्तमशुद्धभवनोदयैः।
लब्धमंशाद्यशुद्धर्क्षे शोध्यं योज्यं च शुद्धभे ॥१४॥
व्ययनांशं च तत् कृत्वा फलार्थं लग्नमाहृतम्।

लग्न बनाने का दो प्रकार है-सायन सूर्य के भुक्तांश पर से भुक्त प्रकार तथा भोग्यांश पर से भोग्य प्रकार कहलाता है। यदि भुक्त प्रकार से लग्न बनाना हो तो सायन सूर्य के भुक्तांश को, भोग्य प्रकार से बनाना हो तो सायन सूर्य के भोग्यांश को उसी राशि के उदय मान से गुणा करके उसमें ३० का भाग देने से लब्धि पल को इष्ट घडी को

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

पलात्मक बना करके उसमें घटावे । फिर शेष इष्ट घटी के पल में भुक्त प्रकार में उत्क्रम से (सायन सूर्य की राशि से पीछे की) राशि के उदय मान घटावे तथा भोग्य प्रकार में क्रम से (सायन सूर्य के आगे की) राशि के स्वदशोदय मान घटावे। इस प्रकार जिस राशि तक का मान घटे वह शुद्ध राशि तथा जिसका उदयमान न घटे वह अशुद्ध राशि कहलाती है। इस प्रकार घटाने पर इष्ट घटी पल का जो शेष बचे उसको ३० से गुणा करे, फिर उसमें अशुद्ध राशि के उदय मान से भाग देकर लब्धि अंशादि फल को भुक्त प्रकार में अशुद्ध राशि संख्या में घटावे, भोग्य प्रकार में शुद्ध राशि संख्या में जोड़े, फिर उसमें अयनांश घटावे तो स्पष्ट लग्न होता है ॥१२-१४॥

कब भुक्त प्रकार से और कब भोग्य प्रकार से लग्न बनाना चाहिये

उसका प्रकार—

दिवागतेष्टे रवियोग्यभागैर्दिवावशेषे सरसार्कभुक्तैः ।
निशागते षड्भयुतार्कभोग्यैर्निशावशेषे रविभुक्तभागैः ॥१५॥

दिन गत इष्ट घटी हो तो भोग्य प्रकार से। दिन शेष (अर्थात् दिन मान में इष्ट घटी को घटा कर शेष) इष्ट घड़ी हो तो सायन सूर्य में ६ राशि जोड़ कर भुक्त प्रकार से। यदि रात्रि गत [अर्थात् सूर्योदय से इष्ट घटी में दिनमान घटा कर शेष] इष्ट घटी हो तो सूर्य में ६ राशि जोड़कर भोग्य प्रकार से, यदि रात्रि शेष इष्ट घड़ी हो तो भुक्त प्रकार से लग्न बनाना चाहिये ॥१५॥

फिर विशेष—

इष्टाधिकानि सूर्यस्य भुक्तभोग्यपलानि चेत् ।
तदेष्टात् त्रिंशता निघ्नात् सूर्याक्रान्तोदयैर्हृतात् ॥१६॥
लब्धांशै रहितो युक्तो रविरेव हि लग्नकम् ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

यदि सूर्य के भुक्तपल अथवा भोग्यपल इष्ट घटी के पल से अधिक हो तो, उक्त प्रकार से लग्न नहीं बन सकता है, इस लिये वहां इष्टकाल के पल को ३० से गुणा कर सायन सूर्य की राशि के उदय मान से भाग देकर लब्ध अंशादि को भुक्त प्रकार में सूर्य में घटाने और भोग्य प्रकार में जोड़ने से लग्न होता है ॥१६॥

लग्नं तूदयकाले स्याद् रविरेव हि सर्वदा ।
अस्तकाले सषड्भार्कतुल्यं ज्ञेयं विपश्चिता ॥१७॥

सूर्योदय काल में रवि के तुल्य ही लग्न होता है और सूर्यास्त समय में स्पष्ट सूर्य में ६ राशि जोड़ने से लग्न होता है ॥१७॥

दशमलग्न बनाने का प्रकार—

पूर्वं नतं स्याद् द्युदलाल्पमिष्टं दिनार्धमानात् प्रविशोध्य शेषम् ।
इष्टे दिनार्धादधिके विशोध्यं दिनार्धमिष्टादपरं नतं स्यात् ॥१८॥
एवं स्वबुद्ध्या सुधिया विधेयं रात्र्यर्धतो रात्रिगतं नतं च ।
लङ्कोदयैः पूर्वनतात् प्रसाध्यं भुक्तप्रकारेण पुरोदितेन ॥१९॥
भोग्यप्रकारेण परान्नताद्यल्लग्नं भवेत्तद्दशमाभिधानम् ।
रात्रौ प्रसाध्यं च सषड्भसूर्याच्चात् षड्भयुक्तं च चतुर्थलग्नम् ॥२०॥
ज्ञेयं दिवा नताभावे रविरेव खलग्नकम् ।
एवं रात्रिनताभावे सषड्भरविणा समम् ॥२१॥

दिनार्ध से अल्प इष्टकाल हो तो उसको दिनार्ध में घटाने से दिवापूर्वनत होता है। और दिन का इष्टकाल दिनार्ध से अधिक हो तो उसमें दिनार्ध को घटा कर शेष दिवापश्चिमनत होता है। इसी प्रकार रात्रिगत इष्टघटी रात्र्यर्ध से अल्प हो तो दोनों का अन्तर रात्रि पूर्वनत, अधिक हो तो रात्रि पश्चिमनत होता है। अब दशम भाव साधन कहते हैं–जैसे पूर्व इष्टकाल पर से लग्न साधन का प्रकार

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

कहा गया है उसी प्रकार पूर्वनतकाल को इष्टकाल मान कर भुक्त प्रकार से, और पश्चिमनत हो तो भोग्य प्रकार से, तथा लंकोदय राशिमान ग्रहण करके लग्न बनाने से दशम लग्न होता है। रात्रिगत-काल हो तो सूर्य में ६ राशि जोड़ कर उक्त प्रकार से दशम लग्न होता है। तथा दशम भाव में ६ राशि जोड़ने से चतुर्थ लग्न होता है। यदि दिवानत का अभाव हो तो सूर्य ही दशम लग्न होता है। और रात्रि में नत का अभाव हो तो सषड्भसूर्य के तुल्य दशम लग्न होता है॥१८-२१॥

लग्नं सषड्भमस्तर्क्षं तथा लग्नोनतुयतः ।
षष्ठांशयुक् तनुः सन्धिरग्रे षष्ठांशयोजनात् ॥ २२ ॥
त्रयः ससन्धयो भावाः ज्ञेया बुद्धिमता ततः ।
द्वित्रिभावौ क्रमाद्युक्तौ द्वाभ्यां वेदैः सुतद्विषौ ॥ २३ ॥
लग्नादिभावाः षड्-षड्भयुक्ताः सप्तमकादयः ।
त्रिद्व्येकसन्धयस्त्वेकत्रिपञ्चभयुताः क्रमात् ॥ २४ ॥
सन्धयस्स्युश्चतुर्थाद्याः सषड्भाः षडमी परे ।
खेटे भावसमे पूर्णं फलं सन्धिसमे तु खम् ॥ २५ ॥

लग्न में ६ राशि जोड़ने से सप्तभाव होता है। तथा लग्न को चतुर्थ भाव में घटाकर शेष के षष्ठांश को लग्न में जोड़ने से लग्न की सन्धि होती है फिर उसमें षष्ठांश जोड़ने से द्वितीयभाव, द्वितीयभाव में षष्ठांश जोड़ने से द्वितीय भाव की सन्धि, उसमें फिर षष्ठांश जोड़ने से तृतीयभाव, उसमें फिर षष्ठांश जोड़ने से तृतीयभाव की सन्धि होती है। तथा तृतीयभाव में २ राशि जोड़ने से पञ्चमभाव, द्वितीय-भाव में ४ राशि जोड़ने से षष्ठ भाव होता है। इस प्रकार लग्नादि ६ भावों में पृथक् ६ राशि जोड़ने से क्रम से सप्तम आदि ६ भाव होते हैं। और तृतीय की सन्धि में १।३।५ राशि जोड़ने से क्रम से चतुर्थ पञ्चम, षष्ठभावों की सन्धि होती है। फिर इन सन्धियों में पृथक्

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

पृथक् ६ राशि जोड़ने से सप्तम आदि की सन्धि होती है। इस प्रकार सन्धि सहित १२ भावों का साधन करना चाहिये। भाव के तुल्य ग्रह हो तो भाव का पूर्ण फल होता है तथा सन्धि के तुल्य ग्रह हो तो भाव फल शून्य होता है ॥

लग्नादि भावानयन का उदाहरण—

शाके १८२१ चैत्र शुक्ल नवमी दं. २४।३० पूर्वाषाढ नक्षत्र दं०९।५६ श्री सूर्योदयादिष्टम् घट्यादि ४४। ३५ दिनमानम् ३०।१४ मिश्रमानम् ४५।७ भयातम् ३४।३९ भभोगः ५७।२३ अयनांशाः २१।०।५१ स्पष्ट सूर्यः ११।१२।२२।१९ रात्रौ पूर्वनतं घट्यादि ०।२२।

यहां लग्न साधन करना है। इष्ट घटी ४४। ३५ को ६० में घटाकर भुक्तरीति से लग्न बनाने में सुविधा होगी, इसलिये इष्ट घटी को ६० में घटाने से रात्रि शेष रूप इष्ट घटी १५।२५ सायन सूर्य ०।३।२३।१० इसके भुक्तांश ३।२३।१० को मिथिला के मेषोदय २१८ से गुणा करने से ७३८।१०।२० इसमें ३० का भाग देकर लब्ध पलादि २४।३६।२१ को इष्ट घटी के पल ९२५ में घटाने से शेष ९००।२३।३९ में गत मीन, कुम्भ, मकर के उदयमान घटा कर शेष १२८।२३।३९ को ३० से गुणा कर ३८५१।४९।३० इसमें अशुद्ध (धनु) राशि का मिथिलोदय ३४३ से भाग देकर लब्धि अंशादि ११।१३।४७ को अशुद्ध राशि सङ्ख्या ९ में घटाने से ८।१८।४६।१३ इससे अयनांश घटाने से ७।२७।४५।२२ यह प्रथम लग्न हुआ। इसी में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव १।२७।४५।२२ हुआ ॥

दशमलग्नोदाहरण—

दशम लग्नानयन में नतघटी को इष्टकाल मानकर और लङ्कोदय से पूर्वोक्त क्रिया होती है। यहां रात्रि का पूर्व नत ०।३२ है, इसलिये सायन सूर्य में ६ राशि जोडने से ६।३।२३।१० इसके भुक्तांश ३।२३।१० को तुला के लङ्कोदय २९८ से गुणाकर ९४१।२०।२० इसमें ३० का भाग देने से लब्धि पलादि ३१।२२।४१ को नतपल ३२ में घटाकर शेष

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

०।३७।१९ इसमें गतराशि (कन्या) का उदय नहीं घटता है, इसलिये शेष ०।३७।१९ को ३० से गुणा कर १८।३९।३० में कन्या के लङ्कोदय २७८ का भाग देने से अंशादि ०।४।२ को अशुद्ध राशि ६ में घटाने से ५।२९।५८।५८ इसमें अयनांश घटाने से दशम लग्न ५।८।५५।७ इसी में ६ राशि जोड़ने से चतुर्थ भाव ११।८।५५।७ हुआ। चतुर्थ भाव में लग्न को घटाकर शेष राश्यादि ३।११।९।४५ का षष्ठांश ०।१६।५१।३७।३० इसको लग्न में जोड़ने से लग्न की सन्धि हुई, फिर इसी षष्ठांश को जोड़ने से द्वितीयभावादि होता है। जैसे—

७ । २७ । ४५ । २२ = लग्न ।
० । १६ । ५१ । ३७ । ३० = षष्ठांश ।
८ । १४ । ३६ । ५९ । ३० = लग्न सन्धि ।
९ । १ । २८ । ३७ । ० = द्वितीय भाव ।
९ । १८ । २० । १४ । ३० = द्वितीय सन्धि ।
१० । ५ । ११ । ५२ । ० = तृतीय भाव ।
११ । २२ । ३ । २९ । ३० = तृतीय सन्धि ।

अथ तृतीय भाव में २ राशि जोड़ने से पञ्चम भाव = ०।५।११।५२।० तथा द्वितीय भाव में ४ राशि जोड़ने से षष्ठ भाव = १ । १ । २८ । ३७ । ० । तथा तृतीय सन्धि में १ राशि जोड़ने से चतुर्थ सन्धि ११ । २२ । ३ । २९ । ३० और द्वितीय सन्धि में ३ राशि जोड़ने से ० । १८ । २० । १४ । ३० यह पञ्चम की सन्धि हुई। तथा लग्न की सन्धि में ५ राशि जोड़ने से षष्ठ भाव की सन्धि = १ । १४ । ३६ । ५९ । ३० इस प्रकार ससन्धि लग्नादि ६ भाव हुए। इन्हीं में ६ राशि जोड़ने से ससन्धि सप्तमादि भाव होते हैं ॥२२-२५॥

भावोपरिग्रहदृष्टिविचार—

त्र्यायं त्रिकोणं चतुरस्रमस्तं पश्यन्ति खेटाश्चरणाभिवृद्धया ।
मन्दो गुरुर्भूमिसुतः परे च क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति ॥२६॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

ग्रह अपने स्थान से ३, १० स्थान को १ चरण से, ५, ९, को २ चरण से, ४, ८, को ३ चरण से, ७ को ४ से चरण से देखता है। विशेष— शनि ३, १० को, बृहस्पति ९। ५ को, मङ्गल ४, ८ को और बाकी ग्रह ७ को सम्पूर्ण दृष्टि से देखते हैं ॥ २६ ॥

ग्रहों का निसर्ग मैत्री चक्र—

इसी ग्रन्थ में लिखित (विवाह प्रकरण श्लो. २६—२९) ग्रह मैत्री के अनुसार—

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
मित्र	चं. मं. बृ.	र. बु.	र. चं. बृ.	र. शु	र. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.
सम	बु.	मं बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	श.	बृ. मं.	बृ.
शत्रु	शु. श	०	बु.	चं.	बु. शु.	र. चं	र. चं. मं.

अथ तात्कालिक मैत्री ज्ञान—

अन्योन्यस्य धनव्ययायसहजव्यापारबन्धुस्थिता-
स्तत्काले सुहृदः स्वतुङ्गभवनेऽप्येकेऽरयस्त्वन्यथा ।
दृष्ट्वैकानुक्तभपान् सुहृत्समरिपून् सञ्चिन्त्य नैसर्गिकान्-
तत्काले पुनरेव तानधिसुहृन्मित्रादिभिः कल्पयेत् ॥ २७ ॥

अपने स्थान से परस्पर २, १२ और ३, ११ तथा ४, १० में स्थित ग्रह तात्कालिक मित्र होता है। अपने उच्चराशि में स्थित ग्रह भी मित्र होता है। शेष स्थान में स्थित ग्रह शत्रु होता है। इस प्रकार तात्कालिक तथा नैसर्गिक मित्र शत्रु का विचार करके फिर उसको अधिमित्र आदि पञ्चधा मैत्री विचार कर ॥ २७ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

यथा—

तत्कालमित्रं च निसर्गमित्रं सदाधिमित्रं कथयन्ति सन्तः।
मित्रं समो मित्रमिति ब्रुवन्ति मित्रं च शत्रुश्च समं प्रवीणाः ॥२८॥
समश्च शत्रुर्भवतीह शत्रुः शत्रुश्च शत्रुर्ह्यधिशत्रुसंज्ञः।
विचार्यमेवं गणितागमज्ञैस्तत्कालचक्राच्च निसर्गचक्रात् ॥ २९ ॥

तात्काल में, और निसर्गचक्र म दोनों जगह मित्र होने से अधिमित्र, तथा एक स्थान में मित्र एक स्थान में सम होने से मित्र, और एक जगह मित्र एक जगह शत्रु होने से सम होता है। एवं सम और सम मिल करके सम ही रहता है। तथा शत्रु और सम होने से शत्रु और दोनों जगह शत्रु होने से ग्रह अधिशत्रु होता है ॥ २८-२९ ॥

ग्रहों का उच्चनीचस्थान—

मेषो दशांशैः सूर्यस्य चन्द्रस्योच्चं वृषस्त्रिभिः।
कुजस्याष्टाक्षिभिर्नक्रस्तिरथ्यंशैर्ज्ञस्य कन्यका ॥ ३० ॥
गुरोः पञ्चांशकैः कर्को भृगोर्मीनो नगाक्षिभिः।
शनेस्तुला नखांशैश्च राहोश्च मिथुनं त्रिभिः ॥ ३१ ॥
केतोश्च वृश्चिकोऽष्टांशैः परमोच्चं स्मृतं बुधैः।
उच्चात् सप्तमभं नीचमुक्तांशैरेव कीर्तितम् ॥ ३२ ॥

मेष में १० अंश से सूर्य का उच्च, ३ अंश से वृष में चन्द्र का, २८ अंश से मकर मङ्गल का, १५ अंश से कन्या बुध का, ५ अंश से कर्क गुरु का, २७ अंश से मीन शुक्र का, २० अंश से तुला शनैश्चर का, ३ अंश से मिथुन राहु का, आठ अंश से वृश्चिक केतु का उच्च होता है। उच्च राशि से ७ सप्तम राशि उतने ही अंश से नीच होती है ॥३०-३२॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ ग्रहों का षड्वर्ग—

गृहं होरा दृकाणश्च त्रिंशांशो नवमांशकः ।
द्वादशांशश्च खेटानां षड्वर्गाः परिकीर्तिताः ॥ ३३ ॥

१ ग्रह (राशि), २ होरा, ३ द्रेष्काण, ४ त्रिंशांश, ५ नवमांश, ६ द्वादशांश ये ६ ग्रहों के षड्वर्ग कहलाते हैं।

उसमें प्रथम १ गृह जिस राशि का जो स्वामी हैं वह राशि उस ग्रह का गृह कहलाता है। (इसी ग्रन्थ में देखिये) ॥३३॥

अथ होरा—

समगृहमध्ये शशिरविहोरा विषमभमध्ये रविशशिनोः सा ॥३४॥

प्रत्येक राशि में दो होरा होती है। समराशि में १५ अंश तक चन्द्रमाकी, बाद सूर्य की होरा होती है। विषमराशि में प्रथम रवि की द्वितीय चन्द्रमा की होरा होती है ॥ ३४ ॥

त्रिंशांश और द्रेष्काण—

शुक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्य बाण-
शैलाष्टपञ्चविशिखाः समराशिमध्ये ।
त्रिंशांशको विषमभे विपरीतमस्माद्-
द्रेष्काणकाः प्रथमपञ्चनवाधिपानाम् ॥ ३५ ॥

समराशि में ५ अंश तक शुक्र का, उसके बाद ७ अंश बुध का, उसके बाद ८ अंश गुरु का, उसके बाद ५ अंश शनि का, उसके बाद ५ अंश मङ्गल का त्रिंशांश होता है। * विषम राशि में उत्क्रम से (अर्थात् प्रथम ५ अंश मङ्गलका, उसके बाद ५ अंश शनिका, उसके बाद ८ अंश गुरुका इत्यादि) समझना। १० अंश का १ द्रेष्काण होता है—जिस राशि में द्रेष्काण बिचार करना हो प्रथम द्रेष्काण उसी राशि का, दूसरा उस राशि से पञ्चमेश का, तीसरा उस राशि से नवमेश का का द्रेष्काण होता है ॥ ३५ ॥

* वर्ष प्रवेश में प्रत्येक ग्रह का ६, ६ अंश का त्रिंशांश होता है।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

नवमांश—

नवमांशा मेषसिंहचापे मेषादयः क्रमात् ।
ज्ञेया गोमृगकन्यासु क्रमात्स्युर्मकरादयः ॥ ३६ ॥
तुलामिथुनकुम्भेषु स्युः क्रमेण तुलादयः ।
अलिकर्कटमीनेषु कर्कटाद्याः प्रकीर्तिताः ॥ ३७ ॥

मेष सिंह धनु में मेषादि, वृष कन्या मकर में मकरादि, तुला मिथुन कुम्भ में तुलादि, और कर्क वृश्चिक मीन में कर्कादि नवमांश होता है ॥ ३६-३७ ॥

द्वादशांश—

द्वादशांशाः स्वभादेवं षड्वर्गाः कथिता इमे ।
स्वोच्चमित्रशुभैः श्रेष्ठा नीचारिक्रूरतोऽशुभाः ॥ ३८ ॥

जिस राशि में द्वादशांश विचार करना हो उसी राशि के क्रम से द्वादशांश होता है । इस प्रकार षड्वर्ग विचार करके यदि स्व राशि, अपनी उच्च राशि, अपने मित्र की राशि वा शुभग्रह का षड्वर्ग हो तो शुभ और नीच, शत्रु, पापग्रह का हो तो अशुभ फल कहना ॥३८॥

वर्गोत्तम नवांश—

भानां स्वस्वनवांशो यः स वर्गोत्तमसंज्ञकः ।
राशियों का अपना अपना नवांश वर्गोत्तम कहलाता है ॥

पापग्रह—

क्षीणेन्द्वर्कयमाराः स्युः पापास्तत्संयुतो बुधः ॥ ३९ ॥
क्षीणचन्द्र, रवि, शनि, मंगल ये पापग्रह हैं। पापग्रह से युक्त बुध भी पापग्रह हो जाता है । शेष शुभग्रह हैं ॥ ३९ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

वर्षप्रवेश में उपयुक्त हद्दा चक्र—

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ	ध	म.	कुं.	मी
गु६	शु८	बु६	मं७	गु६	बु ७	श६	मं७	गु १२	बु ७	शु ७	शु १२
शु६	बु६	शु६	शु६	शु५	शु १०	बु८	शु४	शु ५	गु ७	बु ६	गु ४
बु८	गु८	गु५	बु६	श७	गु ४	गु७	बु८	बु ४	शु ८	गु ७	बु ३
मं५	श५	मं७	गु७	बु६	मं ७	श७	गु५	मं ५	श ४	मं ५	मं ९
श५	मं३	श ६	श४	मं६	श २	मं२	श६	श ४	मं ४	श ५	श २

अथ वर्षपत्र प्रकरण ।

वर्षप्रवेश समय (इष्टकाल)—

"गताः समाः पादयुताः प्रकृतिघ्नसमागणात् ।
खवेदाप्तघटीयुक्ता जन्मवारादिसंयुताः ॥
वर्षप्रवेशो वारादि सप्ततष्टेऽत्र निर्दिशेत् ॥ ४० ॥"

गतवर्ष संख्या में अपना चतुर्थांश जोड़े, उसमें फिर गतवर्ष संख्या को २१ से गुणा करके ४० से भाग देने से लब्धि घटी आदि को जोड़कर जो हो उसमें जन्मकालिक वारादि इष्ट घटी जोड़ें, उसको सात से तष्टित करने से शेष वारादिक वर्ष प्रवेश काल होता है ॥

उदाहरण–गत वर्ष ३१ इस में इसी का चतुर्थांश दिनादि ७।४५ जोड़ने से ३८।४५ इसमें गताब्द ३१ को २१ से गुणा किया तो ६५१

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

इसमें ४० का भाग देकर लब्धि घटी, पल १६। १६ जोड़ने से ३९। १। १६ दिनादि में जन्मकालिक दिनादि इष्ट घटी १।४४।३५ जोड़ने से दिनादि वर्षप्रवेश कालिक दिनादि इष्ट ४०।४५।५१ दिन में ७ का भाग देकर दिनादि वर्षेष्ट ५।४५। ५१ हुआ अर्थात् गुरुवार में ४५ घड़ी ५१ पल पर ३२ वाँ वर्षप्रवेश होगा। उस समय में पूर्वोक्त विधि से स्पष्ट ग्रह और भावों का साधन करना ॥४०॥

वर्षप्रवेश की तिथि—

"शिवघ्नोऽब्दः स्वखाद्रीन्दुलवाढ्यः खाग्निशेषितः।
जन्मतिथ्यन्वितस्तत्र तिथावब्दप्रवेशनम् ॥ ४१ ॥

गतवर्ष को ११ से गुणा करके उसमें १७० का भाग देकर लब्धि को उसी में जोड़कर फिर शुक्लपक्षादि गणना करके जन्मकालिक तिथि उसमें जोड़कर ३० का भाग देने से शेष वर्षप्रवेशकालिक तिथि होती है। तिथ्यानयन में मध्यमसान होने के कारण कभी कभी एक तिथि का अन्तर भी होता है। जिस समय में स्पष्ट सूर्य जन्म के सूर्य के बराबर हो वह स्पष्ट वर्षप्रवेश काल समझना।

उदाहरण—गत वर्ष ३१ को ११ से गुणाकर, गुणन फल ३४१ इसमें १७० का भाग देकर लब्धि २ उसी ३४१ में जोड़कर ३४३ इसमें जन्मतिथि २५ (कृष्णपक्ष दशमी) जोड़ कर ३६८ इसमें ३० का भाग देकर शेष ८ शुक्लपक्ष की अष्टमी हुई। अर्थात् शुक्ल पक्ष की अष्टमी में वर्ष प्रवेश होगा। तिथि में कभी १ दिन का अन्तर भी हो जाता है। इस लिये उपरोक्त विधि से जो दिन आवे उस दिन में निश्चय जन्मकालिक सूर्यांश तुल्य सूर्य के अंश होते हैं। इस लिये वर्ष प्रवेश में आगत दिन को प्रमाणित समझना।

अब वर्ष प्रवेश कालिक स्पष्ट ग्रह, तन्वादि द्वादश भाव पूर्वोक्त प्रकार से साधन करै ॥ ४१ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

वर्षप्रवेश में ग्रह दृष्टिस्थान—

तृतीयैकादशे दृष्टिः शुभा स्यान्नवपञ्चमे ।
चतुर्थदशमे नेष्टा सप्तमैकगृहे तथा ॥ ४२ ॥

परस्पर ३, ११ और ५, ९ में शुभ दृष्टि होती है । ४, १० तथा १, ७ में अशुभ दृष्टि होती है । बाकी स्थानों को ग्रह नहीं देखता ॥ ४२ ॥

वर्षप्रवेश में मित्र शत्रु—

मित्रं त्रिकोणत्रिभवस्थितश्चेद्‌द्वयर्थषट्‌रिष्फेषुसमोग्रहःस्यात् ।
केन्द्रेषु शत्रुः कथितो मुनीन्द्रैर्वर्षादिवेशे फलनिर्णयाय ॥४३॥

अपने स्थान से ९, ५, ३, ११ वें स्थान में स्थित ग्रह मित्र और २, ६, ८, १२ वें स्थान में स्थित सम तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में स्थित ग्रह शत्रु कहलाते हैं ॥ ४३ ॥

मुथहानयन—

गतवर्षगणः सैको हृतो द्वादशभिस्तथा ।
शेषराशौ बुधैर्ज्ञेया मुथहा जन्मलग्नतः ॥ ४४ ॥

गत वर्ष में एक जोड़ कर १२ से भाग देने से जो शेष बचे जन्म लग्न से उतनी संख्यक राशि में मुथहा होती है ।

उदा०-गत वर्ष ३१ एक जोड़ कर ३२ इसमें १२ का भाग देने से शेष ८ जन्म लग्न वृश्चिक से अष्टम मिथुन में मुथहा हुई ॥ ४४ ॥

अथ वर्षेशाधिकारी—

जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपो मुन्थहाधिप इतस्त्रिराशिपः ।
सूर्यराशिपतिरह्नि चन्द्रभाजीश्वरो निशि विमृश्य पञ्चकम् ॥४५॥
बली य एषां तनुमीक्षमाणः स वर्षपो लग्नमनीक्षमाण ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

नैवाब्दपो दृष्ट्यतिरेकतः स्याद् बलस्य साम्ये विदुरेवमाद्याः ॥

१ जन्मलग्नेश, २ वर्ष लग्नेश, ३ मुंथहेश, ४ त्रिराशीश तथा दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि में हो उसका स्वामी ५ यदि रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्रराशीश ५, इन पांचों का बल विचार करके जो सबसे बली हो और लग्न को देखता हो वह वर्षेश होता है। यदि लग्न को न देखता हो वह वर्षेश नहीं होता है। दो ग्रहों का बल यदि बराबर हो तो लग्न पर जिसकी दृष्टि विशेष हो वही वर्षेश होता है ॥ ४५-४६ ॥

त्रिराशीश—

त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्रा दिने निशीज्येन्दुबुधक्षमाजाः ।
मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं नित्यं परेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥४७॥

दिन में वर्ष प्रवेश हो तो मेषादिक चार राशियों में क्रम से सूर्य, शुक्र, शनि, शुक्र और रात्रि में गुरु, चन्द्र, बुध, मंगल त्रिराशिपति होते हैं। सिंहादि चार राशियों में इसका उल्टा (अर्थात् दिन वाले रात्रि में रात्रिवाले दिन में) समझना। तथा धन, मकर, कुम्भ, मीन इन चार राशियों में दिन तथा रात्रि सर्वदा क्रम से शनि, मंगल, गुरु, चन्द्रमा त्रिराशीश होते हैं ॥ ४७ ॥

इष्टोच्चबलानयन—

स्वनीचोनः खगः षड्भाधिकश्चेच्चक्रतस्त्यजेत् ।
तदंशनवमो भागो ग्रहस्योच्चबलं स्मृतम् ॥ ४८ ॥

अपने नीच राशि अंश को ग्रह के राश्यादि में घटावे, शेष यदि ६ राशि से अधिक हो तो फिर उसको १२ में घटा कर अंश बनावै, उसमें ९ का भाग देने से लब्धि उच्चबल होता है ॥

उदाहरण—राश्यादि स्पष्ट सूर्य १० । १५ । २४ । १४ में सूर्य के नीच राशि अंश ६ । १० को घटाने से शेष ४ । ५ । २४ । १४ यह ६

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

राशि से अल्प है इसलिये इसके अंश १२५ । २४ । १४ में ९ का भाग देने से लब्धि १३ । ५६ उच्च बल हुआ । इसी प्रकार सब ग्रह का उच्च बल बनाना ॥ ४८ ॥

पञ्चवर्गीबल

त्रिंशत्स्वभे विंशतिरात्मतुङ्गे हद्दऽक्षचन्द्रा दशकं दृकाणे ।
नवांशके पञ्चलवाः प्रदिष्टा विंशोपका वेदलवैः प्रकल्प्या ॥४९॥
स्वस्वाधिकारोक्तबलं सुहृद्भे पादोनमर्धं समभेऽरिभेंघ्रिः ।
एवं समानीय बलं तदैक्ये वेदोद्धृते हीनबलः शरोनः ॥५०॥
पञ्चाल्पो हीनवीर्यः स्यादधिको मध्य उच्यते ।
दशाधिको बली प्रोक्तः पञ्चवर्गीबलादिके ॥ ५१ ॥

स्वराशि में ३०, उच्च में २०, स्वहद्दा में १५, स्वद्रेष्काण में १०, स्वनवांश में ५ ग्रहों का बल होता है। पांचों बल के योग का चतुर्थांश विंशोपक कहलाता है। अपने अपने अधिकार (गृहादि) में जो बल कहा गया है उसका चतुर्थांशोन मित्र की राशि में, समकी राशि में आधा, शत्रु की राशि में चतुर्थांश, बल होता है। इस प्रकार गृहादि पञ्चवकर्गील के योग को ४ से भाग देने से ५ से अल्प हो तो ग्रह हीनबल होता है। ५ से अधिक १० के भीतर हो तो मध्यबली, १० से अधिक हो तो बली होता है ॥ ४९–५१ ॥

वर्षपत्र लिखने की रीति—

आदित्यादिग्रहाः सर्वे नक्षत्राणि च राशयः ।
दीर्घमायुः प्रकुर्वन्तु यदीया वर्षपत्रिका ॥ ५२ ॥

शुभशाके १८५२, विक्रमसंवत्सरे १९८७ सनाब्दे १३३८ चैत्रशुक्ल सप्तम्यां दण्डादि २९।५० मृगसिरोनक्षत्रे दं० २२।२८ सौभाग्ययोगे दं०

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

११८ गरकरणे दं० ०।४८ गुरुवासरे श्रीसूर्योदयादिष्टघट्यादिषु ४५।
११ धनुर्लग्नोदये शुभावलोकिते शुभसमये बाबू श्रीजगन्नाथशर्ममहोद-
स्य विजयप्रदवर्षप्रवेशः । गताब्दाः ३१ दिनमानम् ३०।१६ रात्रि-
मानम् २९।४४ भयातम्, १३।२३ भभोगः ५८।४७ । शुभम् ।

जन्मलग्नम्

वर्षलग्नम्

तात्कालिक (इष्टकालिक) स्पष्टग्रहादि बनाने का उदाहरण—

पं० चैत्रशुक्ल ८ शुक्रे मि. मा. ४५।:०

	स.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	के.
ग्रहस्पष्टादि	११	×	३	११	२	१०	८	५
	१३	×	५	२६	१८	३	२७	२४
	२०	×	५१	४	१९	०	३१	११
	५९	×	३	४	१८	१९	३४	५८
गति	५९	×	१०	१३	४	७०	३	३
	२३	×	१७	२९	६	५५	४३	११

चैत्र शुक्ल ९ गुरुवार सूर्योदय से इष्ट घटी पल ४५।५१ में स्पष्ट ग्रह बनाना है तो पंचांग में समीप की पंक्ति ८ अष्टमी शुक्रवार में

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

ग्रह बना है। इसलिये पंक्ति के दिनादि ६।४५।१० में इष्टदिनादि ५।४५।२१ को घटाने से गत दिनादि (ऋण चालन) ०।५९।१९ हुआ। इससे रवि की गति ५९।२३ को गोमूत्रिका विधि से गुणा करके ५८। ४१ इसमें ६० का भाग देने से अंशादि ०।५८।४१ इसको गतदिनादि (ऋण चालन) होने के कारण पंक्ति के सूर्य ११।१३।१०।५९ में घटाने से ११।१२।२२।१८ यह इष्टकालिक सूर्य हुआ। इसी प्रकार चालन से मंगल आदि ग्रहों की गति को गुणा कर ६० का भाग देकर लब्ध अंशादि फल को मंगल आदि ग्रहों में घटाने से इष्टकालिक मंगलादि स्पष्ट हो जायगा। नीचे चक्र देखिये।

तात्कालिक चन्द्र साधन का उदाहरण इसी ग्रन्थ में देखो।

इस प्रकार-वर्षेष्टकालिक स्पष्ट ग्रह चक्र—

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	के.
११	२	३	११	२	१०	८	५
१२	९	५	२४	१८	१	२७	२४
२२	४२	४	३१	१५	५०	२७	१५
१८	११	५३	३८	१५	१२	४४	१

'मित्रंत्रिकोणत्रिभवस्थितश्चेत्' इत्यादि श्लोकानुसार मित्रसमशत्रु चक्र का उदाहरण—

इसी पुस्तक की वर्षलग्नकुण्डली में देखिये। सूर्य से मित्र स्थान (५।९।३।११) में केवल मंगल है, इसलिये केवल मंगल सूय का मित्र हुआ। तथा समस्थान (२।६।८।१२) में केवल शुक्र है, इसलिये शुक्र सूर्य का सम हुआ। तथा सूर्य से शत्रु स्थान (१।४।७।१०) में चन्द्र, शनि, बुध, बृहस्पति है, इसलिये ये चारों इनके शत्रु हुए। इसी प्रकार हर एक ग्रह से मित्रादि का विचार करना। नीचे चक्र देखिये—

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

मित्र-सम-शत्रु चक्र—

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
मित्र	मं.	शु.	बु. र.	मं.	शु.	चं.गु श.	शु
सम	शु.	मं.	शु.गु. श.चं.	शु.	मं.	र.मं. बु.	मं.
शत्रु	चं.बु. गु श.	बु.गु. श.र.	०	र.चं. गु.श.	र. बु. श. चं.	०	र.चं. बु.गु.

अथ पञ्चवर्गी बल विचार—

इसी ग्रन्थ में लिखित पूर्वोक्त श्लोकानुसार सूर्य बृहस्पति के गृह में है, बृहस्पति सूर्य का शत्रु है। इसलिये गृहबल (३०) का चतुर्थांश (७।३०) यह गृहबल हुआ। तथा हद्दा चक्रानुसार सूर्य गुरु के हद्दा में है, गुरु सूर्य का शत्रु है इसलिये हद्दा बल (१५) के चतुर्थांश ३।४५ सूर्य का हद्दा का बल हुआ। सूर्य मीन के दूसरे द्रेष्काण में है, दूसरा द्रेष्काण गुरु का है, गुरु सूर्य का शत्रु है इसलिये द्रेष्काण बल (१०) का चतुर्थांश २।३० द्रेष्काण बल हुआ। तथा सूर्य शुक्र के नवमांश में है, शुक्र सूर्य का सम है इसलिये नवांश बल (५) का आधा २।३० नवांश बल हुआ। तथा उच्च बल के लिये स्पष्ट सूर्य ११।१२।२२।१८ में सूर्य के नीच राश्यंश ६।१० घटा कर शेष ५।२।२२।१८ के अंश १५२।२८।१८ का नवमांश १६।५६ यह सूर्य का उच्च बल हुआ। सब बल का योग ३३।११, इसका चतुर्थांश ८।१८ वर्ष विंशोपक बल हुआ। इसी प्रकार चन्द्रादि ग्रहों के पंचवर्गी बल विचार करना चाहिये। चक्र देखिये—

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

पञ्चवर्गी बल चक्र—

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
गृह	७।३०	७।३०	१५।०	७।३०	७।३०	२२।३०	७।३०
हद्दा	३।४५	११।१५	१५।०	११।१५	७।३०	१५।०	१५।०
द्रेष्काण	२।३०	२।३०	५।०	१०।०	१०।०	७।३०	२।३०
नवांश	२।३०	३।१५	५।०	११।१५	५।०	५।०	११।१५
उच्च	१६।५६	१५।५५	२।२८	१।३	१८।८	१३।५२	१२।३०
योग	३३।११	३८।२५	४२।८	३०।५३	४८।८	६३।५२	३८।४५
विशो.	८।१८	९।३६	१०।३२	७।४३	१२।२	१५।५८	९।४१

अथ वर्षेश निर्णय—

जन्मलग्नेश = मंगल । वर्ष–लग्नेश = बृहस्पति ।
मुन्थेश = बुध । त्रिराशीश = शनि । चन्द्रराशीश = बुध ।

इन पञ्चाधिकारियों में सब से बली शुक्र लग्न को देखते हैं। इस लिये शुक्र वर्षेश हुए ।

वर्षेश बृहस्पति का फल—

शुक्रेऽब्दपे बलयुते परिवारसौख्यं
धर्मो गुणग्रहिलता धनकीर्तिपुत्राः ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

विश्वास्यता जगति सन्मतिविक्रमाप्ति-
र्लाभो निधेर्नृपतिगौरवमप्यरिघ्नम् ॥

स्पष्टार्थ । इस प्रकार और सब फल नीलकण्ठी आदि से कहना । इति दिक् ।

अथ मुद्दादशा—

जन्मर्क्षसंख्यासहिता गताब्दा नेत्रोनिता नन्दहृतावशेषात् ।
आचंकुराजीशबुकेशुपूर्वा मुद्दादशेशाः किल वर्षवेशे ॥

जन्म नक्षत्र संख्या को गतवर्ष में जोड़ कर २ घटावे, उसमें ९ का भाग देने से १ आदि शेष में क्रम से सूर्य, चन्द्र, कुज, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र इनकी मुद्दादशा होती है ।

मुद्दादशा चक्र—

ग्रह	सू.	चं	मं.	रा.	बृ.	श.	बु	के.	शु
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

न्यसेद्धचक्रं किल तत्र सैकां याताब्दसंख्यां विभजेन्नभोगैः ।
शेषोन्मिते जन्मगचन्द्रराशेस्तुल्ये च राशौ विलिखेच्छशाङ्कम् ॥
परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये स्थाने स्वराशेः खचराश्च लेख्याः ।
शुभैश्च विद्धे हिमगौ शुभं स्यात् पापैश्च विद्धे हि शरीरपीडा ॥

मध्यरेखाग्र में वर्षलग्न राशि लिखकर क्रम से त्रिपताकिचक्र में १२ राशियों को लिखे । गतवर्ष में १ जोड़ कर ९ का भाग देने से जो

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शेष बचे, जन्मराशि से उतने संख्यक स्थान में चन्द्रमा को लिखे और ४ से भाग देकर शेष तुल्य राशि में जन्मकुण्डलीस्थ ग्रहस्थान से शेष ग्रहों को लिखे, राहु केतु को उलटा चालन करना चाहिये। चन्द्रमा शुभग्रह से विद्ध हो तो शुभ फल, पाप ग्रह से विद्ध हो तो शरीर में क्लेश होता है ॥

उदाहरण—गत वर्ष ३१ में १ जोड़कर ३२ में ९ का भाग देने से शेष ५ बचा, इसलिये जन्मकालिक चन्द्रराशि मकर से पञ्चम वृषराशि में चन्द्रमा हुआ और सैक गत वर्ष में ४ का भाग देने से शेष ० अर्थात् ४ बचा, इसलिये जन्मकालिक स्वस्वाश्रित राशि से चौथे चौथे राशि में शेष सूर्यादिक ग्रह हुए। स्पष्टार्थ चक्र देखिये—

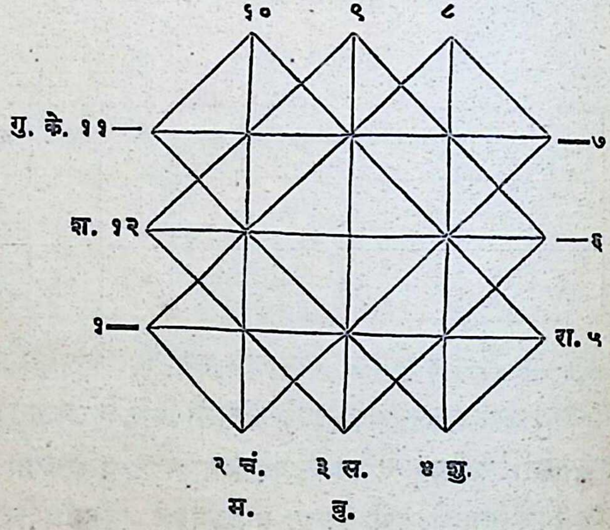

इस त्रिपताकिचक्र में चन्द्रमा किसी ग्रह से विद्ध नहीं है, इस लिये शुभाशुभ फल देने में सामान्य हुआ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

पुरुष के जन्म लग्न से ग्रहों का भावफल चक्र—

	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि राहु केतु
१ तनु	शरीर पीडा	सुख	रक्त-विकार	सुख	कान्तिमान	सुख	दुःख
२ धन	क्रोध धनहानि	अतिलाभ	दुःख	अतिलाभ	धनलाभ	लाभ	धन का नाश
३ सहज	नीरोगता	निर्दय	क्रोधी सुखी	धनवृद्धि	सुबुद्धि	कृश कामी	स्त्रियों का प्रिय
४ माता	अतिकष्ट	सुखभोग	कष्ट	सुखभोग	सुखी	भोगी	अतिपीड़ा
५ सुत	दुःख	अधिक पुत्र	सन्तान हानि	अल्प पुत्र	पुत्रवान	पुत्र-युक्त	सन्तान हानि
६ शत्रु	शत्रु का नाश	रोगी	शत्रु	बहुरोग	विकलता	बुद्धि-हीन	शत्रुमान्य
७ स्त्री	कुस्त्री प्राप्ति	सुन्दरीस्त्री	स्त्री नाश	सुन्दरी स्त्री	सुखी	चतुर	रोगीनिर्धन
८ मृत्यु	रोगी	रोगी	दुष्टबुद्धि	अनिष्ट	पीड़ा	रोगी	क्लेशित
९ धर्म	अधर्मी	धर्मात्मा	अधर्मी	धर्मरत	भाग्योदय	धर्मात्मा	दुष्टबुद्धि
१० कर्म	सुखी	यश	उपकारी	कीर्तिलाभ	सत्कर्मा	धनवान्	सम्पत्तिमान्
११ आय	राजमित्र	धनलाभ	लाभ	ज्ञानी	धनवृद्धि	गुणी	कीर्तिमान्
१२ व्यय	दुःस्वभाव	नेत्रपीड़ा	पापी	निर्धन	दुर्बल	दुःखी कामी	आलसी

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

स्त्री के जन्मलग्न से ग्रहों का भावफल चक्र—

	सूर्य	चन्द्र	कुज	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रा. के.
१ तनु	विधवा	अल्पायु	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रा	पुत्रनाश
२ धन	दुःखी	पुत्रवती	दुःखिता	सौभाग्य-वती	सौभाग्य	सौभाग्य-वती	दुःख	दरिद्रा
३ सहज	पुत्र-वती	धनाढ्या	पुत्रिणी	धनवती	पुत्रवती	पुत्रवती	लक्ष्मी-वती	धनवती
४ सुहृद	दरिद्रा	दुर्भगा	अल्प सन्तति	सुख	सुख	सुख	स्वल्प दुग्धा	पुत्रनाश
५ सुत	सन्तान नाश	कन्या-धिका	पुत्र-मरण	उत्तम फल प्राप्ति	उत्तम सुख	उत्तम-सुख	रोगिणी	मरण
६ रिपु	धन-वती	विधवा	धन-युक्ता	क्लेश-प्राप्ति	धनवती	दरिद्रा	धन-वती	धनाढ्य
७ जाया	रोगिणी	प्रवा-सिनी	स्वामि-नाश	क्षय	अथ-बन्धन	भर्तुः प्रिया	वैधव्य	धनहानि
८ मृत्यु	विधवा	अति-कष्ट	धनवती	स्वजन वियोग	स्वजन वियोग	मरणम्	बहुत सन्तान	मरणान्त वि०
९ धर्म	धर्म-निष्ठा	पुत्रवती	कर्मका-रिणी	उत्तम-भोग	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	वन्ध्या	वन्ध्या
१० कर्म	पापिनी	व्यभि-चारिणी	मृत्यु	धनवती	पति धन-वान् हो	पति धनी हो	पापिनी	विधवा
११ आय	पुत्र-वती	लक्ष्मी-वती	पुत्रवती	सुख	आयुष्मती	पुत्रवती	धन-वती	सौभाग्य-वती
१२ व्यय	अति व्यय	दिवान्ध	वन्ध्या	सुपुत्र-वती	सुशीला	पतिव्रता	अति-व्यया	व्यभि चारिणी

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

वर्षप्रवेश कालिक ग्रहों का भावफल ।

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	क्लेशचिन्ता	शोक	धन लाभ	भय हानि	रोग भय	सुख	स्त्रीकष्ट	कष्ट भय	धर्मक्ष.	सुख अर्थ	सुख लाभ	उद्योग पीड़ा
चन्द्र	कफ ज्वर	नेत्र पी. धन ला	धन हर्ष	सुख	सुखसुमति	पीडा व्यय	ज्वर भय	कष्ट	पुण्य धन	सुकर्म जय	यशधन	व्यय नेत्ररोग
भौम	वातार्तव्रण	मध्यम नेत्ररोग	धन	रोग भय	पुत्रार्ति	सुख	स्त्रीकष्ट	रोग	धन पुण्य	कर्मोदय	धन लाभ	व्यय नेत्र पीडा
बुध	सौख्य धन लाभ	धनका.	रोग नाश	सुख	सुत लाभ	भय स्त्रीकष्ट	स्त्रीसुख	कष्ट	लाभ सुख	सुख धन	जयधन	विवाद व्यय
गुरु	सुख प्राप्ति अर्थ लाभ	यशधन	जय धन	सुत लाभ	सुत सुख	कष्ट	स्त्रीसुख	ज्वर	धर्म सुख	जय शुभ	जय लाभ	व्यय व्यथा
शुक्र	सुमान धनलाभ	धन लाभ	सहज सुख	कृषि लाभ	पुत्र सुख	विवाद कष्ट	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मधन	वस्त्र लाभ	धन लाभ	नेत्र रोग
शनि	रिपुनाश वातरोग	विरोध	धन भोग	गुप्त चिन्ता	सुत कष्ट	धन लाभ	स्त्रीकष्ट	कष्ट	भाग्य धन	धन हानि	धन लाभ	व्यय कष्ट
राहु केतु	शिरो रोग कलह	भय पीड़ा	धन लाभ	कष्ट	बुद्धि नाश	शत्रु नाश	रोग भय	कष्ट भय	धर्म नाश	लाभ सुख	अति सुख	कष्ट
मुंथा	धन यश	धन यश	सुख	रोग भय	पुत्र सुख	रोग भय	स्त्रीकष्ट	धन नाश	लाभ सुख	कार्यसिद्धि	सौभा-ग्यसुख	व्यय रोग

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

ग्रहों के दान और जपसंख्या।

सूर्य	चन्द्र	कुज	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	मुंथहा
माणिक्य	वंशपात्र	प्रवाल	मूंग	घोड़ा	चित्राम्बर	माष	गोमेद	वैदूर्य	वंशपात्र
गेहूँ	तण्डुल	गेहूँ	हरितवस्त्र	चीनी	श्वेतअश्व	तिल	रत्न	तिलकम्बल	तण्डुल
धेनु	कर्पूर	मसूर	कांस्य	हल्दी	धेनु	तैल	अश्व	कस्तूरी शस्त्र	रक्तवस्त्र
कुसुम्भ	मौक्तिक	ताम्रवस्त्र	मृगमद	पीतधान्य	हीरा	कुलथी कृष्णगौ	नीलवस्त्र	कृष्णवस्त्र	मोदक
गुण	श्वेतवस्त्र	गुण	घृतवासी	पीतवस्त्र	रौप्य	महिषी लौह	कम्बल अभ्रक	तैल छा	लाक्षा-भरण
ताम्रपात्र रक्तपुष्प	वृषरौप्य	सुवर्ण	पञ्चरत्न	पुष्पराग	सुवर्ण	श्यामवस्त्र	तिल	कृष्ण पुष्प	सघृत-कांस्यपात्र
रक्तवस्त्र सुवर्ण	घृतकुम्भ	कनेर	हस्तिदंत	लवण कांचन	सुगन्धघृत	इन्द्रनील	तैल-लोह	लोहपात्र	सुवर्ण
जप ७०००	जप ११०००	जप १००००	जप ९०००	जप १९०००	जप १६०००	जप २३०००	पज १८०००	जप १७०००	जप ११०००

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

॥ अथोद्वाहलग्नादत्र लग्नादि १२ भावस्थितग्रहाणां फलानि ॥

ग्रहाः	सूर्यः ॥	चन्द्रः ॥	भौमः ॥	बुधः ॥	बृहस्पतिः ॥	शुक्रः ॥	शनिः ॥
१	मृत्युभीति	१ नाशः	१ मृत्युभीः	१ सत्प्रीतिः	१ लक्ष्मीप्राप्तिः	१ सुभोगप्रा.	१ स्वच्छन्दत्वं
२	नैस्स्व्यम्	२ संपदाप्तिः	२ शोकदः	२ सद्बुद्धिः	२ सुयशः	२ सद्विभव	२ कदशनं
३	धनागमः	३ सुयशः	३ बहुधनं	३ सद्वाणी	३ सत्प्रीति	३ सुरापानं	३ बह्वभा
४	भ्रातृहानिः	४ बन्धुवृद्धिः	४ भ्रातृवैरं	४ बंधुप्रजा	४ क्षेमवृद्धिः	४ महत्त्वम्	४ विशीलं
५	पुत्रकष्टम्	५ प्रजाप्राप्तिः	५ कुबुद्धिः	५ सुताप्तिः	५ इष्टप्राप्तिः	५ सन्मान	५ व्याधिभय
६	धनाप्तिः	६ मृत्युभयम्	६ लक्ष्मीलाभः	६ सद्वैपक्ष्यं	६ निर्धन	६ निधनं	६ सुशीला
७	भर्तृहानिः	७ साफल्यम्	७ मृतिप्रदः	७ विपुत्रः	७ विरक्तिः	७ सर्वनाशः	७ मृत्युभीति
८	चिरायुः	८ प्रव्रज्या	८ वंशनाशः	८ भर्तृनाशः	८ पापसक्त	८ सुव्ययं	८ सुखम्
९	श्रेयोहानि	९ कन्याप्राप्तिः	९ स्त्रीद्वेष	९ धर्मबुद्धिः	९ धर्ममतिः	९ धर्मेरतिः	९ गर्भपातः
१०	व्याधिभयम्	१० धनागमः	१० व्यसन	१० पृथ्वीलाभः	१० भूरिलाभः	१० बहुगुणाः	१० द्यूतसक्तिः
११	अर्थागमः	११ सुयोगः	११ पुत्रादि	११ सुबुद्धिः	११ सुसौख्यं	११ संपदाप्तिः	११ सद्विभव
१२	रोगभीतिः	१२ दास्यम्	१२ नृपभय	१२ स्त्रीहानिः	१२ रिपुभीतिः	१२ धनक्षयः	१२ वक्त्ररोगः

राहुकेत्वोः भावफलं लग्नात् शनिवद् बोध्यम्

Digitization by eGangotri-South Center
CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ नवग्रहमन्त्राः-

सूर्यस्य वैदिकमन्त्रः—

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

तान्त्रिकमन्त्रः—ॐ घृणिः सूर्याय नमः ॥

चन्द्रस्य वैदिकमन्त्रः—

ॐ इमं देवाऽअसपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते ज्यानराज्यायेन्द्रिस्येन्द्रियाय । इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा ।

तान्त्रिकमन्त्रः—ॐ सों सोमाय नमः ॥

कुजस्य वैदिकमन्त्रः—

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् । अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति ॥

तान्त्रिकमन्त्रः—ॐ अं अङ्गारकाय नमः ॥

बुधस्य वैदिकमन्त्रः—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्त स ँ सृजेथामयञ्च । अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत ।

तान्त्रिकमन्त्रः—ॐ बुं बुधाय नमः ॥

जीवस्य वैदिकमन्त्रः—

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

तान्त्रिकमन्त्रः—ॐ बृं बृहस्पतये नमः ।

शुक्रस्य वैदिकमन्त्रः—

ॐ अन्नात् परिश्रुतो रसं ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानँ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥

तान्त्रिकमन्त्रः—ॐ शुं शुक्राय नमः ॥

शनेर्वैदिकमन्त्रः—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये । शँय्योरभिस्रवन्तु नः ॥

तान्त्रिकमन्त्रः—ॐ शं शनैश्चराय नमः ॥

राहोर्वैदिकमन्त्रः—

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥

तान्त्रिकमन्त्रः—ॐ रां राहवे नमः ॥

केतोर्वैदिकमन्त्रः—

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्याऽअपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥

तान्त्रिकमन्त्रः—ॐ कें केतवे नमः ॥

॥ इति नवग्रहमन्त्राः ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

अथ महामृत्युञ्जयमंत्रः

ॐ हौं ओं जुँ सः भूर्भुवः स्वः। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ भूर्भुवःस्वरों जूँ सः हौं ॐ ॥

लघुमृत्युञ्जयमूलमन्त्रः—(ॐ जुँ सः)

जपार्थं सङ्कल्पः ।

ॐ अद्यामुकमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथौ 'अमुक' गोत्रस्य मम 'अमुक' शर्मणो जन्मकालिकजन्मलग्नावधिक 'अमुक' स्थनस्थित 'अमुक' ग्रहसंसूचितसकलारिष्टझटितिप्रशमनपूर्वकदीर्घायुर्बलपुष्टिनैरुज्यप्राप्तिकामोऽद्यारभ्य यथाकालं माध्यन्दिनीयशाखान्तर्गत 'अमुक' इतिमन्त्रस्य यथासंख्याकजपरूपपुरश्चरणमहं करिष्ये ।

यहाँ 'अमुक' के स्थान में जो नाम आदि हो उसका उच्चारण करना चाहिए ॥

अथ पल्लीपतन सरठारोहण, फल तथा शान्ति—

पादयोर्जघने पाण्योर्गुदे गुह्ये च जङ्घयोः
पल्याः पाते तथाऽरोहे सरठस्य फलं न सत् ॥
अन्यत्र शुभदं पश्चात् सचैलं स्नानमाचरेत् ।
दत्त्वा शिवालये दीपं मुखमाज्ये विलोकयेत् ॥
पल्लीसरठयो रूपं सुवर्णेन विनिर्मितम् ।
तदर्धार्धप्रमाणेन वित्तशाठ्यविवर्जितः ॥
वस्त्रयुग्मेन संवेष्ट्य श्रोत्रियाय निवेदयेत् ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

दोनों पांव, जंघा, गुदामार्ग, लिंग, और दोनों हाथ पर पल्ली (छिपकली) गिरे, अथवा सरठ [गिरगिट] चढ़ै तो अशुभ फल है और दूसरे अङ्गों पर शुभ फल होता है। पल्ली के गिरने और सरठ के चढ़ने के बाद वस्त्र सहित तत्काल स्नान करके शिव मन्दिर में दीप दान करे और घृत में अपना मुख देखे तथा १६ मासा भर सुवर्ण से पल्ली व सरठ की प्रतिमा बनवाकर उसे दो कपड़े से ढक कर वेद जानने वाले ब्राह्मण को देना चाहिये। यदि १६ मासा सुवर्ण न हो सके तो ८ मासा अथवा ४ मासा वा २ मासा वा एक मासा जसा विभव हो सुवर्ण की प्रतिमा बनवावे, कृपणता न करै॥

पञ्चगव्यं प्राशयित्वा कुर्याद्राजावलोकनम्॥
शस्ते वाप्यथ वाऽशस्ते यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
पुण्याहवाचनं कृत्वा शान्तिकर्म समाचरेत्॥

बाद पंचगव्य भक्षण कर राजा का दर्शन करे। शुभ वा अशुभ फल कुछ भी हो शुभ चाहने वाला अवश्य पुण्याहवाचनपूर्वक शान्ति करे॥

सर्पकाककपोतानां शीर्षे पातोऽशुभप्रदः।
स्नात्वा सद्यो द्विजेभ्यश्च देयं वस्त्रं सुवर्णकम्॥

सर्प-कौवा-कपोत [पडवा] मस्तक पर गिरे तो अशुभ होता है, ऐसी हालत में स्नान करके ब्राह्मणों को सुवर्ण और वस्त्र देना चाहिये॥

अथ-नेत्रस्फुरणफल—

दक्षिणाक्षिपरिस्पन्दो दक्षिणस्य करस्य च।
हृदयस्य तथा ह्लादः सद्यः संसिद्धिसूचकः॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत् संगरे भङ्गहेतु-
स्तस्यैवोर्ध्वं हरति दुरितं मानसं दुःखजालम् ।
नेत्रोपान्ते भवति च धनं बन्धुनाशश्च कोणे
वामस्यैतत् फलमभिहितं दक्षिणे वैपरीत्यात् ॥

दाहिना नेत्र और दक्षिण हस्त तथा हृदय के स्फुरण [फरकना] आनन्द और सिद्धिदायक होता है। विशेष वामनेत्र के नीचे स्फुरण संग्राम में पराजय, तथा नेत्र के ऊपर भाग के स्फुरण से दुःख का नाश, वाम नेत्र के समीप में फरकने से धन लाभ, वामनेत्र के कोण स्फुरण से बन्धु नाश और दाहिने नेत्र में इससे उलटा फल समझना चाहिये॥

अंगस्फुरण—

अङ्गस्फूर्तिर्दक्षिणांगे नराणां
वामे सा स्यात्सुन्दरीणां शुभाय ।
सर्वेषां सा भालशीर्षे सुखाप्त्यै
व्यस्ता दुष्टा तत्र दद्यात्स्वशक्त्या ॥

पुरुष का दक्षिण अङ्ग और स्त्री का बायाँ अङ्ग फरकना शुभ है और मस्तक के फरकने से स्त्री पुरुष दोनों का शुभ होता है। तथा स्त्री के दहिने अङ्ग और पुरुष के बायें अङ्ग फरकने से अशुभ फल होता है। इसलिए यथाशक्ति दान करना चाहिये॥

अथ शुभाशुभ स्वप्नफल—

सर्वाणि शुक्लान्यतिशोभनानि
कार्पासतक्रास्थिविवर्जितानि ।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

सर्वाणि कृष्णानि च निन्दितानि
गोवाजिहस्तिस्वजनैर्विना हि ॥

रुई, तक्र, अस्थि, (हड्डी) को छोड़कर जितने शुक्ल (उजले) पदार्थ हैं सबका स्वप्न में दर्शन शुभ फलदायक है। अर्थात् रुई तक्र (मट्ठा) हड्डी के स्वप्न में देखने से अशुभ फल होता है। और गाय घोड़ा-हाथी और ब्राह्मण तथा अपने बन्धु वर्ग को छोड़कर जितने काले पदार्थ हैं उनके स्वप्न में दर्शन से अशुभ फल होता है। अर्थात् गाय घोड़ा हाथी ब्राह्मण स्वजन ये काले भी रहें तो शुभ फलदायक होते हैं॥

फलकथनोपयुक्त-ग्रहगुणनिरूपण--

सूर्य—आत्मा, रक्तवर्ण, चतुरस्र (सम) शरीर, वह्नितत्त्व, क्षत्रियवर्ण, सत्त्वगुणप्रधान राजधर्मयुक्त, पित्तप्रकृति, पूर्वदिक् स्वामी है।

चन्द्रमा—मन, गौरवर्ण, गोलशरीर, जलतत्त्व, वैश्यवर्ण, सत्त्वगुणप्रधान, राजधर्मयुक्त, कफ-प्रकृति, उत्तर दिग्बली, वायुदिक स्वामी है।

मङ्गल—बल, रक्तवर्ण, स्वल्पोच्चदेह, क्षत्रियवर्ण, वह्नितत्त्व, तमोगुणप्रधान, सेनानायकधर्मयुक्त, पित्तप्रकृति, दक्षिणदिग्बली है।

बुध—वाणीप्रद, दूर्वा (हरित) वर्ण, सुन्दरदेह, पृथ्वीतत्त्व, क्षमाशील, कफ-वात-पित्त प्रकृति, शूद्रवर्ण, पूर्वदिग्बली, रजोगुण, उत्तरदिक् स्वामी है।

बृहस्पति—ज्ञानप्रद-गौरवर्ण, बृहत्शरीर, विप्रवर्ण, आकाशतत्त्व, श्रेष्ठबुद्धि, विद्वान्, कफप्रकृति, सत्त्वगुण, ईशानदिक्स्वामी, मन्त्रिधर्मयुक्त है।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

शुक्र—सुखप्रद, मिश्रवर्ण, सुन्दरदेह, दाता, रजोगुणप्रधान, कफ-वातप्रकृति, विद्वान् अग्निदिक्स्वामी, जलतत्त्व, मन्त्रिधर्मयुक्त है।

शनि—दुःखप्रद, कृष्णवर्ण, वृद्ध, लम्बाशरीर, कृश, अन्त्यज-वर्ण, वातप्रकृति, वायुतत्त्व, आलसी, पङ्गु, भृत्यधर्मयुक्त है।

राहु—शनिसदृश-धूम्राकृति निषाद जाति है।

केतु—भी राहुसदृश शिखावान् अनेकवर्ण है।

राशिगुण--

मेष—चर, क्षत्रियवर्ण, उग्रस्वभाव, पूर्वदिग्बली, पुरुषस्वभाव, पित्त प्रकृति है।

वृष—स्थिर, वैश्यवर्ण, मृदुस्वभाव, दक्षिणदिग्बली, स्त्रीस्वभाव, वात प्रकृति है।

मिथुन—द्विस्वभाव—शूद्रवर्ण, उग्रस्वभाव, पश्चिमदिग्बली, पुरुष-स्वभाव, कफ-पित्त-वात प्रकृति है।

कर्क—चर, ब्राह्मणवर्ण, मृदुस्वभाव, उत्तरदिग्बली, स्त्रीस्वभाव, कफ प्रकृति है।

सिंह—स्थिर, क्षत्रियवर्ण, उग्रस्वभाव, पूर्वदिग्बली, पुरुषस्वभाव, पित्त प्रकृति है।

कन्या—द्विस्वभाव, वैश्यवर्ण, सौम्यस्वभाव, दक्षिण दिग्बली, स्त्रीस्वभाव, वात प्रकृति।

तुला—चर, शूद्रवर्ण, उग्रस्वभाव, पश्चिमदिग्बली, पुरुषस्वभाव, कफ-पित्त-वात प्रकृति है।

वृश्चिक—स्थिर, ब्राह्मणवर्ण, मृदुस्वभाव, उत्तरदिग्बली, स्त्रीस्व-भाव, कफप्रकृति है।

धनु—द्विस्वभाव, क्षत्रियवर्ण, उग्रस्वभाव, पूर्वदिग्बली, पुरुष-स्वभाव, पित्तप्रकृति है।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

मकर—चर, वैश्यवर्ण, मृदुस्वभाव, दक्षिणदिग्बली, स्त्रीस्वभाव, वातप्रकृति है।

कुम्भ—स्थिर, शूद्रवर्ण, उग्रस्वभाव, पश्चिमदिग्बली, पुरुषस्वभाव, कफ-पित्त-वात प्रकृति है।

मीन—द्विस्वभाव, ब्राह्मणवर्ण, मृदुस्वभाव उत्तरदिग्बली, पुरुषस्वभाव, कफप्रकृति है।

प्रयोजन—

"राशिश्च खेटः सबलः प्रसूतौ करोति जातं च निजस्वरूपम्।
प्रश्नेऽथवा जन्मनि वर्षवेशे सर्वं फलं राशिखगानुसारात्॥"

जन्म समय में जो राशि और जो ग्रह बली रहते हैं वह जातक को अपने समान स्वरूप और गुण देते हैं। प्रश्नकाल, जन्मकाल, या वर्षप्रवेश काल में भी प्रबल राशि और ग्रह के अनुसार ही फल होते हैं।

भावफल विवेक—

यो यो भावः स्वामिसौम्यैर्युतो वा
दृष्टो वा स्यात् तस्य तस्यास्ति वृद्धिः।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानि-
र्निर्देष्टव्या जन्मतो वर्षतो वा॥ १॥

जिस भाव पर अपने स्वामी और शुभग्रह के योग या दृष्टि हो उस भाव की वृद्धि (पुष्टि) और जिस भाव पर पापग्रह की दृष्टि या योग हो उस भाव की हानि समझनी चाहिये॥ १॥

यद्भावेशस्त्रिकोणेच वा केन्द्रे वोपचये स्थितः।
तद्वृद्धि-र्व्ययमृत्युस्थस्तस्य हानिः प्रजायते॥ २॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

जिस भाव के स्वामी लग्नसे केन्द्र, त्रिकोण उपचय (३,६,११) में हो उसकी पुष्टि और १२, ८ में हो उसकी हानि होती है ॥ २ ॥

लग्न से विचारणीय विषय—

देहं ज्ञानं च वर्णं च रूपं चैव बलाबलम् ।
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत् ॥ ३ ॥

शरीर, ज्ञान, वर्ण, स्वरूप, बल, सुख, दुःख और स्वभाव इन सबों का विचार लग्न से करना चाहिये ॥ ३ ॥

धनं धान्यं कुटुम्बं च मृत्युं चापि रिपुं तथा ।
धातुरत्नादिकं सर्वं धनभावाद्विचारयेत् ॥ ४ ॥

धन, अन्नादि, कुटुम्ब, मृत्यु, शत्रु, धातु, रत्न आदि को द्वितीय भाव से देखना चाहिये ॥ ४ ॥

विक्रमं भृत्य-भ्रात्रादीनुपदेशं प्रमाणकम् ।
पित्रोश्च मरणं विज्ञो दुश्चिक्यात् प्रविचिन्तयेत् ॥ ५ ॥

पराक्रम, नौकर, भाई, बहिन, उपदेश, यात्रा, माता पिता का मरण—तृतीय भाव से देखना चाहिये ॥ ५ ॥

वाहनं मातुलाद्यं च बन्धुं मातृसुखं तथा ।
निधिं क्षेत्रं गृहं चापि चतुर्थात् परिचिन्तयेत् ॥ ६ ॥

वाहन, मामा आदि बान्धव, माता का सुख, निधि, खेतों, और घर का विचार चतुर्थ भाव से करना चाहिये ॥ ६ ॥

यन्त्रमन्त्रौ तथा विद्यां बुद्धेश्चैव प्रबन्धकम् ।
पुत्रं च पञ्चमस्थानात् दैवज्ञः प्रविचिन्तयेत् ॥ ७ ॥

यन्त्र, मन्त्र, विद्या, बुद्धि और पुत्र का विचार पञ्चम भाव से करना ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

मातुलं च तथा व्याधिं शत्रुं चैव व्रणादिकम् ।
सपत्नीमातरं चापि षष्ठभावान्निरीक्षयेत् ॥ ८ ॥

मामा, रोग, शत्रु, घाव, विमाता का विचार षष्ठ भाव से करना चाहिये ॥ ८ ॥

जायामध्वप्रयाणं च वाणिज्यं नष्टवीक्षणम् ।
मरणं च स्वदेहस्य सप्तमात् प्रविचिन्तयेत् ॥ ९ ॥

स्त्री (पत्नी), यात्रा, वाणिज्य, नष्ट वस्तु का अन्वेषण, तथा अपना मरण भी सप्तम भाव से देखना चाहिये ॥ ९ ॥

आयू रणं रिपुं चापि दुर्गं मृतधनं तथा ।
गत्यनूकादिकं चापि रन्ध्रभावाद् विचिन्तयेत् ॥ १० ॥

आयुर्दाय, सङ्ग्राम, शत्रु, दुर्ग, मरे हुए का धन, पूर्व और अग्रिम जन्म का विचार अष्टम भाव से करना चाहिये ॥ १० ॥

भाग्यं श्यालं च धर्मं च भ्रातृपत्न्यादिकं तथा ।
तीर्थयात्रादिकं चापि धर्मस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ ११ ॥

भाग्य, शाला, धर्म, बड़े भाई, उनकी पत्नी और तीर्थ यात्रादि का विचार नवम भाव से करना ॥ ११ ॥

राज्यं चाकाशवृत्तिं च मानं तातं तथैव च ।
व्यापारं च प्रवासं च कर्मस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ १२ ॥

राज्य, आकाश वृत्तान्त, मान, पिता, व्यापार और प्रवास इन सबका विचार दशम भाव से करना चाहिये ॥ १२ ॥

नानावस्तुभवस्यापि पुत्रजायादिकस्य च ।
आयं वृद्धिं पशूनां च भवस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

सब प्रकार के धन धान्य, पुत्र स्त्री आदि परिवार की प्राप्ति, पशुओं की वृद्धि एकादश भाव से देखनी चाहिये ॥ १३ ॥

व्ययं च वैरिवृत्तान्तं रिष्फमन्त्यादिकं तथा।
सदैव द्वादशस्थानात् पण्डितः प्रविचिन्तयेत् ॥ १४ ॥

सब प्रकार के खच शत्रुओं के वृत्तान्त, किसी भी कार्यों की समाप्ति का विचार द्वादशस्थान से करना चाहिये ॥ १४ ॥

जन्म कुण्डली से किस प्रकार भाव फलों का विचार करना चाहिये—तदर्थ एक उदाहरण—नीचे दिया जाता है—

काशीमानसहंस द्विजकुलावतंस विश्वविख्यातकीर्ति-
बाबू श्रीकैलासनाथ भार्गव—'अमर'जीकी
जन्मलग्न कुण्डली।

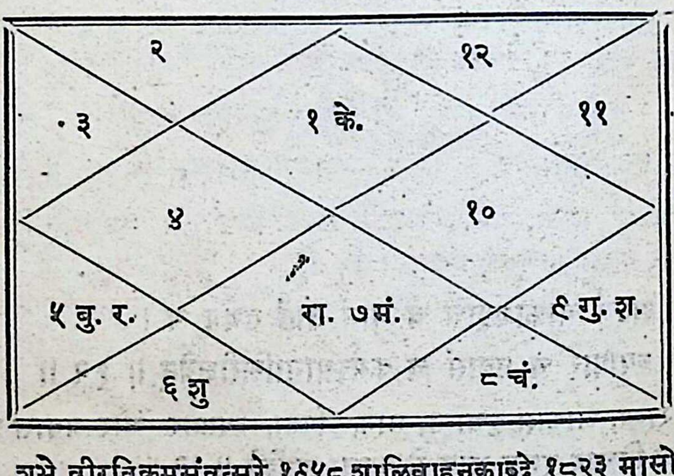

शुभे वीरविक्रमसंवत्सरे १९५८ शालिवाहनकाब्दे १८२३ मासोत्तमे श्रावणे शुक्लपक्षे ८ गुरुवासरे घ. ४४।५७ विशाखानक्षत्रे घ. १।२८ उपरि अनुराधानक्षत्रे श्रीमन्मार्तण्डमण्डलार्धोदयादिष्ट घ. ३९।२ अस्मिन् शुभ-

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

समये मेषलग्नोदये भार्गवकुलभूषणश्रीरामभरोसशर्मगृहे पुत्ररत्नं जातम्। अत्र भयातम् ३६।३४। भभोगः ६६।६ जन्मसमये राज्येशशनिदशा-भुक्तवर्षादि १०।१०।१५ भोग्य वर्षादि ८।१।२५। इति शुभम—

(१) तनुभाव–(शारीरिक) विचार—तनुभाव में—मेष राशि और वृष का नवमांश है, इसलिये मेषराशि और वृष नवमांश के स्वामी मंगल और शुक्र दोनों के गुण जातक में होना चाहिये—देखिये मङ्गल और शुक्र के स्वरूप और गुण।

लग्न-राशि अनुसार—रक्तगौर, पित्तप्रकृति, दृढशरीर, अग्नितत्त्वाधिक, तेजस्वी, मध्यम सङ्ग और सन्तान वाला, सम देह, क्षात्रधर्मयुक्त, अत्यन्त उदार स्वभाव, सर्वदा तरुण वयस।

लग्नेश के अनुसार—कमलनेत्र, रक्तगौर, क्षात्रधर्मयुक्त, उदार, राजमान्य, जननायक, दृढ़ देह, शूर, बलवान्।

लग्न नवांश के अनुसार—गौरवर्ण, स्थिर, धैर्यवान्, क्षमावान्, शोभन स्थानवासी, वात–कफ प्रकृति, सुन्दररूप, कार्यों में दक्ष, मध्यममान के सङ्ग और सन्तानयुक्त, वैश्य धर्म (व्यापार) में चतुर।

नवांशपति के अनुसार—विप्रवर्णोचितधर्मयुक्त, सर्वदा सुखी, प्रसन्नचित्त, सुन्दरनेत्र, दर्शनीय शरीर, तीक्ष्ण बुद्धि, विद्वान्, राजमान्य, लोकमें आदरणीय, कफ-वात प्रकृति और कृष्ण कुञ्चितकेश, दृढ़ सिद्धान्त वाला।

लग्नेश की स्थिति से—लग्नेश केन्द्र वर्ती होकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता है तथा गुरु की भी पूर्ण दृष्टि एवं बुध शुक्र की चरण दृष्टि लग्न पर है, इसलिये श्लोक (१-२) के अनुसार शारीरिक सुख अत्युत्तम हो।

(२) धनभाव–धनभाव वृष राशि और धनेश शुक्र है। धनेश उपचय स्थान में स्थित होकर चरण से धन भाव को देखता है–तथा देहाधीश पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, अतः धन सम्पत्ति–मध्यम मान से सर्वदा वृद्ध्युन्मुख हो। चन्द्रयोगानुसार दुरधरा तथा रवि-

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

योगानुसार-वेशि नामक योग प्राप्त है। इसलिये सदा कोश-अन्न-वस्त्र सुवर्णादि से पूर्ण रहै। भृत्य (नौकर) वर्ग विश्वासपात्र हो। पराशर मुनि ने कहा है—

'उत्पन्नसुखभुग् दाता धनवाहनसंयुतः।
सद्भृत्यो जायते नूनं जनो दुरधराभवः ॥"

तथा—"वेशौ च निपुणो दाता यशोविद्याधनान्वितः ॥"

(३) सहज भाव में मिथुन राशि-भावेश बुध विद्या स्थान में विद्याधीश के साथ है तथा सहज भाव पर गुरु और शनि की पूर्ण दृष्टि है, इसलिये सहोदर सुख मध्यम अर्थात् परिमित सहोदर से सुख हो, सहोदर सुयोग्य यशस्वी आज्ञाकारी हो।

(४) बन्धुभाव में कर्क राशि-तदीश चन्द्रमा रन्ध्र भाव में पड़ा है, भाव पर गुरु की ३ चरण दृष्टि, एवं शनि की भी दृष्टि है-इसलिये-बन्धु (दायाद=पितृव्य-पुत्रादि) से वैमनस्य के कारण-मध्यम सुख हो।

(५) पञ्चम (विद्या) भाव में सिंह राशि अपने स्वामी और बुध से युक्त है तथा गुरु से पूर्ण दृष्टि से दृष्ट है। इसलिये-पञ्चम भाव परमबलवान् है-अतः उस भावजन्य (बुद्धि, विद्या, सन्तान आदि द्वारा) परमोत्कृष्ट सुख हो। बुद्धि अति तीक्ष्ण, विवेक निर्दोष, सन्तान विद्वान् और सुयोग्य हो।

(६) शत्रु भाव का स्वामी बुध पञ्चम भाव में राशिपति से युक्त प्रबल होने से प्रबल है, तथा शुक्र का योग भाव में होने से शत्रु की अधिकता हो, तथापि शनि की पूर्ण दृष्टि होने के कारण शत्रुओं को पराजित होना पड़ेगा। तथा रोग का भय अल्प होगा।

(७) जाया भाव में तुला (शुक्र की) राशि शुभ है, इसलिये-उत्तमकुलोत्पन्न पत्नी हो। परञ्च मङ्गल और राहु के योग होने के कारण स्त्री को बाल्यावस्था में विशेष कष्ट तथा तरुणावस्था में भी कुछ रोगभय, कृशत्व आदि बना रहै।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

(८) आयुर्भावेश-केन्द्र में अपने सधर्मी राहु से युक्त होकर प्रबल है तथा भाव में चन्द्रमा का योग है। ये दोनों (चं. मं.) सूय के मित्र हैं, इसलिये दीर्घायु योग। तथा अष्टमेश ही लग्नेश भी है। वह चर राशि में है, इसलिये जैमिनि मत ("प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घं") इससे भी दीर्घायुयोग है। एवं "शनिचन्द्राभ्यां" शनि और चन्द्र की उत्तर (स्थिर-द्विस्वभाव) में स्थिति होने के कारण से भी दीर्घायु योग है।

(९) भाग्य भाव में-भाग्येश गुरु और राज्येश शनि के योग होने से-परमोत्कृष्ट राजयोग है। पराशरमुनि ने कहा है—

"धर्मकर्माधिनेतारावन्योन्याश्रयसंस्थितौ।
एकत्रान्यतरो वापि वसेद्यदि सुयोगकृत्॥"

अर्थात्—नवमेश दशमेश-परस्पर स्थान में अथवा दोनों नवम या दशम में एक साथ हो तो प्रवल राजयोग होता है। ऐसा योग कदाचित् विरला ही व्यक्ति की कुण्डली में देखा जाता है। इसयोग के प्रभाव से—जातक-परमभाग्यवान्, परमधर्मात्मा, विख्यातकीर्ति और विजयी होता है।

(१०) कर्म (राज्य) भाव भी—कर्मेश-धर्मेश के भाग्य स्थान में योग होने से अत्यन्त प्रबल है, अतः जातक को सब कार्यों में सफलता तथा भावोक्तफलों की पूर्ण प्राप्ति हो।

(११) लाभ-भावेश भी शनि ही है, उसको भाग्येश के साथ भाग्य-भाव में होने के कारण तथा बुध की पूर्ण दृष्टि से लाभ भाव भी प्रबल है। सब प्रकार से लाभ होता रहै।

(१२) व्यय भाव के स्वामी गुरु, राज्येश के साथ अपनी राशि (भाग्य स्थान) में पड़ा है। इसलिये व्यय भाव भी-आय-भाव के समान ही प्रबल है। परन्तु व्यय भाव में शुभ राशि होने के कारण सत्कार्य में ही अधिक व्यय होता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

इस कुण्डली में—भाग्येश, राज्येश, लाभेश और व्ययेश-चारों भाव के स्वामी गुरु और शनि है। तथा इन दोनों को भाग्य स्थान में योग हो रहा है। इसलिये, भाग्य, राज्य, लाभ और व्यय ये भाव परम प्रबल हैं।

इसप्रकार—बृहत्पाराशर, बृहज्जातक आदि ग्रन्थों के आधार पर और भी विशेष विचार करना चाहिये।

इति दरभङ्गामण्डलान्तर्गतचौगमानिवासि ज्यौतिषाचार्य-
पं० श्रीसीतारामशर्मसम्पादितं
ज्योतिश्शास्त्रसोपानं सम्पूर्णम्।

मुद्रक—पं० बैकुण्ठनाथ भार्गव, आनन्दसागर प्रेस, गायघाट, बनारस १.।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.

Digitization by eGangotri-South Center

रमल-शास्त्र

अर्थात्

रमल प्रदीपिका

(प्रथम भाग)

लेखक—पं० वचानप्रसाद त्रिपाठी, रमलाचार्य

चिन्ताहरण यन्त्रों के निर्माता।

यह पुस्तक क्या है, मनुष्यों का [illegible] धन है; प्रत्येक प्रा[illegible] के हृदय की गुप्त वासना [illegible] करनेवाला भूत, भविष्य, [illegible] तीनों काल का हाल सुगमतापूर्वक बतलानेवाला है!

इसमें क्या-क्या बातें आप पायेंगे, सूक्ष्म संकेत हम देते हैं। [illegible] का भाग्य कैसा है? भाग्योदय कब होगा, धन[illegible] कब होंगे, यात्रा [illegible] से लाभ होगा या हानि, मकान के इस हिस्सा में धन गड़ा है या नहीं? यदि है तो मकान के किस हिस्से में है, ठीक-ठीक पता मालूम करना, इस स्थान में रहने से लाभ होगा या अन्य जगह जाने से लाभ होगा, हमारे भाग्य में सन्तान-योग है या नहीं, सन्तान न होने में दोष किसका है? कब और किस उपाय से दीर्घ[illegible] सन्तान होगी? गर्भ [illegible] या नहीं? यदि है तो कितने मास का, गर्भ में पुत्र होगा या कन्या, किस दिन किस लग्न में पुत्र होगा, मुकदमा कौन जीतेगा, ब्याह कब होगा? स्त्री कैसी मिलेगी, इत्यादि [illegible] प्रश्नों के उत्तर [illegible] साधारण हिन्दी पढ़ा हुआ व्यक्ति बिना किसी गुरु की सहायता के स्वयं ही समस्त भविष्य [illegible]स रमलशास्त्र ग्रन्थ के द्वारा मालूम कर सकेगा। मूल्य २॥), डाकखर्च ॥)

प्रकाशक—भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, बनारस १.

ब्रांच—कचौड़ीगली, बनारस।

CC-0. In Public Domain. Cuddalore Collection. TN.